

## અનુક્રમણિકા

---

૧—શ્રીસ્કુટવાણીજી	૧
૨—શ્રીહિતપ્રભુ કી દો પત્રિકા	૧૧-૧૨
૩—શ્રીચતુરાશીજી	૧૩
૪—શ્રીસેવકવાણીજી	૬૫
૫—ફલસ્તુતિ	૧૩૩
૬—શ્રીમેવક ઉત્કર્ષ	૧૩૬
૭—શ્રીમમુનાદેવ સતીક	૧૩૭
૮—શ્રીજન્મદાપત્ર સતક	૧૪૨
૯—શ્રીદેવલાલેશી	૧૫૪
૧૦—શ્રીહિતાદેવ ( નાગરીદાસજી કૃત )	૧૬૧
૧૧—શ્રીરસિક નામધ્વનિ	૧૬૩
૧૨—મંગલ વધાર્ધ	૧૬૪-૧૬૭
૧૩—અષ્ટયાગ સેવા કે પદ	૧૬૯
૧૪—શ્રીરાધાવલ્લભજી કી અષ્ટપ્રકર મેવાવિલાસ	૧૭૬
૧૫—નિત્ય નૈમિત્તિક ઉત્સવ બોધ	૨૦૦
૧૬—શ્રીચતુરાશીજી કી સમય પ્રબન્ધ	૨૨૩

---

# સમર્પણ !

માનનીય આચાર્ય કુલ કમલ દિગ્ગજર

ગીરાધાવલ્લભીય સમ્પ્રદાય—

મધાનપીઠાધિકારી પૂજ્યવર ટીકેત ગ્રીમદ્ ગોસ્વામી

જય શ્રીહિત કિશોરીલાલજી મહારાજ

— કે —

કર કમલો મેં

પરમ પ્રેમારપદ નિકુજનિવાસી પૂજ્ય પતિદેવ

સોને વાલે ભગત

હી

ચિરાત્મશાન્તિ કે નિમિત્ત શ્રદ્ધાપૂર્વક

સાદર સમર્પિત ।

૧।શુશુ શુક્લા રંગેડાદશી,  
ચાનિવાર, પૂનઘાવન-  
કુંભપર્વોત્સવ, ૯૪ વિક્રમ  
૧૨-૩-૩૮ ઈવ

પ્રકાશિકા —

શ્રીજીવડેર બાઈ  
( સોને વાલી છોટી સેકાની )

જમઈ ।

✽ ભગવાન શ્રીહિતકૃતિવંશચન્દ્રો વિજયતે ✽

## ✽ વિજ્ઞાન ✽

હિતેન પ્રાપ્યતે રાધા હિતેન સખિયુષયા ।

હિતેન પ્રાપ્યતે ધામ હિતેનૈવ રસગતા ॥

જિન નહિં સમુદયૌ પ્રેમ યહ, તિન સૌ કહા અલાપ ।

દાદુર હ જલ મેં ખસે, જનત મીન મિલાપ ॥

“સ્વાસ્થ્ય સકલ તજ, શુરુ ચરણન બજ,

શુશુ નામ સુન, કથ, સન્તન સૌ સંગ કર ।”

આઘ સનાતન સિદ્ધાદૈત મતૈકનિષ્ઠ અનન્ય શ્રીહિત  
ગદાવલ્લીય [ બલ ] સમ્પ્રદાય ક્યા હૈ ? કય સે હૈ ? ક્યોં હૈ ?  
મત્યાદિ સમજાના તો સ્વરૂપ સમય મેં અસમ્ભવ સા હૈ, ક્યોંકિ  
જ/ખ જગન્માન્ય મહાત્મા શ્રીનાથા સ્વામીજી અપને સર્વમાન્ય  
'ભક્તમાત્ર' મન્ય મેં હસ સમ્પ્રદાય કે પૂર્વાચાર્ય ચરણ કે વિગે  
ભક્તિભાવ સે કંકે કી ચોટ કહતે હૈ—

શ્રીરાધાચરણ પ્રધાન હૃદય અતિ મુદ્દ, ઉપાસી ।

કુંજ કેલિ દેવતી તહાં કી કરત ખવાસી ॥

સર્વસ્વ મહાપ્રસાદ પ્રસિદ્ધ તાકે અધિકારી ।

વિધિ નિષેધ નહિં દાસ અનન્ય ઉત્કટ વતધારી ॥

श्रीआससुवन १ पय अनुसारै सोई भलैं पहियान छै ।  
श्रीहरिवंश गुसाईं भजन ही रीति सकृत् कौ छि जन छै ॥

यहां “सकृत्” और “सोई भलैं” इन शब्दों पर ध्यान देने से सुदृढता स्वयं प्रगट होती है। फिर भी उनमें के कल्याणार्थ भटानुभाव यरखों ने उपाय बताया है, यथा—

प्रथम उदय अदा जे करै, आचारजनि जय अनुसारै,  
जहां जहां हरिवंश है ॥

अर्थात् जब ही अदा और प्रभु कृपा दोनों का जग्न सुयोग उपस्थित हो तब जब के श्रीहित हरिवंशविन्दुकुलोद्भव आचार्य यरखों के समीप न करके हित रसिकपयानुगा स्वधर्मप्रतिपादित दीक्षा शास्त्रानुसार लेनी चाहिये । ( तीव्र अभिलाषा और आचार्य यरखु समीप पहुँचने में अति विलम्ब की संभावना होने पर कहीं कहीं यदा कदा आचार्य यरखों की आज्ञा शिरोधार्य कर श्रीहित रूप गुरु प्रभु चित्र के सन्मुख दिनके प्रतिनिधि स्वरूप ( पति प्रदेश जाने से पतिव्रता की चित्र सेवा वत् ) काई हित रसिक भटानुभाव से दीक्षा लेकर श्रीयरखुगत भक्त का यथावकाश नीचे लिखी तीन श्रेणियों में से एक के अनुसार नित्य भजन पाठ सेवा भावना करनी चाहिये । ( अधिकस्याधिकं क्लम ) फिर जग्न कभी श्रीमहाचार्य यरखु में प्राप्त होने का अवसर आवै तब फिर

विधिपूर्वक उनसे मन्त्रोपदेश ( हित सम्बन्ध ) हो । जैसे राजा परमानन्ददासजी, श्रीनवलदासजी भार्गव, श्रीयन्द्रसम्प्राजी, श्रीभूँडा स्वामीजी, श्रीजन्त्री स्वामीजी, स्वामी श्रीयतुर्भुजदासजी, श्रीसाक्षस्वामीजी आदि ने आचार्य यरखु सन्मुख जीवों को दिया ।

श्रीहित धर्म के भगी रसिकों से प्रार्थना है कि सज्ज श्रीहित वाणीजी का पाद नित्य न कर सकें तो भी श्रीसेवकवाणीजी का पाद तो अवश्य ही दिया करें, क्योंकि अनन्य श्रीहित धर्म व धन की प्राप्ति श्रीसेवकवाणीजी ही है । ( या धनको साधन यही श्रीसेवक कृपा विशेषिये ) ।

सज्ज रसिक आचार्यों के मतानुसार श्रीकृष्ण भगवान् की कृपा श्रीराधिकाजी की कृपा बिना असंभव है और श्रीराधिकाजी की कृपा ही है ही उनही अन्तरंग निज सुहृदसम्प्रा ( श्रीहित हरिवंश महाप्रभु ) की कृपा बिना भडा दुर्लभ है । यह ज्ञात श्रीनामाजी राजा और मन्त्री के दृष्टान्त से समझते हैं कि— 'गंधा यरखु प्रधान—' घसी दृष्टान्त के टीकाकार श्रीप्रियादासजी ने और भी जुलासा समझाया है कि 'राजा की दृष्टि पर मिलौगी प्रधान होय—' यानी राजा की ही दुर्ध्वीज भी मन्त्री द्वारा ही मिलती है । और पद्म सिद्ध श्रीध्रुवदासजी ने पूज्य समझ विचार के कहे हैं—

यरखु यरखु हरिवंश की, जण लगि आयौ नाहि ।

नव निकुंज निज माधुरी, क्यों पगसै मन माहि ॥ और

हरिवंश शरणु ठर धरणि धर, भन वय हरि विस्वास ।

कूपरि कृपा छूँ है तवहि, अरु वृन्दावन वास ॥

सवै अंग गुलुडीन छौं, ताहौ नतन न होय ।

एक दिशारी कृपा ते, जे कछु होय सु होय ॥

सोउ कृपा अति सुगम नहि, ताहौ कौन उपाय ।

शरणु शरणु हरिवंश की, सहजहि जन्यो जनाव ॥

इसी तरह श्रीविषाखा सभी के अवतार परमानन्द श्रीव्यासजी  
कहे कि 'व्यासहि गुरु हरिवंश जताई अपनी जवन भूर' एवं

'हरिवंशी हरिदासी जहा । मुहि करुखा कर राधौ तहा' तथा

'बिन हनिवंशहि सरभे रीति हौ कापै अलिहौ बार ।

हे राधा दुखरावै गावै वयन सुनावै आरु ॥

पद स्थना अण हा पै छूँ है विरस जयौ संसार ।

वृन्दावन की सहज आधुरी कहिहौ कौन उदार ॥—

अतः जिना श्रीहित हरिवंश कृपा के श्रीराधिकाजी की कृपा  
असम्भव है और ऐसे ही श्रीहित कृपा का साधन एक मात्र  
श्रीहित नेह अक्षय अक्षय श्रीराधिकावतार श्रीमेवकम्बु महाराज की  
कृपा ही है । इनकी कृपा बिना श्रीहित कृपा अति कठिन है,  
अतएव समस्त हितधर्म भूमियों में प्रार्थना है कि ( श्रीहित  
धर्म से वीनती श्रीसेवक स्वयं पदियानियौ ) और ( श्रीमेवक  
स्वयं अति दूर है धर्मवत ह मान ) श्रीसेवकम्बु की वास्तविक  
स्वयं ( श्रीराधा ) ती समस्त और दृष्टि में महज ही नहीं आवेगा,

पर केवल अपने धर्म जैसा मान के उनके गुलुगान उनकी वाणी का नित्य पाठ और उनकी जन्मोत्सव वधाई गान ( सावन सुदी ३ दरियाही जूधन की ) के अवश्य कर्तव्य है, ये कृत्स्न न करने से गुरु द्रोही होने का लाइन और गुरु छल सपथ वाणी में वर्णित है । श्रीसेवकवाणी पाठ और उनकी कृपा से थोड़े समय में ही श्रद्धित धर्म का लाभ हो सके है ॥ फिर सत्संग वृन्दावन वास आदि उपाय भी सहायक होय । भगवान् श्रीहितहरिवंश चन्द्र के मुण्डोच्चारित होने में श्रीयमुनाष्टक श्रीराधासुधानिधि श्री स्फुटवाणी एवं श्रीयतुराशील श्रीहित भगवान् की वाणी हैं और श्रीराधिकावतार श्रीसेवक की गिरा की भी वाणी संरा प्राचीन पुण्यस्त्रोक्त महात्माओं के कथनानुसार “वेदगिरा सेवक गिरा वाणी संरा होय” है । अतः ये सम्मिलित ही लिपी पढ़ी जाय है । ‘श्रीराधासुधानिधि’ संस्कृत का कठिन ग्रन्थ होने से गुजराती में प्रकाशित नहीं किया, यदि प्रेमी भावुकों की रुचि जन पड़ी तो श्रीमती मेडानी साहिबा से कुछ प्रकाशित किया जायगा ।

श्रीकृष्ण भगवान् के छठे दिन पूतना राक्षसी के मारने के आश्चर्य-चरित्र की तरफ भगवान् श्रीहितल ने भी छः भास की अवस्था में श्रीराधा सुधानिधि की रचना की, जैसा कि लिखा है “गते तु पथमे मासि सुधासिंधुं प्रवर्त्य” और “पापमासकृत श्रीमद्राधारमसुधानिधि । वाङ्माहिकेऽपि जनकान् स्वान् ज्योतिर्भुम्भं न दत्तवान्” ॥ श्रीहित स्वरूप का वर्णन गायकानों ने

हुंसा दिया है। यथा ( श्रीराधावल्लभ श्रील हितरूपसम्प्री तनु,  
गौरस्यामलपोस्त्रिच' यत्सन्धि प्रेम तदपुः ) 'न्योतिषु' मङ्गलसत्प्रेम  
साक्षाद् शरी स्वरूपकः । या वंशी सा हितानिश्चयतद्वदो व्यास-  
नन्दनः॥ 'सम्पद अल वपुर्वंशी सृष्टि हेतुवैदविग्रहः । त्रयीमूर्ति  
लघोत्पत्तिः कृष्णेश्वर्ये य तदाकृतिः॥ यदा संक्षिप्त हित स्वरूप  
और अरित्र विभना उचित प्रतीत होता है—

श्रीहित महाप्रभु और श्रीराधिकाभू ये परस्पर अन्योन्याश्रय  
हैं । एक ही कृपा के बिना दूसरे की कृपा असंभव है, यह बात  
सोचने, समझने एवं मानने के लिये भी 'उन्ही' ही एकमात्र कृपा  
का ही अवयव है, क्योंकि श्रीहित निधि से ही श्रीप्रियाम्बुज  
का विकास है और श्रीप्रियाम्बुज के लक्ष्य में सौरभकोश भी  
श्रीहित निधि के ही तत्वों से परिपूर्ण है अर्थात् श्रीहित में  
श्रीस्वामिनी और श्रीस्वामिनी में श्रीहित हैं, इससे सर्व प्रथम  
हित स्वरूप है । ( सहस्र जिलौना आड के धरे टोकरा आड । जो  
जिनसें तौ आड हैं, जो निषण्णें तौ आड । ) ऐसे ही श्रीप्रियाभू  
मे ज्ञात ज्ञात रहने वाले लक्ष्यस्थित श्रीहित श्रीवंशी स्वरूप से  
श्रीप्रिया प्रीतम का महाप्रसाद अधराभृत पान कर जीवन की संपत्ति  
का परमसुखसार दान है, यह हित ही द्वितीय, वंशी स्वरूप है । और  
श्रीहिशोरीभू के पदान्त लक्ष्यस्थित हित के अभिन्न होने से अति  
रहस्य केलि ही रसमादकता के साधनार्थ श्रीहित वंशी स्वरूप



श्रीप्रियान्मृष्टी संधिसम्प्री निज सुहृद अलिङ्ग श्रीहित मम्प्री  
 स्वरूप से श्रीनित्यकिशोरी नित्यकिशोर विहाग्नि विहारीन् के।  
 अष्टप्रहर विलसाय श्रीवनवासीन के यथाधिकार सुभ प्रदान करे  
 यह श्रीहित के। तृतीय श्रीसम्प्री स्वरूप है। वंशी रस स्वाद भजन  
 श्रीललितादिसम्प्री स्वरूप ने जगज्जन्मवाला सन्तस ससारी श्रवो प  
 करुणा दृष्टि कर श्रीहित वंशी अरु श्रीप्रियान् से दुष्पी जन  
 कल्याणार्थ प्रार्थना की तब श्रीप्रियान् ने कृपा कर अपनी प्राण  
 आत्मा श्रीहृदि संयुक्त श्रीवंधीश से कही कि आपकी ने नैसे  
 प्रेम की ध्वज रूप मन्त्रगोपियो के परमाह्लास प्राप्त कराया  
 ऐसे ही अम्प्री ने अपने वंशरसनाद से अनन्य प्रेमी श्रवो  
 के भंगल करने के नन्सार मे अवतार लेकर हरियुक्त वंशी क  
 वंश की ग्यना कर जे श्रव शरणागत हो जनको मसात्मिका  
 पद्धति के उपदेश करे। आशा शिरोधार्य कर वंशी सहित  
 श्रीलालन् ने अपने और अपनी प्राणप्रियान् के जन्मस्थान  
 श्रीगोकुल और श्रीरावल के समीप ही श्रीयमुना निकट मन्त्र लुभि  
 की पुनीत मन्त्र श्रीवाद्यग्राम मे शुक्ल यन्त्रवेदी कल्प जोजी  
 श्रीव्यास भिन्न अरु श्रीतारा मनीन् के गृह मे सन्वत् १५३०  
 शके १३६५ सन् १४७३ के वैशाख शुक्ल ११ सोमवा  
 के प्रातः अरुणोदय काल मे श्रीहित हृद्विंश नाम से आचार्य  
 स्वरूप मे अवतार लिया। यही यौथा आचार्य स्वरूप श्रीहिततत्त्व  
 है। श्रीमहाचार्यवर महाप्रभु के पिता लोही बादशाह

पञ्चदशमी मननपदादः एव सादी न्योतिषी ये और सदारनपुर  
 सिद्धि के देववन ( वर्तमान स्टेशन नाम देववन-६ ) के रहसि थे ।  
 श्रीमदाप्रभुछ के वाच्यग्रन्थ अनेक अद्भुत जगत्संश्रुती  
 लीलाओं में परिपूर्ण हैं जो कि अनेक ग्रन्थों में सविस्तृत  
 लिखित हैं । संवत् १५३८ में यमोपवीत वर्ष १ वर्ष पीछे ही मदा-  
 नानी श्रीरुक्मिणीछ में विवाह हुआ । विक्रम संवत् १५४८ श्रैत्र  
 गुदी पूर्णमासी के श्रीगणेशछ ने श्रीदत्त मदाप्रभु के श्रीवृन्दावन  
 में निम्न मन्त्रोपदेश किया । देवी और आगरा तत्कालीन सादी  
 नगरधानी के मध्य मगर भूमि देने के कारण व्यावसाय  
 के माय सपत्निया श्रीव्यामछ मदारान्न के दौरे में श्रीवज्रभूमि  
 ६ दर्शन तथा निराम का प्रायः अवकाश मिया करता था । संवत्  
 १५८४ की शक्ति पूर्णमासी मदारान्न लीला के दिन दौरे की में  
 मम हंपती श्रीवृन्दावन वास पूरे माय पा गये । पिता माता के  
 नरुंर वाम में श्रीदत्त प्रभु का मन क्षणिक मय्य भया पुनः  
 नगरधान दो माता पिता की अन्तिम नेवा मानद कर । योरे,  
 नमम में दी पुत्र प्रपद देने का ममम वन आप श्रीवृन्दावन वाम  
 सी करने मने । श्रीवृन्दावन में श्रैत्र कृष्ण ५ संवत् १५८४ के  
 श्रीवज्रमन्द प्रभु नोदरान्तिछ के प्रादुर्भाव भया । रत्नचालन्द के  
 रत्नान् श्रीमामास प्रभु पुनः देववन पधारे । वदा दि ११ पुत्र  
 नोदरान्ति श्रीवृन्दावन प्रभु के वाम माय सुमय ५ मंगल १५८४  
 ॥ तथा नृत्तिय पुन नोदरान्ति श्रीन नोदरान्ति प्रभु के प्रादुर्भाव

१८५५ शुक्र १५ संवत् १५४७ के मया । दम्भसपत्रवत गृहस्था-  
 श्रम में रह तीन पुत्र और १ कन्या का विवाहादि हर निश्चित हो।  
 श्रीप्रियाण से आशा से श्रीवृन्दावन यात्रा संवत् १५६५ में  
 की । देववन से बस थोड़ी हर यथावस नामक ग्राम में रात्रि का  
 निवास किया, उसी ग्राम में आत्मदेव नामक ब्राह्मण ने पूर्वकाल  
 में निश्चय भाव में श्रीमहादेवण की घोर तपस्या हर वरदान में  
 श्रीशंकरण की अत्यन्त प्राणप्रिय सेव्य श्रीगोपावल्सभ विग्रह  
 प्राप्त कीं, इन्हीं आत्मदेवण के वंशज तत्कालीन श्रीविप्र देवता  
 के दो भुवती कन्या थीं, श्रीप्रियाण ने ब्राह्मणुराज में स्वप्न में  
 आशा की कि आज यहाँ अभुक्त स्थान पर मेरी वंशीण ही ज्योके  
 कल्याणार्थ आचार्य विग्रह में प्रभट होकर यहाँ आये हों और  
 श्रीवृन्दावन न रहे हों तो तुम दोनों कन्याओं को इन्हों ही  
 व्याह के, दहेज में मेरी विग्रह दे दो । मैं अब वृन्दावन ही जाना  
 चाहूँ । मेरी आशा न मानने में तुम्हारा बहुत अनिष्ट होगा ।  
 मधर रात्रि ही में श्रीहित प्रभु से भी कहा कि मेरी आशा मान  
 कन्याओं सहित मेरी विग्रह श्रीवृन्दावन से बस और मेरे धर्म  
 का प्रचार करे । प्रभु आज्ञावश ब्राह्मण के भिलने पर कसका  
 प्रार्थना स्वीकृत कर दो कन्याओं का डोला और श्रीप्रभु का चौडाल  
 लेकर कर्तिक शुक्ल १३ संवत् १५६५ के श्रीवृन्दावन में भदनदेर  
 स्थान पर विराजे । यथावस वाली कन्या श्रीकृष्णदासीण और  
 मनोहरीण थीं, श्रीकृष्णदासीण के संवत् १५८८ आश्विन शुक्ल

१५ को गोस्वामी श्रीमोहनचन्द्र को जन्म भया । और द्वार की रासचन्द्र पृथ्वीमा संवत् १८८८ को श्रीरासमंडल पर सभ अनन्य एक पुत्र दिव्यो के सन्मुख देखते देखते श्रीमहायार्थ प्रभु सशरीर अन्तर्धान हो गये । और उनही आचार्यगादी पर बैठे, पुत्र श्रीगोस्वामी वनचन्द्र प्रभु विराजमान होकर जेवो का कल्याण करने लगे । तब मे आज तक आचार्य वंश की गद्दी पर आचार्य विरजमान होकर अनन्त जेवो का उद्धार करते गये आगे हैं ।

विस्तारभय से ज्यादा हम यहाँ नहीं लिख सके, श्रीसेवक प्रभुभाजन के लिये भी महात्माओं के कथन हैं—( सेवक की सगि हो है भजन सरोवर वंश ), और ( श्रीसेवकमन्द वन्दे सगिवंश-प्रकाशम् ) तथा ( प्रथम श्रीसेवक पद सिर नाखी ) ॥

श्रीललितादिके सभी वृन्द की प्रार्थना से श्रीगणिका महारानी ने अपनी आत्मा श्रीदत्त वंशीय को स सारी जेवो के कल्याणार्थ प्रघट होने की आशा दी, और आपने श्रीहरिवंश नाम से आचार्य स्वरूप में प्रघट हो वेद ब्रह्मादि दुर्गम गति क्रीप्रियाय की गादी स्थापन कर उनके नाम रूप लीला से अतुर्दिगन्त व्याप्त कर दिया, किन्तु अपना निज हिततत्त्व रूप अत्यन्त गुप्त रक्षित, यह बात निकुंज में निकुंजेश्वरी से सहन न हो सकी और उमंग से अपने हित के लाड, लड़ाने और सबको स्वरूप जान देने को सेव्य से सेवक रूप में, ब्रह्माय के हित, नारायण को

हंस ( वाहन ) रूप से प्रकट होने की तर्क" प्रकट होना पड़ता ।  
 पृथ्वी पर श्रीप्रियाञ्ज ने अपने हित के हितार्थ जो अवतार लिया  
 उसका सक्षिप्त अरित्र यह है कि गौडवाने प्रदेश में जणलपुर के  
 पास गढ़ा ग्राम ( उस समय स्टेशन का नाम महन महल है )  
 में संवत् १५७५ के आरम्भ की हरियाली जुलन तीज के  
 सन्ध्या समय ५ बजे के करीब विप्रराज के यहाँ श्रीप्रियाञ्ज का  
 सेवक स्वरूप में श्रीदामोदरदासजी नाम से जन्म भया । अनेक  
 शुभ भंगसे के बाद श्रीदामोदरदासजी जण येड़े, जड़े, भये तभी  
 उनके अगेरे भाई श्रीस्वामी अतुर्भुजदासजी निनके लिये  
 श्रीनामा स्वामीजी अपनी भक्तमाल में लिखें कि—

“श्रीहरिवंशचरणवल अतुर्भुज गौड देश पावन कियौ”

छन्दोंने गौड देश के राज, प्रजा, भूत, प्रेत, योः, डाकू  
 और यहाँ तक कि साक्षात् देवी को भी वैष्णव बना कर पावन  
 किया उनसे इनका अद्भुत प्रेम हो गया । ये दौनों भाई मित्र रूप  
 से परस्पर प्रेम रूप विद्याध्ययन करते रहे और वात्सल्य से ही  
 साधु सज्जनो में अद्भुत प्रेम करते रहे । इनके देश में जो भी  
 साधु जाता वह कभी इनकी सेवा ग्रहण किये बिना न आ  
 सकता । जण ये दौनों मित्र पूर्य विद्वान् होगये तब साधु सेवा  
 में और भी हृद् प्रवृत्ति हो गई । मसी प्रकार साधु सेवा करते-  
 करते गुरु करने की अभिलाषा बढ़ी पर कोई गुरु मनोनुकूल न  
 मिला मडे । किसी समय एक साधु मंडली इनके यहाँ आ पहुँची

और रात्रि भर जगदगुरु प्रबुधान किया। दौनो मित्रो ने भी साधु रसिको ही अत्यन्त सेवा दी, प्रातः जग रसिक महानुभाव यद्यने लगे तो दौनों मित्र आह्वयकुमारो से पूछा कि भैया आपकी ऐसी प्रेमनिष्ठा है आप सिध्द कहाँ के हैं ? वे दाव लोड, के गोते, अभी दूरों गनोनूकल सदुपदेष्टा गुरु नदी मिल सके अतः विचार मात्र में ही छतना मभव हमने व्यर्थ गँवाया। अग आपने कृपा हर पूछा है तो हम भी आपकी आरा मान के गुरु करेंगे आप जिसे जतामैं वही हमारे गुरु हैं। यद सुन महानुभावो ने कहा कि श्रीवृन्दावन धाम में जग रसिको के मुहठमशि आचार्य कृष्णकमलदिवाकर गोस्वामी कुलतिलक श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रबुद्ध अनन्य दित धर्म के प्रकाशक हैं उनही के लहर तुम सरल्य हो लओ और श्री हितशु के अनन्य प्रेमधर्म के भूतलत भी संक्षेप से समझाये। सग समज दौनो मित्रो ने भी हृ, प्रतिया ही हि वृन्दावन यलके शोध गुरु सरल्य हो। पर गृहयक से जूझत समय तक न छूट सके। यहा श्रीमन्महा प्रभु श्रीहिताचार्य अन्तर्धान हो गये यह जगद जग उन मित्रो के लगी तो श्रीस्वामी अर्जुनदासजी ने श्रीदामोदरदासजी से कहा कि “आत्मा वै जयते पुनः” के न्याय से पिता नदी तो उनके पुत्र लो गही पर विराजमान ह, उनमे ही यलके दीक्षा ले यैं। श्रीदामोदरदासजी ने कहा कि हमारे भीगुरदेव नित्य सिद्ध हैं वे हँसी ठँकी नही लें, हम तो वन्दी से दीक्षा लेगे

नहीं' ये पुनः अधम प्राण ही छोड़, दैजे । सो यह कह और मन  
 वचन कर्म से श्रीहित में लगन लगा हो 'श्रीहरिवंश' नाम  
 बनने लगे । पान पान आदि की सुधि ही न रही । दूसरे मित्र  
 तो अम तक देरी भर्त्सो भर्त्स अण क्षण भर भी देरी न करें  
 ये स हृत्प कर श्रीवृन्दावन यव दिये और यहाँ आके श्रीमद्-  
 गोस्वामी श्रीवनयन्त्र महाप्रभु के दर्शन कर शरणागति ली श्रीराधा-  
 वल्लभलाल के दर्शन, श्रीसेवाकुंज, श्रीरामभंडल, श्रीमानसरे वर,  
 श्रीवाद्यग्राम आदि के दर्शन करे । छपर यहाँ श्रीदाभोदरदासजी देवानु-  
 स धान त्याग प्रेम भजन तीन दिन तक भावावेश में लगन  
 करते रहे । तीसरे दिन श्रीभुरदेव ने कृपा कर श्रीवृन्दावन जुला कर  
 शरणागति में लेक कृपा मात्र से ही अपनी समस्त श्रीहितवाणी  
 जो कंठ कराही और श्रीयमुनातट पर सप्ती परिकर सहित श्रीप्रिया  
 प्रीतम के दर्शन कराये । इसी समय श्रीध्रुव प्रह्लादादिको ही तरह  
 श्रीसेवकजी ने श्रीहित प्रभु का जो अनुभव जनित उप यश का  
 पर्वण किया वही श्रीमवक्तवाणी जो है श्रीसेवकजी विद्वान् एवं  
 साधुसेवी होने के कारण सर्व शास्त्र और सर्व मत का प्रकाश  
 ज्ञान ग्यते ये जैसा कि इनकी वाणी जो मनन पूर्वक पढ़ने से  
 पता लगता है । श्रीगुरु शरणागति की मनोबिधाप पर्वण होने  
 पर प्रभु ने आज्ञा दी कि तुमको अभी कुछ दिन को देश ही भोगें  
 फिर जुला लेंगे । अस ये अपने घर पहुँच गये । कुछ दिन बाद  
 दूसरे मित्र वृन्दावन में वापिस गये दिनने छनसे कहा—तुम न असे

श्रीवन के सुख आनन्द का वर्णन किया तब ये भोवं हमारे शिष्य  
 भी श्रीगुरु कृपा भई निश्वास के लिये जण सज वाणी और  
 श्रीवृन्दावन का वर्णन करने सुनाया तो वे अवाह् रह सेवक  
 के यःगो में लिपट के धन्य धन्य कहने लगे । कुछ दिन बाद ये  
 वृत्तान्त श्रीवृन्दावन में श्रीगुरुसाध्वी वनयन्द्र प्रभु ने सुना तो  
 उसी समय प्रतिज्ञा दी कि जिन समय हम श्रीसेवक के दृष्टि में  
 हमी भव्य तन मन धन सर्वस्व उनके शिष्य न्यायावर कर वार के  
 देंगे । ये बात सेवक ने सुनी तो विचार किया मेरे जाने से  
 प्रभु की सज बीज लुटेंगी अग मैं कैसे जाऊँ । श्रीगुरुसाध्वी ने  
 जण सुनी कि सेवक न आये तो तब अपनी नौगन्द लिपि के  
 पत्र लेन कि जल्दी आओ । पत्र पढ़, सेवक न दूर सके  
 और श्रीगुरुसाध्वी वनयन्द्र प्रभु श्रीगुरुधामनमसाध्वी की दृष्टि में  
 दृष्टि मिलाय आनन्द भजन भये अरती कर रहे उसी समय वे  
 बदल के श्रीसेवक ने आकर दर्शन किये । श्रीसेवक के आते ही  
 जो श्रीगुरुधामनमसाध्वी की दृष्टि श्रीगुरुसाध्वी की दृष्टि से मिल रही  
 वह श्रीसेवक की तरफ खींची गयी । प्रभु दृष्टि दूरते ही श्रीगुरुसाध्वी  
 के क्षणिक तो अत्यन्त अग्रता भई पर अंत भव्य ही कि सेवक  
 में ये शक्ति है कि अन्तर्धान भये गुरु प्रपट करवें तो गुरु कृपा  
 से श्रीगुरुधामनमसाध्वी की दृष्टि अपनी तरफ करना कौन आश्चर्य  
 है ये निश्चय कर आरती समाप्त कर जण गुरुसाध्वी बाहर पधार  
 तब अङ्गी लीक, में अनन्त श्रीसेवक के सहिताने में उनकी



प्रेम रंग इन्हीं भरत निगाह और दीवानी बाल ने जड़ी भट्ट की ।  
 श्रीगुणाधिल प्रेम छर्चा चितवन से सेवक के पहिचान उनसे  
 लिपटने के दौरे, सेवक ने भी जान ली कि हमारी बेचारी छिप  
 न सकी । अतएव वे भी शीघ्र दौड़ के श्रीगुरु भुक्त प्रभु के श्री  
 चरणों में लिपट के प्रार्थना करने लगे कि प्रभु ही वस्तु न हूँ  
 श्रीप्रभु ने कहा मैंने तो रीति के प्रभु दिया तुम नहीं दरे। तो  
 कैसे जात उन्हें अन्त आपकी जात भी रहे, हमारा भी मनोगत  
 पूर्ण हो । हम प्रसादी भण वस्तु लुटायेंगे अरु अभिनिया वस्तु ही  
 तुम्हारी प्रार्थना मानेंगे । किसी दिन श्रीगुणाधिल वनचन्द्र महाप्रभु  
 ने आशा दी कि श्रीप्रिया प्रियतम के नित्य नयेम ही तगद ही वही-  
 युक्तमाधुर्यस वसित गसउप श्रीद्वि ही वाणी श्रीयतुगशील और  
 अपने वंशस युक्त श्रीध्यात द्वि के प्रेम भेल मे पीछे न पड़  
 सकने के कारण उनसे यत्नम उप के जड़ाने मताने के लिये श्रीस्वा-  
 मिनील श्रीगविदाल के अवतार श्रीदामोदरदासल ( श्रीसेवक  
 महाराज ) ही वाणील श्रीसेवकवाणील एक साथ ही लिप्पी पड़ी  
 ध्यान पूजा करीं लोच । तभी मे आज तक दौरे वाणी साथ ही  
 रहें । द्वि श्रीसेवक महाराज स वत् १६१२ मे श्रीरासभंडव  
 पर श्रीद्वि प्रियाल के दाहिनी तगद वट वृक्ष मे श्रीद्वि वंश  
 श्रीद्वि वंश नामेद्वारण कर्ते करते सदेह अन्तर्धान हो गये ।  
 इन वट वृक्ष का कुछ अ स अण भी द्यनीय रूप से विगलमान  
 है और प्रेमी रसिकों का अर्थन वन्दन स्वीकार कर हितगसायत

श्री शक्ति हस्ते गदं । और वहा तक कि 'मेरा हस्त भी रत्न नहि  
 मानै, तिनही जात गमिऊ नहि मानै ।' इन श्रीमेरुदेवजी के  
 पाठ में अम अमल्य असे सुद्ध, अतः तह में भी ने.पद पानी ही  
 तह पाठ हउ गये । असिहो के नि.व.प. में श्रीहन्नीश्वर  
 हर्षनाथ हर्षनीय श्रीशुभविन जी भाष में "नाम वाणी कदा  
 आभवाभा तदा" के अनुनाद होने की वरिचन है, अमल्यो  
 में किम प्रकाश मज्जागत होकर कित तन.व. अमल्य हःना आदिसे  
 ५६ करी "विज्ञान" में आने स शिक्ष में अतायेने । अमल्य-  
 पिहारी होने और मज्जागत आने के सिधे भदाभा नेही  
 धानागरीदास कहते हैं । "अनौष हनिन है अमल्य दिम दहिनी ।  
 तमहि मिद्ध मेसि भाये पर मादम निद मती हैसौ अमिनी ।  
 मज्जा के आभ धामय लोके धूमै भूमे न मरु भू हैनी सरिनी ।  
 नागरीदास सुवभ गिन वनौ भीदनि अ प-स पम ममिनी ।'  
 देहाहित वास विद्याने में अलहय भर्मा वसही सुद्धता समज  
 सहे में । अमल्यपिहारी होने पर जाननापिहारी होने के सिधे  
 आपना हम हा संधिध वर्णन जी ५६ पुस्तकाकार इन वाणी  
 में अमा दिया गया है वसासाध्य इन वाणी के भवोपयोगी  
 सुद्ध, अनाने ही चेष्टा ही है, यदि मंसा में हिसी के जी  
 इनमें वाज दुआ, तो हम अपने पवित्र के दी नदी अपितु  
 उपन के जी इतार्थ मानेंगे अति 'हैंसैं तैंसैं' के हँसैं ५६  
 भाग दहिनी । पावन भाषी है गद, अमल्य अमल्य है प्रसंश

दिसी भी तरह श्रीहरिवंश नाम सुभ से निकलना, भूमि में रस  
भीज हा मोना है, वह समय पाव जरूर हूँ इसै भा । और  
'धरम सुनाय धरमहि नयत आनौ कृपा गु धरमिनि ही'  
हमारी तो यही प्रथा है । और यदि कही कुछ सुनसे त्रुटि न गल  
है तो कृपा कर क्षमा कर मन्त्राय हैं और सुधारवें ।

श्रीमेवकृष्ण की आशानुसार 'जौन तुम रसिक रस रीति के  
आडि से तौरु मन देवु हरिवंश वानी ' श्रीहितवाङ्मयी में' मन  
लगाने से ही रसरीति मिलती है । और श्रीनाथजी में प्रवेश  
तरी होया जय शम्भानुद्वल आर्पणन परोपहित भगवान्  
श्रीहित हरिवंशनिंदुव गोदभव गुरु शरणागति लकर 'सकल  
समर्पणु प्राणधन गुरु मेरा तजि कहि के वानि यज्ञ अधर्म  
यज्ञ सम हानि इस आश के समस्त कर पूर्ण निष्वास मे मेरा  
भजन मे तत्पर रहै, तय सुभ स्वास् पाकर निर्भय होकर कद  
महै ( श्रीहरिवंश के नाम प्रताप हो लाग लखौ सु कही नहि  
नार्थ ) तथा ( हरिवंश मरसे भये निंदु सु नित गर्गत हरिवंश  
वय ) एवं ( जे दगिताम जगत्र सिरोमणि वंश जिना हमहूँ  
नहि वैदौ ) और भी - जे हरिवंश तनौ, भनौ औरहि  
तौ मोहि श्रीहरिवंश दुदार्ढ्यमे हृद अनन्य प्रतिष्ठा सन्द तभी निंद  
होगे जय ( सुभद हरिवंश प्रणु क्यौ न पायौ ) से ही याचना  
होगी कि श्रीहित कुल महामहन्त गुरु शरण्य जना उचित है ।  
हमारे यदा श्रीगोपालजीय निर्मोही अन्धारे के बड़े बड़े मिद, सन्त,

छिन्नित है । कम से कम ये कम है । जथाहा करने वाले बड़-भागियों  
की दौलत प्रशंसा कर सकें और प्रत्येक का धन होखे हा । अर्थ सदा  
ध्यान में रखना चाहिये ।

सजसो हित निष्काम भति, वृन्दावन विग्राम ।

भीराधावद्वल्लाल कौ, हृदय ध्यान मुष्म नाम ॥

भंस होखे हा सच्चे हृदय से आश्रय लेने पर केई भी वस्तु  
शेष नहीं रह जाती ।

अन्त में रसिक महानुभावों से वित्त है कि केई त्रुटि  
रह गई हो तो अपना अन्तरंग सम्बन्ध भात क्षमा कर  
समझाय दें और—

शुश्रा-मृदु-लु-तु सुहृदो द्रोपासिन्धव-तु दुर्धियः ।

बाग्यमेवान्न निक्षपं सामान्ये रत्नपंकयोः ॥”

अर्थात् मृदुल सज्जन शुश्रु मृदुल करें और असहृदय  
निन्दक होयों का भी नहीं । समुद्र में रत्न और हीय दोनों की बाग्य  
के अनुसार अनुपम प्राप्त करते हैं और जो—

‘ शुश्रु में औशुश्रु जोखीं, जो शु प्रकृति के नीच ।

ज्यां शु शुद्धी के भेत में, सुकर जोखत हीय ॥”

हैं उनके लिये श्री० शु हमारी मही भावना रखें कि

“धनि धनि निन्दक हित हमारे”—

पै० शु० ११, अंगलवार, ८५ वि०  
ता० १०५३८१ श्रीद्विताम्ह ४५६ }

जोस्वामी श्रीद्विताम्ह ४५६

श्रीद्विशोरीलालशु,

श्रीकैत अधिकारी, वृन्दावन.

( श्रीहितप्रभु का संक्षिप्त समय क्रम )



श्रीहितप्रभु का जन्म                      सं० १५३०    वैशाख सुदी ११

यज्ञोपवीत                                      सं० १५३७              ७ वें वर्ष

विवाह    सं० १५३८              ८ वें वर्ष

निजमन्त्र श्रीराधिकाजी से प्राप्त

चैत्र शु० १५    सं० १५४१              ११ वें वर्ष

( ज्ञानेश्वर के साथ द्वारा में श्रीवृन्दावन में भया )

नपरिहर द्वारा ही में श्रीवृन्दावन पुनरागमन और जीवन में  
ही माता पिता का निरुन्वासे— कार्तिक शु० १५ सं० १५४४

और जीवनयन्त्र प्रभु का जीवन में ही प्राकट्य—

चैत्र कृ० ६ सं० १५४४

देववन गमन                                      सं० १५४५

श्रीकृष्णयन्त्र का जन्म देववन में माघ शु० ॥ सं० १५४६

श्रीगोपीनाथजी का    ,,    ,,    शनिवार शु० १५ सं० १५४०

દેવવન પરિત્યાગ કરી શ્રીવર્નવાસ કે શ્રીવૃન્દાવન આગમન  
કાર્તિક શુ. ૧૩ સ. ૧૫૬૫ ઇસી દિન શ્રીરાધારક્ષભજ  
કા શોટાસેવ, એવં શ્રીવૃન્દાવનધામ જન્મ દિન ।

શ્રીમોહનચન્દ્ર પ્રભુ કા જન્મ વૃન્દાવન મેં કાર્તિક બદી ૧૦  
સંવત ૧૫૬૮.

શ્રીહિત પ્રભુ કા સચરીર અન્તર્ધ્યાન શ્રીરાસમંડલ વૃન્દાવન  
શરદ્પૂર્ણિમા સંવત ૧૬૦૬ ।





निश्चय निरुद्ध हित रस सुरति केलि वदन् प्रिलासी  
 श्री १००८ श्रीहित राधावल्लभ लालनी महाराज श्रीवृन्दावन धाम

॥ श्रीराधाव' नमोऽन्यति ॥

\* श्रीहितहरिवंशोऽन्यति \*

॥ श्रीअधिकारी हितगुरु द्विशोरीलाक्षो विन्यते ॥

श्री गसिक अनन्यनृपति यूगंभूषि श्रीमद्विद्याचार्यमहाप्रभु विरचित

# श्रीहित स्फुटवाणीजी



\* सवेया \*

दादश चन्द्र कृतस्थल भगव युद्ध विरुद्ध सुख गुण एक ।  
यदि दशम भवन्न भूगुप्तुत मन्द सुकेतु जनम के अक ॥  
अष्टम राहु यतुर्थ दिवाभूषि तौ हरिवंश करत न सक ।  
जो पै कृष्णयग्य भनअर्पित तौ दृष्टि कहा नयअक रक ॥१॥

\* सवेया \*

आनु दशम जनम निशापति भगव युद्ध सिवस्थल लीके ।  
जो सुख होय धरम भवन्न के तौ भूगुप्तुत सुमन्द नरीके ॥  
तीसरो केतु समेत विधुमस तौ हरिवंश मनकम शीके ।  
गोविंद जाडि भ्रमन्त दशोदित तौ दृष्टि कहा नयअक नीके ॥२॥

---

नोट—स्फुटवाणीजी की सगल सुन्दर दो टीका भी प्रकाशित हो गयी हैं,  
न्या।७ पर १८) मात्र । गोस्वामी श्रीहित रूपवालय अधिकारी  
श्रीराधावल्लभजी का मन्दिर श्रीवृन्दावन मे प्राप्त होगी ।



છપ્પ ।

ના બનૌ છિન અન્ત કવન બુધિ ઘટહિ પ્રકાશિત ।  
 હુટિ ચેતન જુ અચેત લેહ મુનિ બયે વિસવાસિત ॥  
 પારાયર સુર ધન્ધ કલપ કામિનિ મન ફંદા ।  
 પાર વ દેહ દુખ દન્દ કૌન કમ કાલ નિકંચા ॥  
 યદિ હગદિ હગ્ધ હગ્નિશહિત જિનવ ભ્રમહિ ગુણ સલિલ પગ ।  
 જિહિ નામનિ મંગલ લોક તિહું સુ હરિપદ લગ્નુ ન વિલમ્બ કર ૧૩

સવૈયા ।

તૂ બાલક નહિ ભર્યૌ સયાનપ દાહે કૃષ્ણ બજત નહિ નીકે ।  
 અતિવ સુમિદ નજિવ મુરભિનપય મન અંધત તંદુલ જલ શીકે ॥  
 જય શ્રીહિત હરિવશ નર્કમતિ દુઝર મમદારે કટિયત નકછીકે ।  
 ભવઅજ દહિન મુનીજન દુર્લભ પાવત ક્યૌ જુ મનુજ તન બીકે ॥૪॥

કુન્ડલિયા ।

અકર્ષ પ્રાણુ જુ ઘટ રહે પિય બિહુગ્નત નિકેજજ ।  
 સર અન્તર અગ દાલ નિશિ તગ્ધ તેજ ધન ગજજ ॥  
 તરગ્ધ તેજ ધન ગજજ લગ્ન ગુહિ વદન ન આપૈ ।  
 જલ વિહન કગિ નૈન મોર કિહિ ભાય અતાવૈ ॥  
 જય શ્રીહિત હગ્નિવશ વિચારિ બાદ અસ કૌન જુ અકર્ષ ।  
 સારસ યહ સંદેહ પ્રાણુ ઘટ રહે જુ અકર્ષ ॥૫॥

### કુન્ડલિયા ।

સારસ સર વિપુરંત કો, જો પદ સદૈ શરીર ।  
અગિન અનંગ જુ તિય ભખૈ, તો જાને પર પીગ ॥  
તો જાને પર પીગ, ધીર ધરિ સકહિ અગ્ર તન ।  
મનત સારસહિ કૂટિ, પુનિ ન પરચૌ જુ લહત મન ॥  
જય શ્રીહિત હરિવંશ, પ્રિયાગિ પ્રેમ વિગહા બિન વારસ ।  
નિકટ દંત નિત નહન, મગમ કહ જાને સારસ તરા ॥

### છાપ્પય ।

તૈ બાજન કૃત જટિત વિમલ ચન્દન કૃત ઇન્ધન ।  
અમૃત પૂગિ તિહિ મધ્ય કરત સમ્પદ ખલ રિંધન ॥  
અદભુત ધર પર કગત કષ્ટ કંચન હલ વાહત ।  
વારિ કગત પાવાગ મન્દ વોમન વિપ ચાહત ॥  
જય શ્રીહિત હરિવંશ વિચાગિર્દે મનુજ દેહ ગુર ચરણ ગહિ  
સકહિ તૌ સખ પગપંચ તનિ કૃષ્ણ કૃષ્ણ ગોવિંદ કહિ ॥૭॥

### સૈયા ।

તાતૈ ભૈયા મેરી સૌહ કૃષ્ણ ગુણ સંયુ ।  
કુતિસત બાદ વિદ્યાગહિ પગધન સુતુ સિખ મદ પગતિય બંયુ ।  
મણિગણ પુજ અજપતિ ઝાડત હિત હરિવંશ કગ ગહિ કંયુ  
પાયે જાન જંગત મેં સન જન કપટી કુટિલ કલિયુગ દંયુ ।  
કહિ પલોક સકલ સુખ પાવત મેરી સૌહ કૃષ્ણ ગુણ સંયુ ॥૮॥

અગિય ।

માનુષ હો તન પાપ બગૈ મળનાય હો ।  
 દર્શી (કાણી) વૈકે નદ જગત્ત હાય હો ॥  
 જય શ્રીહિત હગ્નિય પ્રપંચ વિષય ગસ મોહ કે ।  
 હરિ હા મિત કંચન ક્યો ચનૈ પચીઆ લોહ કે ॥૧૭॥

રાગ ત્રિસાબવ ।

તુ ગિ રંગ બરી દેખિતન દે રી રાવે ગહસિ આ મોહનમો વ રૈન ।  
 ગતિ અતિ શિથિન પ્રગટ પવટે પટ ગૌગ અંગ પગ ગજત ઐન ॥  
 જલગ કપોલ લનિત લટકતિ વટ જુટ્ટિ કુટિય જ્યો મનુષ મૃત મૈન ।  
 મુન્દગિ ગહિવ કહિન કચુકિ કત કનક કવચ કુચ મિય નખ દૈન ॥  
 અધર મિત દલ ભલિત આગસ મૃત અર આનંદ મૃત સખિ નૈન ।  
 જય શ્રીહિત હગ્નિય દુગતિ નહિ નાગરિ નાગર મધુપ મથન મુખસૈન ॥  
 ॥ ૧૦ ॥

ગગ ત્રિવાલ ।

આનંદ આજ નદ કે દાર ।  
 દાસ અનન્ધ બજન ગસ કાગન પ્રગટે લાલ મનોહર ગ્વાગ ॥  
 ચન્દન સકલ ધેનુ તન મડિત કુસુમ દામ શોભિત આગાગ ।  
 પૂગલુ કુમ બને તોરણ પગ બીચ રચિત પીપર હી ડાર ॥  
 સુવતિ ચૂચ મિય ગોપ વિગજત બાજત પ્રણવ મૃદંગ સુતાગ ।  
 જય શ્રીહિત હગ્નિય અગ્નિવર રીધિનુ દધિમધુ દુન દગદ કે આગ ॥૧૧॥

ગગ ધનાગ્રી ।

મોહનલાલ કે રંગ રાચી ।

મેરે ખ્યાલ પગે જિન કોઝી ખાત દરો દિય માચી ॥

કન્ત અનન્ત કરો જો મેજી ખાત દહો સુનિ સાચી ।

પહ જિય જાડુ બને સિર જીપગ હો વ પ્રગટ હૃદે નાચી ॥

જાગત રાવન ગહત ઉર જીપગ મણિ ક્યન જ્યો પાચી ।

જય શ્રીહિત હવિય ડરો દાકે ડગ દો નાહિન મતિ દાચી ॥૧૨॥

૫૬ ।

મં જુ મોહન સુન્યો વેણુ ગોપાલ કો ।

લ્યોમ મુનિ યાન સુર નાગિ વિચક્તિ બર્જ દહત નહિ અનત •

હયુ બેદ યતિ તાવકો ॥ અવણુ કુડય દુગ્તિ કરત કુતલ

લક્ષિત રચિર દસ્તુગિ ચન્દન તિનક બાલ કો । ચદ ગતિ મદ

બર્જ નિરખિ જનિ દામ ગહિ દેખિ હવિય હિત વેન

નૈદલાલ કો ॥ ૧૩ ॥

૫૬ ।

આજ તૂ જ્વાલ ગોપાલ મો ખેલિરી ।

છાડિ અતિ માન બન અપલ ચલિ જામિની તરે તમાય મો

હિરજી દનક યો ખેલિરી ॥ સુખદ સુન્દર લલન તાપ પર વલ

દમન તૂ વ લલના રસિક દામ જો ખેલિરી । વેનુ દાનન કવણિત

અવણુ સુન્દરિ સુનત મુક્તિ સમ સકલ સુખ પાપ પગ ખેલિરી ॥

વિગ્દહ વ્યાધુય નાથ ગાન ગુણુ મુવતિ તવ નિરખિ મુખ દામ

दे। कदन अग लेखरी । मुनन हरिंश हित मिलत गंधारमण  
 कंड धुन गेलि मुण सिन्धु में जेखरी ॥ १४ ॥

५६ ।

वृषभानु नन्दिनी गजत है ।

सुगत रंग गस बरी भाभिनी सकल नारि सिर गजत है ॥  
 भुत हुत अवन पगत होजि भग भद गयंद गति लाजत है ।  
 अधर निरंग रग गजनि पर दृष्ट कामदे साजत है ॥  
 उ० पर सटके गी सट हारी कटिब किंकिनी लाजत है ।  
 नय श्रीहित हरिवंश पयटि प्रीतम पठ ध्रुवनि ध्रुवति समजानत है ॥

५६ ।

यथै। वृषभानु गोप के द्वार ।

जन्म सियै मोहन हित स्थाभा आनंद निधि मुकुमा ॥  
 गावन धुवति मुदित भिवि भगव वन्य मधुर धुनि धार ।  
 विविधि कुमुभ किमवय कोमव हय गोबिज वन्दनवार ॥  
 विहित वेद विधि विहित विप्रवर कर स्वस्तिनु नन्द्यार ।  
 भुङ्गन भुङ्गन भुङ्गन बेरी दह क्षिप्र हुंहुनि दय कर ॥  
 भागव स्या भंटी याग्य नस दहत पुकार पुकार ।  
 हाटके हीर श्री पाटव देत सम्हार सम्हार ॥  
 मन्दन भक्त धेनु तन भंडित यथे नु गायल गंगार ।  
 नय श्रीहित हरिवंश हृदय हवि तिरकत मध्य हृदिगा ॥ १५ ॥

રાગ ગૌરી ।

તેરૈઈ ધ્યાન ગધિકા ધ્યારી ગોવર્દન ધર લાલહિં ।  
 કનક લતા સી ક્યો ન વિગળત અરુઝી રયામ તમાલહિં ॥  
 ગૌરી ગાન મુતાન તાલ ગદિ નિઝવત ક્યો ન મુપાવાહ ।  
 યહ યૌવન કંચન તન ગાલિનિ સદય હોત યહ દાનહિં ॥  
 મેરે કહૈં વિલમ્બ ન કરિ સખિ ભૂઠિ ભાગ અતિ ભાલહિં ।  
 જમ શ્રીહિત હરિવંશ હચિત હૈ ચાહત સ્વામ કંઠ કી માલહિં ॥૧૭॥

રાગ સમયહ ।

આરતી મદન ગોપાલ કી કીજિયૈ । દેવ ઋષિ વ્યાસ શુક્રાસ  
 સખ દહત નિજ ક્યો ન બિન દષ્ટ ગસ મિન્દુ કૈ પીજિયૈ ॥  
 અગર કરિ ધૂપ કુમ કુમ મલય રંજિત નવ વર્તિકા ધૂત મો  
 પૂરિ રાખૈ । કમુમ કૃત માલ નંદલાલ દે ભાલ પગ તિલક દગિ  
 પ્રગટ મશ ક્યો ન ભાખૈ ॥ ભોગ પ્રભુ યોગ ભગિ થાગ ધગ  
 કૃગ્ય પં મુદિત ભુજ દંડ વર ચમગ દારૈ । આચમન પાન  
 હિત મિલત દર્શર જલ મુખગ મુખ વાસ કુવ તાપ જારૈ ॥  
 ગંખ હુંદુભિ પ્રણવ ઘટ દલ વેણુ રવ ઝલ્હરી સહિત સ્વગ સપ્ત  
 નાર્યૈ । મનુજ તન પામ યહ દાય પ્રજગજ ભજ સુખદ હરિવંશ  
 પ્રભુ ક્યો ન ચાચૈ ॥ ૧૮ ॥

૫૬ ।

આગતી કીજૈ 'શ્યામ સુન્દર કી ।  
 નન્દ કે નન્દન ગધિકા વર કી ॥

## શ્રીહિત મ્હુરવાળી ૭ ।

ભગિનિ કિં દીપ પ્રેમ મંત્રિ બાળી ।  
 સાધુ મગનિ મંત્રિ અનુદિનગલી ॥  
 આગતિ નર યુવતિ પૂષ મન બાળી ।  
 યામ લીલા શ્રીહરિનર દિત ગાનૈ ॥૧૮॥  
 ગગ ગૌરી ।

મ્હો કેજી તાં મનાંક દિયેં ।  
 મેરેં પ્રાણનાથ થી સ્વામા સપ્ત કમે ત્રણ ઢિયેં ॥  
 ને અવનાગ કમ્મ મગત દેં ધગિ દૃઢ મન જી દિયેં ।  
 ને કમગિ તમ્મત મર્યાદા વન મિહાર ગસ પિયેં ॥  
 ગોયે ગતન કિંત ને ધર ન કોન કાજ એસે જિયેં ।  
 જય શ્રીહરન હરિવિશ્વ અનન સચુ નાહી મિત યા મનાંક નિયે ॥૨૦॥

ગગ કૃષ્ણાણુ ।

હરિ ગસના ગાના ગના ગટિ ।  
 અનિ આપીન આતુ યત્રપિ પિય કહિયન દે નાગર નટ ॥  
 સપ્તમ દુમ પગિંબન કુમન દૃઢત કાવિંદી તટ ।  
 વિત્રપન દેસન વિરીન એકિત સતુ મીઅન એમુવન વલીવટ ॥  
 અમ નામ પગિધાન વસન લામન તાતે જી પીતપટ ।  
 જય શ્રીહરિન હરિવિશ્વ પ્રતમિત દયામા દે ખાગી કચન ધટ ॥૨૨॥

ગગ કૃષ્ણાણુ ।

લાલ દી ૩૫ માણી નૈનન નિંખિ નૈક સખી ।  
 મનસિજ અન હ ન હામ માયગે મુકુમાર ગણિ નખ ગિખ

अंग अंगनि उमंग सौमंग सींच नणी । रंग मणी सिर सुरंग  
 पाग लटकि रही जाम जाम यम्पकली कुटिल अलक भीय भीय रणी ।  
 अ यत द्रग अरुण लोल कुंडल मंडित कपोल अधर दसन दीपति  
 ही छरि क्यों हं न जत लणी ॥ अलपद जुग हंड मूल  
 पीन अंग सातुकेल कनक निकष ललि दुकूल दामिनी धरणी ।  
 उर पर मंदार छार मुक्तावर वर सुंदार भक्त दुख गति तियन  
 की देख दशा करणी ॥ मुकलित वय नव किशोर वयन रम्यन  
 यित के योर मधु रितु पिक शाय नून मंजरी यणी । नयनी  
 नटवत हरिवंश गान रागिणी कल्याण तान सप्त स्वरन कल  
 भते पर सुरसिका वणी ॥ २२ ॥

राग भवार ।

होजि जन बीजत अटके जातन ।  
 सधन कुंज के द्वारे ठाड़े अम्बर लपटे गातन ॥  
 ललिता ललित रूप रस बीज बूँद जयावत पातन ।  
 नय श्रीहित हरिवंश परस्पर प्रीतम भिनवत रति रस धातन ॥ २३ ॥

यार दोहा ।

सच्यों हित निष्काम भक्त, वृन्दावन विश्राम ।  
 श्री राधावल्लभ लाल कैं, हृदय ध्यान मुग्ध नाम ॥ २४ ॥  
 तनहि रागि सतसंग में, मनहि प्रेम रस भेव ।  
 सुख याहत हरिवंश हित, कृष्ण कल्पतरु सेव ॥ २५ ॥



## દ્વસરી પત્રી ।

શ્રોતૃપ્રભાનુનન્દિની જયતિ । જ્ઞેય લિખતં શ્રીહરિવંશ  
 બિરુદવદાસ કે કોટિ કોટિ અપરાધ મેં જેની આગતે  
 પાછિયે । બિરુદવદાસ મેરે પ્રાણુ હૈં જ્ઞે શાસ્ત્ર મયોદ સત્ય  
 હૈં ઔઃ શુર મહિમા એમે હી સત્ય હૈં તૌ વ્રજ નન  
 તરણિ દદમ્ય ચૂડામણિ ઓરાધે તિહારે સ્થાપે શુર માર્ગ  
 વિપ્રે અવિશ્વાસ અગ્રાની દૌ હોત હૈં તાર્ત્વે યહ મયોદ  
 રાખનો । તુમ દોજ સદૃશ આનન્દ ખરસૌ બિરુદવદાસ  
 દૌ અહો સીચનો ।

ધતિ દ્વસરી શ્રીગુણ પત્રી હી જય જય કીરધે ।



( મે દોનો પત્ર સંવત ૧૫૬૫ કે લગનમ કે બિખે પ્રતીત હોતે હૈં )



आगमनातन अनन्य श्रीहित राधावल्लभ ( प्रह्ला ) सम्प्रदाय-  
 पूर्वाचार्य-शिरामणि श्रीहित वशीस्वरूप ज्ञानत श्रीमद्गोस्वामी  
 श्रीहित हरिप्रशचन्द्र महाप्रभु ।

अप्रतर्ण	} धात्र-दायन पुनरागमन	} अतर्ध्यान
वैशाख शु० ११ च द्वापर		
सप्तम १९३० विक्रम	सप्तम १९२१ विक्रम	सप्तम १९०६ विक्रम

उत्तमान श्रीहिता २४६३ सन्वत् १९६० विक्रम

✽ શ્રીરાધાવલ્લભોજયતિ ✽

✽ શ્રીહિતહરિવંશચન્દ્રોજયતિ ✽

✽ અધિકારીશ્રીહિત ગુરુ કિશોરીનાથો વિજયતે ✽

શ્રીમદ્ગોસ્વામી શ્રીહિતહરિવંશચન્દ્ર મહાપ્રભુમૃ વિરચિત-

# શ્રીમચ્ચતુરાશીજી



( શ્રીપ્રિયાજી શ્રીહિતસખી-પરસ્પર સંભાષણ ) શય્યા સમય  
રાગ વિજાસ ।

જોઈ જોઈ ખ્યારો કરૈ સોઈ મોહિ ભાવૈ-

ભાવૈ મોહિ જોઈ સોઈ સોઈ કરૈ ખ્યારે ।

મો કો તો ભાવતી દોર ખ્યારે કે નૈનનિ મેં-

ખ્યારો ભયો અહૈ મેરે નૈનનિ કે તારે ॥

મેરે તન મન પ્રાણ હ તં પ્રીતમ પ્રિય-

અપને કોટિક પ્રાણ પ્રીતમ મોસોં હારે ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ હંસ હંસિની સાવલ ગાર-

હહો કોન કરૈ જલ તરંગનિ બ્યારે ॥૧॥

( શ્રીહિતસખી-શ્રીપ્રિયાજી પરસ્પર સંભાષણ ) શય્યા સમય  
રાગ વિજાસ ।

ખ્યારે બોલી દામિની આજ નીકી દામિની-

જોટિ નવીન મેલે સૌ દામિની ।

મેહન રસિક ગમરી માર્ગ તારો જુ-  
 માન દરે એસી કોન દામિની ॥

જ્ય શ્રીહિત હર્ષિવંશ શ્રવણ સુનત પ્યરી-

ગમિકા-રમણ મો મિલી ગજ આમિની ॥૨॥

( શ્રીહિતસખી-સખી પરસ્પર સખાપણુ ) પ્રાત મુગના સમય

રાગ વિભાસ ।

પ્રાત સમય દોજી ગસ લંપટ-

સુરત યુદ્ધ જ્ય યુત અતિ કૂય ।

શ્રમ વારિજ ધન વિન્દુ બદન પર-

બુપણુ અંગદિ અંગ વિફલ ॥

કણુ ગ્લો તિલક શિથિલ અલકાનવિ-

બદન કમલ માનો અલિ બૂય ।

જ્ય શ્રીહિત હરિવંશ મદન રૂમ રૂગિ રહે-

નેન વેન કટિ ચિથિલ દુકલ ॥૩॥

( શ્રીહિતસખી-શ્રીપ્રિયા પરસ્પર સખાપણુ ) મમલા સમય, હાસ

રાગ વિભાસ ।

આજ તો સુનતિ તેઠા વદન/આનંદ ભર્યો-

પિય કે સગમ કે સુચત સુખ ચેન ।

આલમ વસિત બોલ સુગંગ રંગે કપોલ-

વિચકિત અરુણુ ઉનીદે દોજી નૈન ॥

શરિય તિલક લેશ દિરત ઝમ્મ કેશ-

શિર સીમંત ભસિત માનો તૈન

કરણા કુગિ ઉદાર ગખત કછ ન સાર-

દસન વસન લાગન જળ દૈન ॥

કાહે કેા દુગત લીર પવટે પ્રીતમ ઝીગ-

બસ કિયે સ્યામ સિખૌ ચત મૈન ।

ગલિત ઉગસિ માલ શિયિય કિંકિણી બલ-

જય શ્રીહિત હગ્વિશ લતા મૃદ સૈન ॥૪॥

( શ્રીહિતસખી-શ્રીસખી પરસ્પર સમ્ભાષણ ) મગના સમય, હાસ

રાગ વિભાસ ।

આજ પ્રભાત લતા મન્દિર મે-

સુખ વગ્ધત અતિ હગ્પિ યુગલ વર ।

ગૌર સ્યામ અભિગમ રંગ ભરિ-

લટકિ લટકિ પમ ધગત અરનિ પગ ॥

કુચ કુમકુમ રનિત માલાવલિ-

સુગત નાય શ્રીસ્વામ ધામ ધગ ।

પ્રિયા પ્રેમ કે અટ અલકૃત-

ચિત્તિન ચતુર શિરોમણિ નિજ કગ ॥

દમ્પતિ અતિ અનુગમ મુદિત કલ-

ગાન કરત મન હરત પરસ્પર

જય શ્રીહિત હગ્વિશ પ્રસંચ પગયન-

ગાયન અલિ રગ દેત મધુર તગ ॥ ૫ ॥

( ગ્રીહિતસખીજી શુભ પ્રતિ સંભાષણ ) મંગલા સમય, હાસ

ગમ વિભાસ ।

કેાન ચતુર મુવતી પ્રિયા-

જહિ મિલત લાલ ચોર દૂલે રૈન ।

દુરયત સોડવ દુરૈ મુનિ પ્યારે-

રંગ મેં ગહિલે ચૈન મેં નૈન ॥

કો નખ ચન્દ્ર વિગલે પટ-

અટપટે સે બૈન ।

જય ગ્રીહિત દરિવંશ રસિક-

ગાધાપતિ પ્રમથિત બૈન ॥ ૬ ॥

( ગ્રીહિતસખી સખી પ્રતિ સંભાષણ ) શ્રાધા સમય

ગમ બિલાવલ ।

આજ નિકુંજ મંજુ મેં ખેલત-

નવલ દિગોર નવીન કિશોરી ।

અતિ અનુપમ અનુરાગ પરસ્પર-

મુનિ અબુલ ભૂતલ પર વેરી ॥

વિદુમ સ્ફટિક વિવિધિ નિર્મિત ધર-

નવ કર્પૂર પરાગ ન ઘોરી ।

કેમવ દિસલય શયન મુપેસલ-

તાપર સ્વામ નિવેશિત ઝોરી ॥

મિથુન હાસ પરિકાસ પરાયન-

ખીક દ્યોલ કમલ પર ઝોરી ।

ગૌડ સ્થામ ભુજ કલહ મનોહર-

નીરી બધન મોચત ડોરી ॥

હગિ હ મુકર વિલોકિ અપનપૌ-

વિશ્રમ નિકલ માન યુત ભોરી ।

ચિવુઠ સુચારુ પ્રતોચ પ્રતોધિત-

પિય પ્રતિવિંવ જનાય નિહોરી ॥

નેતિ નેતિ વચનામૃત સુનિ સુનિ-

લલિતાદિક દેખતિ દુરિ ચોરી ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ કરત કર ધૂનન-

પ્રથુય કોપ માલાવલિ તોરી ॥ ૭ ॥

( શ્રીહિતસખીજી-શ્રીપ્રિયાજી પરસ્પર સમાપણ ) પ્રાત સમય, વનવિહાર

રાગ ખિલાવલ ૧ ।

અતિ હી અરુણુ તેરે નયન નલિન રી ।

આલસ યુત ઇતરંગ રંગ મગે-

બધે નિશિ જગત મપિન મલિનરી ॥

શિથિલ પલક મે હકતિ ગોલક ગતિ-

વિધયૌ મોહન મૃગ સકત ચલિ ન રી ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ હસ કલ ગામિનિ-

સખમ દેત શ્રમરનિ અલિન રી ॥ ૮ ॥

( શ્રીહિતસખી સખી પ્રતિ સંભાષણ ) શ્રંગાર સમય  
રાગ ખિલાવલ ।

બની શ્રીરાધા મોહન કી જોરી ।

ધન્દ નીલમણિ સ્વામ મનોહર-

ચોતકુંભ તન ગોરી ॥

બાલ વિસાલ તિલક હરિ કામિનિ-

ચિકુર ચન્દ બિચ રોરી ।

ગજ નાયક પ્રભુ ચાલ ગયંદનિ-

મતિ વૃષભાનુ કિશોરી ॥

નીલ નિચોલ કુવતિ મોહન પટ-

ખીત આશુ શિર ખોરી ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ રસિક રાધાપતિ-

સુરત રંગ મેં બોરી ॥ ૯ ॥

( શ્રીહિતસખી-સખી પ્રતિ સંભાષણ ) શ્યામ સમય  
રાગ ખિલાવલ ।

આજ નામરી કિશોર ભાવતી વિચિત્ર જોર-

કહા કહૌ અંગ અંગ પરમ માધુરી ।

કરત કૈલિ કંઠ મેલિ બાહુ દંડ મંડ મંડ-

પરસ સરસ રાસ લાસ્ય મંડલી જુરી ॥

શ્યામ સુન્દરી ખિહાર ખાંસુરી મૃદંગ તાર-

મધુર ઘોષ નૃપુરુદિ કિંકણી ચુરી ।

જય શ્રી દેખત હરિવંશ આલિ નિર્તની સુધંગ આલિ-

વારિ ફેર દેત પ્રાણુ દેહ સૌ દુરી ॥ ૧૦ ॥



( શ્રીહિતસખી સખી પ્રતિ સંભાષણ ) રચ્યા સમય

ગગ બિલાવલ ।

મંજુલ દલ કુંજ દેશ રાધા હરિ વિશદ વેશ-

રાકા નમ કુમુદબધુ રારદ વામિની ।

શ્યામલ દુતિ કનક અંગ વિહરન મિલિ એક સંગ-

નીરદ મણિ નીલ મધ્ય લસત દામિની ॥

અરુણ પીત નવદુકુલ અનુપમ અનુરાગ મૂલ-

સૌરભ યુત શીત અનિલ મન્દ ગામિની ।

દિશલય દમ રચિત શૈવ બોલત પિય વ્યાદુ બૈન-

માન સહિત પ્રતિ પદ પ્રતિકૂલ કામિની ॥

મોહન મન મથત માર પરસત કુચ નીખી હાર-

બેપથ યુત નેતિ નેતિ બદતિ બામિની ।

નરવાહન પ્રજુ સુકેલિ બહુ વિધિ ભર ભરત ઝેલિ-

સૌગત રસ રૂપ નદી જગત પામિની ॥૧૧॥

( શ્રીહિત શ્રીપ્રિયાજી શ્રીસખી-પરસ્પર સંભાષણ ) રાસ સમય

રાગ બિલાવલ ।

ચલદિ રાધિકે સુગ્ગન તેરે હિત સુખ નિધાન-

રાસ રચ્યૌ શ્યામ તટ કલિદ નન્દિની ।

નિર્તાત યુવતી સમૂહ રાગ રંગ અતિ કુતૂહ-

બાજત રસમૂલ મુરલિકા અનન્દિની ॥

વશીરત નિકટ જહા પગમ ગમણિ બૃમિ તહા-

સકલ મુખદ મવય બદ્ધ વાયુ મન્દિની ।

બલતી ધ્રુવ વિદાસ ક નન અતિશય મુવાસ-

ગકા નિરિ શન્દ માસ વિમન ચન્દિની ॥

નરખાલન પ્રભુ નિહાર લોચન બરિ થોપ નારિ-

નખ શિખ સૌહર્દ કામ દુખ નિદન્દિની ।

ખિલસકુ ભુજ શ્રીવ મેલિ બામિનિ સુખ સિંધુ ઝેલિ-

નવ નિકુંજ શ્યામ કેલિ જગત બન્દિની ॥૧૨॥

( શ્રીહિતજ-શ્રીપ્રિયાજ-સખી પરસ્પર સમ્બાધણુ ) મંગલા ક્રિપગન્ત

ગગ ખિલાવલ ।

નન્દ કે લાલ હરૈયા મન મોર ।

હૌ અપને મોતિન લર પોવતિ-

કાકર હારિ મૈયા સખિ મોર ॥

બંક વિયોકનિ ચાલ છખીલી-

ગસિક શિરોમણિ નન્દકિશોર ।

કહિ દૈમ મન રહત શ્રવણ મુનિ-

સરસ મધુર સુરલી કી ઘોર ॥

ધન્દુ ગોવિંદ પદન કે કારણ-

ચિતવન કૌ ભયે નૈન ચકોર ।

જમ શ્રીહિત હરિવ શ રસિક રસ સુવતી-

તૂ લે મિલિ સખી પ્રાણુ અકોર ॥૧૩॥

( શ્રીહિતસખીજી ક્રીયાલજી પ્રતિ સંભાષણ ) આન સમગ

રાગ ટોડી ।

અધગ અરુણુ તેરે કેસે કે દુરાજી ।

રવિ રાસિ રાઠ બજન કિયૌ અપખસ-

અદ્ભુત રંગનિ કુસુમ બનાડી ॥

શુભ કેમેય કસિબ કૈસ્તુભમણિ-

પંદજ સુતનિ નૈ અગનિ હુપાજી ।

હરપિત ઇદુ તજત જૈસે જલધર-

સૌ ભ્રમ ફૂંદિ કહા હૌ પાજી ॥

અમુ ન દમ્બ કહ્ન નહીં વ્યાપત-

હિમકર તપૈ તાહિ કેસે કે શુઝાજી ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ રસિક નવ રંગ પિય-

ભુકુગી લૌહ તેરે અંજન લરાજી ॥૧૪॥

( શ્રીહિતસખીજી-શ્રીપ્રિયાજી પરસ્પર સંભાષણ ) સુરતાંત સમગ

રાગ ટોડી ।

અપની જાત મોસાં દહિરી બામિની-

ઝાગી માગી રહત ગરબ કી માતી ।

હૌં તો સૌ દહત હારી સુનિરી રાધિકા પ્યારી-

નિચિકૌ રંગ ઝા ન દહત લખતી ॥

ગણિત કુસુમ બૈની સુનિરી સારંગ નૈની-

હી લટ અચગ બદતિ અવમાતી ।

અધ નિરંગ દંગ રંગારી કપોલનિ-

યુવતિ ચલતિ ગજગતિ અદમાતી ॥

ઝમિ ઝી ઝખારે ઝસન બસન ઢીલે-

શિયિલ કસનિ કચુકી લગતી ।

સખી મૌ મુનિ જવણ વચન મુદિત મન-

ચલી હરિવ રા બચન મુસિદાતી ॥૧૫॥

( શ્રીહિતસખી ૭-શ્રીપ્રિયા ૭ પગપર સખ્યા ૧૭ ) નવ્યા સમય

ગમ દોડી ।

આજ મેઝે દહે ચની મુગનૈની ।

માવત સગસ યુવતિ મદ્ય મે-

પિય ઐ મિરે બલે પિરૈની ॥

પન્મ પ્રવીણ દોઢ વિલા મે-

અબિનય નિધુણ લાગ અતિ લૈની ૬

૨૫ ગણિ મુનિ નવન કિગોરી-

પન પન ધલતિ આદિની રૈની ॥

જય શ્રીહિત હરિવ ગ ચલી અતિ આતુ-

ગધાનમણ મુગન દુખ દૈની ।

-હસિ -નસિ આસિમન નુમન-

મદન દેહિ કુર બડ કુરૈની ૧૦૦ ॥

( શ્રીહિતસખીછયુગલ તથા સખી પ્રતિ સંભાળુ ) રા'યા સમય  
રાગ ટોડી ।

આજ દેખિ મનમુન્દિરી મોહન બની કેસિ ।

અંસ અંસ બાહુ દૈ કિયોર જોર રૂપ રાસિ-

મનો તમાલ કિંઝિ રૂપી સરસ કનક મેયિ ॥

નવ નિકુળ મૌનર મુંજ મંજુ ઘેળ પ્રેમ પુંજ-

ગાન કરત મોર પિકનિ અપને મ્વરસા મેયિ ।

મદન મુક્તિ અંગ અંગ બીચ બીચ સુનર રંગ-

પલ પલ હરિવંશ પિવત નૈન ચાક ઝંપિ ॥૧૭॥

( શ્રીહિતસખીછ શ્રીપ્રિયાછ પરસ્પર સંભાળુ ) રા'યા નુરતાન સમય  
રાગ આસાવરી ।

સુનિ મેરો વચન હખીલી શ્રીરાધા ।

તૈં પાયો રસસિન્ધુ અમાધા ॥

૧ દયમાનુ મોષ છી ખેટી ।

મેહન લાલ રસિક દસિ બેરી ॥

મદિ વિરયિ ઉમાપતિ નાયે ।

તાપર તૈં બન કૂલ ગિનાયે ॥

દો રસ નેતિ નેતિ શ્રુતિ બાખ્યો ।

તાકો તૈં અધર મુધા રસ ચાખ્યો ॥

તેરો રૂપ દહત નદી આવે ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ કટુક વચ મારં ॥૧૮॥

( શ્રીહિતસખીજી યુગલ તથા સખી પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ ) રાસ સમય

રાગ આસાવરી ।

ખેલત ગસ રસિક પ્રજા મંડન ।

યુવતિન અંશ દિયે જુજ દંડન ॥

રાસ વિમલ નભ ચન્દ્ર વિરાજે ।

મધુર મધુર મુરલી કંઠ જાગે ॥

અતિ રાજત ધનસ્થામ તમાલા ।

કંચન ઝેલિ બની પ્રજાખાલા ॥

જાજત તાલ મૃદંગ વિપંગા ।

ગાન મથત મન કેટિ અનંગા ॥

શૂપળ બહુત વિવિધિ રંગ સારી ।

અંગ સુધંગ દિખાવત નારી ॥

વરપત કુમુદ મુદિત સુર યોવા ।

મુનિયન દિગિ ફુ-ફુભિ કલ યોવા ॥

જય શ્રીહિત હરિવંશ મગન મન સ્વામા ।

રાધારમણ સકલ સુખ ધામા ॥૧૯॥

( શ્રીહિતસખીજી-શ્રીપ્રિયાજી પરસ્પર સંભાષણ ) સુરતાંત સમય

રાગ ધનાગ્રી ।

મોહન લાલ કે રસ માતી ।

અધુ સુપતિ જોવતિ કલ મોસાં-

પ્રથમ નેહ સકુચાતી ॥

દેખ સૈબાર પીત પટ બપર દહાં ચૂનરી રાતી ।  
 ટટી લર લટકત મોતિન કી નખ બિધુ અંકિત છાતી ॥  
 અધર બિંબ અંકિત મપિ મંકિત ગંડ ચલતિ ઉરખાતી ।  
 અરણુ નૈન ઘૂમત આલસ યુત કુસુમ ગલિત લટપાતી ॥  
 આજ રહસિ મોહન સખ લૂટી ત્રિવિધિ આપના યાતી ।  
 જય શ્રીહિત હરિવંશ વચન સુનિ બામિનિ ભવન ચક્ષી મુસિકાવીર ૦

( શ્રીહિતસખીજી-શ્રીપ્રિયાજી પરસ્પર સંભાષણ ) સુરતાન સમય  
 રાગ ધનાકરી ।

તેરે નૈન દગત દોઝી ચારી ।

આતિ કુલકાત સમાત નહીં દહ મિલે હૈ કુંજવિહારી ॥  
 વિયુરી માંગ કુસુમ ગિરિ ગિરિ પરે લટકિ નહીં લટ ન્યારી ।  
 ઉર નખ રેખ પ્રગટ દેખિયત હૈ દહા દુરાવત પ્યારી ॥  
 પરી હૈ પીઠ સુભગ ગડનિ પર અધર નિરંગ સુકુમારી ।  
 જય શ્રીહિત હરિવંશ રસિકિની બામિનિ આલસ ઐગ ઐગ ભાઈ :૧

( શ્રીહિતસખીજી-શ્રીપ્રિયાજી પરસ્પર સંભાષણ )

સુરતાત વા કુંજાર સમય ।

રાગ ધનાકરી ।

નૈનનિ પર વારૈ કોટિક ખંજન ।

ચંચલ ચપલ અરેલુ અનિયારે અગ્રભાગ બન્યો અંજન ॥  
 રચિર મનોહર બક વિલોકન સુરત સમર દલ ગંજન ।  
 જય શ્રીહિત હરિવંશ કહત ન વનૈ છવિ સુખ સમુદ્ર મન રંજન ॥૨૨

( શ્રીહિતસખીશ્રી-શ્રીપ્રિયાશ્રી પગ્ગપગ સમ્ભાષણ ) મુગતાત સમય  
ગગ ધનાઝી ।

ગધા ખ્યારી તેરે નૈન સતોય ।

તૈ નિગ બજન કનક તન યોનન લિયૌ મનોહર મોય ॥

અધગ નિગ અનક લટ છગી રજિત પીક કપોય ।

તૂરમ મગન બર્ નહિ જનત ગપગ પીત નિચોય ॥

કુચ યુગ પગ નખ ગપ પ્રગટ માનાં ગકગ શિગ ગગિ ટોલ ।

જય શ્રીહિત હગિગ કહત કહુ ભામિનિ આતિ આવસ ગૌ જોનગ

( શ્રીહિતસખીશ્રી-શ્રીપ્રિયાશ્રી ૪૧ સખી પગ્ગપગ સમ્ભાષણ ) ગમ સમય  
ગગ ધનાઝી ।

આજ ગોપાલ ગસ ગમ જોયત-

પુલિન મ પનક તીગ ગી સજની ।

નગદ પ્રિમન નમ ચન્દ્ર નિગજત-

રોચ- પ્રિનિધિ સમીર રી સજની ॥

અપક બુલ માવતી મુશ્વિન-

મત મુદિન પિ- ડીર રી મજની ।

દેસી મુધગ નગ ગંગ નીડો-

મજ મુવનિન હી બીગ રી મજની ॥

મયવા મુદિત નિસાન બજન્યૌ-

નન ગડ્યૌ મનિ ધી- રી સજની ।

જય શ્રીહિત હગિગ મગન મન શ્યામા-

હગન મન નન પીગ ગી મજની ॥૧૪॥



( શ્રીહિતમખીં શ્રીપ્રિયાં પદ્મપદ મહાપદ ) શ્રીગાં વા ગયા મમ  
સગ ધનાકી ।

આજ નીટી જની શ્રીગધિકા નાગરી ।  
મજ યુતિ યુથ મે રૂપ અઠ અનુરૂ-  
ગીય શ્રીગાં ગુણ મન ન આગરી ॥  
દમય દમિણુ ભુજ બામ ભુજ અંર સખિ-  
ગાવતી મગમ મિયિ મનુર અગ નાગરી ।  
મદલ વિદ્યા વિદિત ગદસિ શ્રીહનિગ હિત-  
મિયન નવકુલ વગ સ્થામ ગડ બાગરી ॥૨૫॥

( શ્રીહિતમખીં શ્રીપ્રિયાં પદ્મપદ મહાપદ ) શ્રીગાં વા નમ સમય  
સગ ધનાકી ।

મોહની મન ગોપાય દી બાસુરી ।  
માધુરી કવણ પુટ મુનન સુનિ ગધિકે-  
કુત નિ નજર દે તાપ દે નાસુરી ॥  
સગ નદા ગજનિ વિપિન દંદા સગનિ  
અનિય અતિ મંદ શીતલ સદિત માસુ રી ।  
પન્થ પાવન પુલિત બ્રંગ સેવત નયિન-  
કપતરુ તીર બવરી કુન ગમુ રી ॥  
મલ્ય મંડલ બલી દુમ જુ હરિ માં મિલી-  
બની બગ બનિત ઉપમા દંદા કાસુ રી ।  
દુમ દુ કંચન તની લાલ મદન મહુ-  
બય કીલ્લય દલ દ મ દગિન ગવિ દાસુ રી ॥૨૬॥

( શ્રીહિતસ મીશ્ર યુગન તથા સખી પ્રતિ પગ્ગપગ મનાવશુ ) રાસ સખ

રાગ જસત ।

મહુ ગિતુ વૃન્દાવન આનંદ ન યોગ ।

ગજત નાગિરી નન કુગન મિશ્રોગ ॥

યથિત્રા યુગત ૩૫ મજરી ગસાવ ।

વિથકિત અસિ મહુ માધરી ગુનાન ॥

અપઃ જકુન કુન વિવિધિ સરોજ ।

કેતિકી મેલિની મદ મુદિત મનોજ ॥

ગયઃ રચિર જપે વિવિધિ સમીગ ।

મુસિત નૃત નદિત પિઃ પ્રીગ ॥

પાનન પુલિત નન મજુન નિકુજ ।

કિશનય ગયન રચિત મુખ પુજ ॥

મજુ મુરજ કંક મુરલી મૃગ ।

બાજત કિપગ વીણા વગ મુખ અગ ॥

મૃગમદ મનયજ કુમુદમ અરીગ ।

બન્ન અગઃ સત મુરંગિત ગીગ ॥

ગાનત મુદરિ ઝરિ સગસ ધમાગિ ।

પુનમિત ખગ મૃગ હિત ન બાગિ ॥

જય શ્રીહિત હરિવગ હસ હસિની મમાજ ।

ઐસંગી પ્રૈ મિલિ યુગ યુગ ગજ ॥૨૭॥

( શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી પ્રતિ સભાપણુ ) વન વિદાગ સમય

ગગ બસત ।

ગધે દેખ બન હી બાત ।

ગિુ બસત અનત મુખવિત કુસુમ અરુ દન પાત ॥

વેણુ દ્યનિ નેદવાવ બોલી સુનિ ડવ કો અગસાન ।

દગત દતવ વિનમ્ર બામિનિ વૃથા અવમગ જાત ॥

લાવ મર્દતમણિ હમીનૌ તુમ જુ કચન ગાત ।

બની જય શ્રીહિત હરિનચ જોરી ક્રમય મુખુ ગચુ માત ॥૨૮૦॥

( શ્રીહિતસખીજી શ્રીનાલજી દ્વાર સખિન પ્રતિ પગ્મપગ સભાપણુ )

શય્યાયા કૃગાગ સમય ।

રાગ દેવગધોગ ।

મગ નવ તપણિ મદમ મુકુમણિ સ્વામા આજ બની ।

નખ નિખલૌ અંગ અગ માધુરી મોહે સ્વામ ધની ॥

યૌ ગજત મ્વગી ગુચિન કચ દન દજ બહની ।

ચિકુર ચદ્રિનિ બીચ અર્ધ મિતુ માનો અસિન ફની ॥

સામગ ગસ શિર આવત પનારી પિય સીમન્ત ફની ।

નકુટિ મમ કોદક નમન સગ દેજજન રેખ અની ॥

તગલ તિવક તાટક ગડ પર નાસા જલજ બની ।

દસન કુદ સરસદધગ પ નવ પ્રીતમ મન સમતી ॥

ચિમુ મધ્ય અતિ ચારુ સદજ સખિ સાવન વિન્દુ ફની ।

પ્રીતમ પ્રાણુ રતન સમ્પુર કુચ કચુખી હસિન તની ॥

જુજ મૃણાલિ બલ હંત બલમ મુત પરસ સરસ ગ્રાવની ।  
 સ્થામ શીશ તરુ મનો મિડવારી રૂચી રચિર રંગની ॥  
 નાભિ ગભીર મીન મોહન મન ખેલન કૌ હૃદની ।  
 કૃશ કટિ પૃથુ નિનમ્મ કિકિણિ વૃત કદલિ ખંબ જઘની ॥  
 ૫૬ અમ્મુજ બલક મુત જુજલુ પ્રીતમ ઉર અવની ।  
 નવ નવ ભાવ બિસોબિ ભામ હમ વિહંગત વર કરિની ॥  
 જય ધોહિન હગ્વિશ પ્રસંસિત સ્થામા કીરતિ વિશદ ધની ।  
 ગાવત ગ્રાવણિ સુનત સુખાકર વિશ્વ દુરતિ હવની ॥ગ્લા  
 ( શ્રીહિતસખીજી ત્વં સખીન પ્રતિ કીર્તિયાજી પરસ્પર સંભાષણ )

શ્યામા સમય .

ગંગ દેવગંધારી ।

દેખત નવ નિકુજ સુનિ સજની સાગલ હૈ અતિ ચાર ।  
 માધવિકા કેતકી લતા ભે રચ્યો મદન આગાર ॥  
 ચરદ માસ રાક્ષા નિસિ રીંગલ મંદ સુમધ સમીર ।  
 પરિમલ પુલ્ક મુગ્ધન વિશકિત નદનિ કેતકિયા કીર ॥  
 બહુચિધિ રંગ મૃદુલ કિસલ્ય દલ નિર્મિત પિપ સખિ સેજ ।  
 બાજન કનક ચિરિધ મુ પુરિન ધરે ધરનિ પર દેજ ॥  
 તાપર કુચલ કિંગાર કિંગારી હંત હાસ પન્દિતસ ।  
 પ્રીતમ પાણિ ઉગર વર પરસત યિયા દુગવત વાસ ॥  
 કામિનિ કુટિલ જુકુટિ અવલોકન દિન પ્રનિપદ પ્રતિકુલ ।  
 આગુર અતિ અનુગમ વિવસ દરિ પાપ ધન જુજ મુત ॥

નાગર નીળી બધન મોચત ઐચત નીલે નિચોલ ।  
 બધુ કપટ હઠિ કોપ કહત કલ નેતિ નેતિ મધુ ખોલ ॥  
 પરિરંબન વિપરિત રતિ વિતરત સરસ સુરત નિજ કેલિ ।  
 ઇંદ્ર નીલમણિ મય તરુ માનો લસત કનક હી ખેલિ ॥  
 રતિ રણુ મિથુન લલાટ પટલ પર ગમ જલ સીકર સંગ ।  
 લલિતાદિક અંચલ ઝકઝોરત મન અનુરાગ અભંગ ॥  
 નય શ્રીહિત હરિવંશ યથામતિ વરણુત કૃણુ રસામૃત સાર ।  
 કાવણુ સુનત યાપક રતિ રાધા પદ અમૃજ સુકુમાર ॥૩૦॥

( શ્રીહિતસખીજી શ્રીયુગલ પરસ્પર સંભાષણ ) સુરતાંત સમય

રાગ દેવગધાર ।

આજ અતિ રાજત દમ્પતિ ભોર ।

સુરત રંગ કે રસ મેં બીને નાગરિ નવલ કિશોર ॥  
 અંસન પર બુજ દિયે વિલોકત ઇંદુ વદન બિલિ ઓર ।  
 કરત પાન રસમત પરસ્પર લોચન ત્રિપિત ચકોર ॥  
 છૂટી લટનિ લાલ મન કરધ્યો ચે યાકે ચિતઓર ।  
 પરિરંબન યુગ્મન મિલિ ગાવત સ્વર મંદિર કલ ધોર ॥  
 મગ ડગમગત ચલત બન બિહરત રચિર કુંજ ધન ખોર ।  
 નય શ્રીહિત હરિવંશ લાલ લલના બિલિ લિપે સિરવત મોર ૩૧

( શ્રીહિતસખીય સખીન પ્રતિ પરસ્પર સમ્બાધયુ ) સખ્યા સમય  
ગગ દેવગધાર ।

આજ બન કીડત સ્યામા સ્યામ ।

સુભગ બની નિશિ સગદ આદિની રુચિર કુંજ અભિગમ ॥  
ખડન અધઃ કરત પરિંબન અંચત જ્વન દુદ્ધલ ।  
હૃદ નખ પાત તિરીછી ચિતવનિ દંપતિ રસ સમતૂલ ॥  
વે જુજ પીન પથોધઃ પરસત બામ દયા પિય હાઃ ।  
બસનનિ પીક અલક આકર્ષત સમર અમિત મતમાઃ ॥  
પદ પદ પ્રમલ ચૌપ રસ લંપટ અતિ મુદ્દઃ મુકુમાઃ ।  
જય શ્રીહિત હરિવંશ આગ તુલુ દૂત દાં બસિવિશદ વિહાર ૩

( શ્રીહિતસખીય શ્રીયુગલ ઓઃ સખીન પ્રતિ પરસ્પર મમાપયુ )  
મુગતાત સમય ।  
રાગ દેવગધાર ।

આજ બન ગજત યુગલ દિશેર ।

નદનૈદન જ્વમાનુન દિની હૃદે હનીદે બોઃ ॥  
લગમગાત પગ પરત સિધિય ગતિ પરસત નખ ગશિ હોઃ ।  
ફસન જમન ખંડિન અપિ મંડિત ગંદ તિલક દંડુ થોઃ ॥  
દુગ્ધ ન દય દગ્ધનિ કે ગેકે અહન નૈન અવિ બોઃ ।  
જય શ્રીહિત હરિવંશ મૈનાર ન તન મન મુગત સમુદ્ર ઝરોઃ ॥૩૩

( શ્રીહિતસખીજી શ્રીયુગલ ઔર સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ )  
સુરતાંત, બનવિહાર ૬૪ સ્થાન સમય ।

રાગ દેવગંધાર ।

બન હી કુંજન કુંજન ડોલનિ ।

નિકસત નિપટ સાંકરી ખીચિનિ પરસત નાહિ નિચોલનિ ॥  
પ્રાત કાલ ગજની સખ જાગે સૂવત સુખ દગ લોલનિ ।  
આલસવંત અરુણ અતિ વ્યાકુલ કંધુ ઉપજત મતિ ગોલનિ ॥  
નિર્તાન ભૂકુટિ વદન અમ્યુજ મૃદુ સરસ હાસ મધુ બોલનિ ।  
અતિ આસક્ત લાલ અલિ લખપટ બસ છીને મિન મોલનિ ॥  
ખિજુલિત સિચિલ સ્વામ છટી લટ રાજત રુચિર કપોલનિ ।  
ગતિ વિપરિત સુખન પરિભન ચિવુક ચારુ ટકટોલનિ ॥  
કખાઉં શ્રમિત કિંસલય શયા પર મુખ અંચલ ઝક ઝોલનિ ।  
દિન હરિવંશ દાસિ હિય સીંચત વારિધિ કેલિ કમોલનિ ॥૩૪॥

( શ્રીહિતસખીજી શ્રીયુગલ ૬૪ સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ )

મૂલન સમય । રાગ દેવગંધાર ।

મૂલત દોજી નવલ કિશોર ।

ગજની જનિત રંગ સુખ સૂચત અંગ અંગ ઉઠિ બોર ॥  
અતિ અનુરાગ ભરે મિલિ ગાવત સ્વર મન્દિર કલ ધોર ।  
ખીચ ખીચ પ્રીતમ રિત ચોરત પ્રિયા નયન હી કોર ॥  
અમલા અતિ સુકુમારિ ડરત મન ઘર હિંડોર ઝકોર ।

પુવર્તિ પુવર્તિ પ્રીતમ જો લાગત દે નવ કિરજ અંકે ૨ ॥  
 ઉરઝી વિમલ માન કંઠણુ સો કુંડલ સો કચ ડોર ।  
 વેપથ યુત ક્યો બનૈ વિવેચિત આનંદ બદ્યો ન થોર ॥  
 નિગમિ નિરમિ ફલતિ લલિતાદિક વિવિ મુખ ચન્દ્ર ચકોર ।  
 દૈ આશીસ શ્રોધરિવચ પ્રશંસિત કર અચલ હી છોર ॥૩૫॥

( શ્રીહિતસખીજી શ્રીયુગલ જવ સખીન પ્રતિ પરસ્પર સખાપણુ )  
 રાસ સમય । ગગ સાગ ગ ।

આજ બન નીકો રાસ બનાયો ।

પુલિન પવિત્ર સુભગ મમુના તટ મોહન વેણુ બળાયો ॥  
 દલ દલ કિંઠિણિ નૂપુર ધ્વનિ સુનિ ખગ મૃગ સચુપાયો ।  
 યુવતિન મંડલ મધ્ય સ્યામ ધન સારંગ રાગ જમાયો ॥  
 તાલ મૃદંગ ઉપગ મુરજ ડફ મિસિ ગસ સિંધુ બઢાયો ।  
 ત્રિવિધિ વિસદ જુષમાનુનન્દિની અંગ સુધંગ દિખાયો ॥  
 અભિનય નિપુન લટકિ લટ લોચન બૂકુટિ અન ગ નચાયો ।  
 તા તા ચેઈ તાયેઈ ધગતિ નોતન ગતિ પતિ વ્રજગજ રિઝાયો ॥  
 સદલ ઉદાગ નૃપતિ ચૂડામણિ સુખ વાગિધિ વરપાયો ।  
 પરિગંબન સુખન આલિંગન ઉચિત યુવતિ જન પાયો ॥  
 અપ્પન કુસુમ સુદિત નભ નાચક ઇન્દ્ર નિસાન બજાયો  
 જય શ્રીહિત દરિયસ રસિક રાધાપતિ મથ જિતાન જગ છાયો ૩



( શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી પરસ્પર સંભાષણ )

શય્યા સમય, સંબ્રમમાન । રાગ સારંગ ।

ચલહિ કિન માનિનિ કુંજ કુટીર ।

તો બિન કુંવરિ કેલદિ બનિતા યુત મયત મદન કી પીર ॥

મદ્મદ સ્વર પુલકિત બિરહાકુલ ઝવત બિલોચન નીર ।

ક્યાસિ ક્યાસિ વૃષભાનુનન્દિની વિલપત ત્રિપિન અધીર ॥

બક્ષી વિસિખ વ્યાલ માલા વલિ પંચાનન પિઠે હીર ।

મલયજ ગરલ હુતાસન મારુત સાખા મૃગ રિપુ ચીર ॥

જય શ્રીહિત હરિવંશ પરમ કેમલ ચિત ચપલ ચલી પિય તીર ।

સુનિ બપભીત વજ્ર કૌ પંજર સુરત સર રણવીર ॥ ૩૭ ॥

( શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી પ્રતિ સંભાષણ ) શય્યા સમય, સંબ્રમમાન

રાગ સારંગ

બેગિ ચલહિ ઉઠિ મહર દરત કત નિકુંજ છુલાવત લાલ ।

હા રાધા રાધિકા પુકારત નિરખ મદન મજ હાલ ॥

કરત સહાય શરદ શશિ મારત કૂઠિ મિલી ઉર માલ ।

દુર્ગમ તકત સમર અતિ કાતર કરહિ ન પિય પ્રતિપાલ ॥

જય શ્રીહિત હરિવંશ ચલી અતિ આતુર અવલુ સુનત તિહિ હાલ ।

લે રાખે ગિરિ કુચ બિચ સુન્દર સુરત સર અજબાલ પાઠદા ॥

( શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી પરસ્પર સંભાષણ ) શ્યા સમય, સંબ્રમમાન

રાગ સારંગ ।

ખેલ્યો લાલ ચાહત રવન ।

રચિ રચિ અપને હાથ સૈમાર્યો નિકુંજ ભવન ॥

રજની શરદ મંદ સૌરભ સૌં શીતલ પવન ।

તો બિન કુંવરિ હામ છી વેદન મેઠવ દવન ॥

અલહિ ન અપલ બાલ મૃગનયની તબિવ મવન ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ મિલવ પ્યારે છી આરતિ દવન ॥૩૯૦॥

( શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી પ્રતિ સંભાષણ ) શ્યા સમય, સંબ્રમમાન

રાગ સારંગ ।

ખેડે લાલ નિકુંજ ભવન ।

રજની રચિર મશિકા મુકસિત ત્રિવિધિ પવન ॥

વૂ સખિ હામ કેલિ મન મોહન મદન દવન ।

વૃથા ગદરુ દત દગતિ કૃષોદરિ દારન દવન ॥

અપલ અગ્રી તન છી સુધિ બિસરી સુનત અવન ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ મિલે રસ લંપટ રાધિકા રવન ॥૪૦૦॥

( શ્રીહિતસખીજી શ્રીયુગલ પ્રતિ સંભાષણ ) પ્રાતઃ સમય, સંબ્રમમાન

રાગ સારંગ ।

પ્રીતિ છી રીતિ રૈંગીતૌઈ જાન ।

યથાપિ સદસ લોક ચૂડામણિ દીન અપનપો માને ॥

ચમુના પુલિન નિકુંજ બવન મેં માન માનિની ઠાનૈ ।  
 નિકટ નરીન કોટિ કાનિનિ કુલ ધીરજ મનાહ ન આનૈ ॥  
 નસ્વર નેહ ચપલ મધુકર જ્યો આન આન સૌ વાનૈ ।  
 જય શ્રીહિત હરિન શ ચતુર સોઈ લાવહિ ઝાડિ મૈંડ પહિયાનૈ ૪૧

( શ્રીહિતસખીજી યુગલ ઔર સખીન પ્રતિ સમ્બોધણ )

પ્રાતઃ યા શય્યા સમય । રાગ સારંગ ।

પ્રીતિ ન કાફ કી કાનિ તિયારૈ ।

મારગ અપમાગમ વિચલિત મન કો અનુસગત નિવારૈ ॥  
 જ્યૌ સગિતા શ્રાવણુ જલ ઉમગત સનમુખ નિધુ સિધારૈ ।  
 જ્યૌ નાદર્હિ મન દિયૈ કુક ગનિ પ્રગટ પાતધી મારૈ ॥  
 જન શ્રીહિતહરિવ શ કિલગ સારંગ જ્યો સવખ શરીગહિ ભરૈ ।  
 નાયક નિપુણ નનલ મોહન મિનુ કૌન અપનપૌ હારૈ ॥૪૨॥

( શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી પ્રતિ સમ્બોધણ )

શય્યા સમય, પરિહાસ મેં સ શ્રમમાન ।

રાગ સારંગ ।

અતિ નાગરિ વૃષભાનુ દિશેરી ।

સુનિ દૂતિકા ચપલ મૃગનૈની આકર્ષિત ચિતવત ચિત ગોરી ॥  
 શ્રીફલ ઉરજ કચન સી પેહી કટિ કેહરિ ગુણુ સિંધુ મકોરી ।  
 ખેણી ભુજંગ ચન્દ સત બદિની કદલી જંઘ જલચર ગતિ ચોરી ॥  
 સુનિ હરિવંશ આજ્ઞ ગજની મુખ બન ત્રિવાય મેરી નિજ જોરી ।  
 યપિ માન સમેત બામિતી સુનિ કત ગહત બની જિય જોરી ॥૪૩॥

( શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી પ્રતિ પરસ્પર સમ્બાધણ ) શય્યા સમય,  
સખમમાન । રાગ સાર ગ ।

ચલિ ચુન્દગિ બોલી જુદાવન ।

કામિનિ કંક લાગિ કિનિ ગજજલિ તુ દામિનિ મોહન નૌતન ધન ॥  
ક ચુખી મુરંગ વિવિધ રંગ મારી નખ યુગ બિન બને તેરે તન ।  
યે સમ ઉચિત નવલ મોહન દૌ શ્રીદલ કુચ યોવન આગમ ધન ॥  
અતિશય પ્રીતિ દુતી અન્તર મતિ-

જય શ્રીહિત હગિનશ ચલી મુકચિત મન ।

નિબિડ નિકુજ મિને ગસ સાગર-

છતે શત રતિરાજ સુગત રન ॥ ૪૪ ॥

( શ્રીહિતસખીજી મખીન પ્રતિ સમ્બાધણ ) વન વિહાર સમય  
ગગ સાર ગ ।

આનતિ શ્રીવૃન્દાનુદ્ધારી ।

રખ રાસિ અતિ ચણુર ગિરોમણિ અંગ અંગ સુકુમારી ॥  
પ્રથમ ઉગટિ મગજન કગિ સલિજત નીલ વરણુ તન સારી ।  
ગુચિત અમલ તિવજ કૃત સુન્દર સેંદુર મોગ મેંભારી ॥  
મૃગજ સમાન નૈન અ જન સુત રચિર રેખ અનુસારી ।  
જરિત લગ ગ લલિત નારાય પર દયાનાવનિ કૃતકારી ॥  
શ્રીદલ ઉગજ કુલૂંબી ક ચુખી કસિ બેપગ હાગ છવિ ન્યારી ।  
કૃષ દટિ ઉદગ ગ બીગ નાનિપુટ જલન નિતનગનિ બારી ॥

મનૌં મૃણાલ જૂથલુ જૂથિત જુજ રયામ અંસ પર ડારી ।  
જય શ્રીહિત હરિવંશ યુગલ કરણી ગજ બિહરત બન પિય ખ્યારી ૪૫  
( શ્રીહિતસખીજી સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ ) રાધ્યા સમય  
રાગ સારંગ ।

વિપિન ઘન કુંજ રતિકેલિ જુજ મેલિ રચિ-  
રયામ રયામા મિલે શરદ કી યામિની ।  
હૃદય આતિ ફૂલ સમવૃલ પિય નાગરી-  
કરિણિ કરિ મત મનૌં બિબિધિ મુચુ રામિની ॥  
સરસ ગતિ હાસ પરિહાસ આવેશ બસ-  
દલિત દલ મદન બલ કોક રસ કામિની ।  
જય શ્રીહિત હરિવંશ મુનિ લાલ લાવણ્ય બિદે-  
પ્રિયા આતિ શર મુખ સુરત સંગ્રામિની ॥૪૬॥

( શ્રીહિતસખીજી શ્રીયુગલ ઔર સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ )  
બનવિહાર સમય । રાગ સારંગ ।

બન કી લીલા લાલહિ બાવૈ ।

પત્ર પ્રસન્ન ખીચ પ્રતિવિબહિ નખ શિખ પ્રિયા જનાવૈ ॥  
સકુચ ન સકત પ્રગટ ચરિરંબન અલિ લંબટ દુરિ ધાવૈ ।  
સંશ્વમ દેત કુલકિ કલ કામિનિ રતિ રચ કલહ મયાવૈ ॥  
ઉલટી સવૈ સમજિ નૈનનિ મેં અંજન રેખ બનાવૈ ।  
જય શ્રીહિત હરિવંશ પ્રીતિ રીતિ વસ સજની રયામ કહાવૈ ॥૪૭॥

( શ્રીહિતસખી ૭ સખીન પ્રતિ ૫૦ સ૦ ) ઝૂંગાર યા અનવિદાર સમય ।

રાગ સારંગ ।

બની વૃષભાનુનન્દિની આજ ।

બૂપગુ જસન વિવિધિ પહિરેં તન પિય મોહન હિત માજ ॥

કાવ ભાવ લાવણ્ય બુકુટિ લટ હરત યુવતિ જન પાજ ।

તાવ ભેદ અજ ઘર સ્વર સચત નૃપુર દિંદિલિ બાજ ॥

નવ નિકુંજ અભિનામ ત્યામ સૈંગ નીકૈ બન્ધૌ સમાજ ।

૪૫ શ્રીહિત હરિવંશ વિલામ ગસ યુત જોરી અગિયસ રાજ ॥૪૮॥

( શ્રીહિતસખી ૭ સખીન પ્રતિ પરસ્પર સમ્ભાષણ ) રાખ્યા વિદાર સમય

રાગ સારંગ ।

ત્રેખ મખી રાધા પિય કેલિ ।

થે દોઝ ખોરિ ખિરક ગિરિ મદવર-

વિદરત કુમરિ કંઠ જુગ મેલિ ॥

થે દોઝ નવય દિગોર રૂપ નિધિ-

વિટપ તમાવ દનક મનોં ગેલિ ।

અધર અદન સુખન પરિભન-

તન પુત્રકિત આનંદ રસ ઝેલિ ॥

પટ વંધન કંચુપી કુચ પરમત-

કોપ કપટ નિરખન કર ચેલિ ।

૪૫ શ્રીહિત હરિવંશ લાવ રૂમ લખટ-

ધાવ ધન કો બીચ મકેલિ ॥ ૪૯ ॥

( श्रीहितसम्पत्ति सन्निधौ प्रति सम्भाषणम् ) शय्या समये

~ नमः सारंग

नव न नागनि नव न नागः किशोर मिलि-

कुञ्ज कोमल कमल दर्शन शय्या रथी ।

गौर श्यामल अ ग रयिर तापर मिने-

सरम भलि नील मनौ भृङ्ग कथन भय्यी ॥

सुरत नीरी निगध हेत पिय भानिनी-

प्रिया ही भुजनि मे कल क मोहन भय्यी ।

सुभग श्रीक्ष्ण उरज पाणि पगसत-

गोप कुठार गर्व दृग भगि भामिनि लय्यी ॥

कोट कोटिक रभसि रहसि श्रीहरि व श्रित-

निविधि केन भाधुरी किमपि नाहित भय्यी ।

प्रशुभमय रसिक ललितादि लोचन अपक-

पितत भकर द सुभ रासि अ तर सय्यी ॥१०॥

( श्रीपालक श्रीप्रियाङ्गु प्रति सम्भाषणम् ) दान समये ।

गग सारंग ।

दान है री नव न किशोरी ।

मौगत लाल लाडिलौ नागर-

प्रगट भर्तृ दिन दिन ही योरी ॥

नव नाग कनक हीगवलि-

जिद्रुम संगस ननभलि गोरी ।

પૂરિત રમ પીયુષ યુગન ઘટ-

કમલ કલ્પિ બજન હી બેરી ॥

તોપે સકન સોજ દામિનિ હી-

કત સતરાતિ કુટિલ દગ બેરી ।

નયુગ ગવ દિલ્લિ પિસુન ધર-

જય શ્રીહિત હરિવ રા કહત નહિ થેરી ॥૫૧॥

( શ્રીહિતસખીશ સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ ) વર્ષા સમય, વનવિહાર

ગગ મહાર ।

દેખો મારી સુન્દરતા હી સીવો ।

મજ નર તરુણિ કદંબ નાગરી નિરખિ કરત અધશીવો ॥

ને કોળી કોટિ કલ્પ લગિ શુવે રમતા કોટિક પાવે ।

તણિ રચિત બદનારમિન્દ હી શોભા કહત ન આવે ॥

દેવમેઠ જુનોઠ રસાતલ સુનિ કવિ કુવ મતિ હરિયે ।

સહજ માધુરી અંગ અંગ હી કહિ કાસો પટતગિયે ॥

જય શ્રીહિત હરિવંશ પ્રતાપ રૂપ ગુણ વય બલ સ્થામ કિન્નગર ।

જાહી જૂ વિવાસ બસ પશુગિવ દિન વિચકિત ગસ માગર ॥૫૨॥

( શ્રીહિતસખીશ સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ )

વર્ષા સમય, વનવિહાર । રાગ મહાર ।

દેખો મારી અબલા કે બલ રાસ ।

અતિ ગજ મત નિન્કુથ મોહન નિગમિ બેધે લટ પાસ ॥



અમલી પંગુ બધી મન કી ગતિ બિનુ ઉલ્લભ અનિયાસ ।  
 તન કી કહા દેહો જામ પિય પ્રતિ આહત બૃકુટિ વિલામ ॥  
 ક્ય સયમન યાજ બુઝ દગ્સતિ મુસકનિ વદન બિકાસ ।  
 હા હન્વિજ અનીતિ રીતિ હિત કત ડાગ્ત તન ત્રામ ॥૫૩॥

( શ્રીહિતમખીલ મખીન પ્રતિ પગ્ગર સંભાષણ )

વર્ષા સમય, વનરિહાર । ગગ મવાર ।

નયો નેદ નવ રંગ નયો રસ—

નવલ રયામ વૃષભાનુકિશેરી ।

નવ પીતાગર નવલ ચૂનરી—

નર્ધ નર્ધ બુંદન બીજતિ ચોરી ॥

નવ વૃન્દાવન હરિત મનોહર—

નવ ચાતક બોલત મોઝ મોરી ।

નવ મુઝલી જુ મવાઝ નર્ધ ગતિ—

ત્રવણ સુનત આથે ધન ઘોરી ॥

નવ ભૂપણુ નવ મુકટ વિગજત—

નર્ધ નર્ધ ઉરપ લેત ઘોરી ઘોરી ।

જગ શ્રીહિત હરિવંશ અશીષ દેત મુખ—

ચિગ્ગવૌ જુતલ યહ જોરી ॥ ૫૪ ॥

( શ્રીહિતસખીજી સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ વર્ણા મમય,વનવિકાસ  
રામ મસાર ।

આજ દોઝે દામિનિ મિલિ બિહૈસી ।

બિચલૈ રયામ ઘટા અતિ નૌતન તાકે રંગ રસી ॥

૬૮ અમકિ ચહુ ઝોર મખીરી અપને સુખાવ લસી ।

આઈ ૬૬ સરમ ગહની મેં દુહુ લુજ બીચ બસી ॥

અમ્બુજ નીચ કમપ બિધુ રાજત તિનકી અવન ખસી ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ લોભ બેઠન મન પૂરણ શરદ સસી ॥૧॥

( શ્રીહિતસખીજી શ્રીયુગલ પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ )

વન વા સયા મમય । ગગ ઘોડ મસાર ।

હો બસિ બાકે નાનરી રયામ ।

૬૯ હી ગ મ હરૌ નિશિ બાસર-

દ-દાવિપિન કુરી અબિગમ ॥

હાસ તિલાસ સુગત રસ સીંચન-

પશુપતિ દમ્બ જિવાવત કામ ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ લોભ લોચન અલિ-

કંઠ ન અક્ષ સકલ સુખઆમ ॥૫૬॥

( શ્રીહિતમખીજી શ્રીયુગલ ઝોર મખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ )

હોલી સમય । રાગ ઝોરી । ધમાર ।

પ્રથમ મથા મતિ પ્રબુઘી શ્રીજ-દાવન અતિ રમ્ય ।

શ્રીરાધિકા કૃપા બિનુ સમ કે મનનિ અમમ્ય ॥

વગ યમુના જન સીંચન દિનડી સરદ બસંત ।  
 વિવિધિ લાંતિ સુમનમિતે સૌરભ અલિ કુવ મંત ॥  
 અરણ્ય નૃત પવન પગ ફૂંજત કોકિલ કીર ।  
 નિર્તાનિ કંઠ શિખી કુવ અતિ આનંદ અગીર ॥  
 વહત પવન રુચિદાવક શીતલ મન્દ સુગન્ધ ।  
 અગ્ન્ય નીલ સિત મુકલિત જહા તહા પૃથક્ષ બન્ધ ॥  
 અતિ કમનીય વિરાજત મન્દિર નવલ નિકુંજ ।  
 મેવત સગણ્ય પ્રીતિ યુત દ્વિત મીનધવજ પુંજ ॥  
 રસિક ગસ જહા ખેવત રયામા ર્યામ દિશોર ।  
 કમલ બાહુ પગિ ગંજિત લહે ઉનીદે ભોર ॥  
 કનક દપિસ પટ શોભિત સુભગ સાવરે અગ ।  
 નીલ બસન કામિનિ હિર દયુધી કમુંબી સુરંગ ॥  
 તાલ રખાખ મુરજ દક્ષ બાજત મધુર મૃદંગ ।  
 સરસ ઉદતિ ગતિ સ્વચત વગ વૈસુરી મુખ અમ ॥  
 દાહી મિલિ ચાચરિ ગાવત બોરી રાગ અવાપ ।  
 માનસ મૃગ બલ ખેવત ભૂકુટિ ધનુષ દગ ચાપ ॥  
 દાહી કર તાન્નિ પટકત લટકત ઇત ઉત જાત ।  
 હો હો હોરી ખોવત અતિ આનંદ કુવકાત ॥  
 રસિક લાવ પર મેલત કામિનિ બન્દન ધરિ ।  
 પિય પિયકારિનુ છિન્દત તકિ તકિ કુમ કુમ પગિ ॥  
 કમલું કબલું અન્દન તર નિર્મિત તરલ હિડોવ ।

ચરિ, દોઝી જાન મૂલત ફૂલત કરત કલોલ ॥  
 બર હિંદોઝ ઝકોરનિ કામિનિ અધિક કરત ।  
 પુલકિ પુલકિ વેપથ ઐય પ્રીતમ ઉર લપટાત ॥  
 હિતચિતક નિજ ચેરિનુ ઉર આનંદ ન સમાત ।  
 નિરખિ નિપટ નૈનનિ સુખ તૃણુ તોરતિ બલિજાત ॥  
 અતિ હદાર બિવિ મુન્દર સુરવ શર સુકુમાર ।  
 જય શ્રીહિત હગ્વિંશ કરે દિન દોઝી અચલ બિહાર ॥૫૭॥

( શ્રીહિતસંખી ૭ શ્રીપ્રિયા ૭ પ્રતિ પરસ્પર સમ્બોધણુ )

સત્યા સમય, જા અમમાન । રાગ ગૌરી ।

તેરે હિત લેન આર્કાળન તૈં સ્યામ પડાઈ-

હગતિ કામિનિ ધન કદન કામ કૈ ।

કાહે કૌ કરત વાધા સુનિરી ચતુર મધા-

બેટિ કે મેટિ રી આર્કાળન જગત કૈ ॥

દેખિ રી ગજની નીપ્રી રચના રચિર પી કૌ-

પ્રસિન નસિન નભ હિત રેહિણી ધૈ ।

તૈ તૌડન સખી સયાની તૈ મેરી હકૌ ન જાની-

હૌ તેસૌ કલત હારી સુવતિ જુગતિ સૌ ॥

મોહનમાય છબિ આજને રગ રંગીલો-

મેહિત બિહંગ પશુ મધુર મુગ્ધી રૈ ।

તૈ તૌડન મનવ તન કવન ચોવન તન-

જય શ્રીહિત હગ્વિંશ કરે બજહિ જામિનિ જૈ ॥૫૮॥

। (શ્રીનાથશ્વરે શ્રીપ્રિયાશ્વરે શ્રીહિતજી શ્રીકૃષ્ણપાત્રન પ્રતિ પરસ્પર મંત્ર)  
શર્યા વા સર્વકાલ સમય । રાગ ગૌરી ।

યદ્દ જી હૃદ મન બહુત હોય કહિ કહિ કોને સચુપાયો ।  
જલો તલો બિપતિ જાગ મુનતી લો પ્રગટ પિંગલા ગાયો ॥  
હૈ તુમ મ પગ જોય ચક્રત હૃદ પરત કોન પૈ ધાયો ।  
હૃદિધો કોન અ ક પગ રાખે જો ગણિમ મુત જાયો ॥  
જય શ્રીહિત હરિવિય પ્રપચ વંચ સમ કાલ બ્યાવ કો ખાયો ।  
યદ્દ નિય જન રયામ રયામા પદ કમલ સૈંગી શિવ નાયો ॥૫૮॥

(શ્રીહિતજી શ્રીનાથશ્વરે શ્રીપ્રિયાશ્વરે શ્રીકૃષ્ણપાત્રન પ્રતિ પરસ્પર મંત્ર)  
ગગ ગૌરી ।

કહા કહો જન નૈનનિ બી માત ।

મે અધિ પ્રિયા વદન અનુગ રસ અટકે અનત ન જાત ॥  
જન જન મદત પથક સ પુટ લટ અતિ આતુર અકુચાત ।  
લપટ લન નિમેષ અન્તર તૈ અપ હૃદય શત સાત ॥  
શ્રુતિ પગ હંજ દગંજન કૃત્ય બિચ મૃગ મદ હૃદૈ ન સમાત ।  
જય શ્રીહિત હરિવિય મ નાભિ સગ જલસય યૌચત સૌવન માત ॥૫૯॥

( શ્રીહિતસખીશ્વરે મખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાવણુ ) રાસ સમય  
રાગ ગૌરી ।

આજી મખી બન મે જી બને પ્રભુ નાચત હૈ વજ્ર મડન ।  
વયમ પ્રિયાર મુવતિ અંશનિ પગ દિયૈ પ્રિયથ જીજ દડન ॥

કોમલ કુટિન આનક શુદ્ધિ સોબિન આનલગ્નિત મુગ ગ ડન ।  
 માનડું મધુષ થમિત રમ લ પટ નીલ કમલ કે ખ ડન ॥  
 હાસ નિવાસ હરત સબકો મન કામ સમૃદ્ધ મિલંડન ।  
 જય શ્રીહિત લગ્નિ ગ કરત અપનો યસ પ્રગટ અખિલ ક્ષણ ડન  
 ( શ્રીહિતસખીજી સખીન પ્રતિ પરસ્પર સમ્બાધણ ) ગસ સમય  
 નગ ગૌરી ।

ખેલત ગસ દુલહિની દુલહુ ।

સુનહું ન સખી સહિત લક્ષ્મિતાદિક-

નિગખિ નિરખિ નૈનનિ દિન દુલહુ ॥

અતિ ઠલ મધુર મહા મોહન ધ્વનિ-

કિષ્કત હ સમુતા કે કૂનહુ ।

ચેઈ ચેઈ વચન મિથુન મુખ નિરસત-

સુનિ સુનિ દેહ દયા દિન બુલહુ ॥

મૃદુ પદ-વાસ કિંત કુમ કુમ રજ-

અદ્ભુત બહત સમીર દુલહુ ।

મનદું રયામ રયામા દશનાચન-

કચ કચ હાર છુવત છુજ મૂનહુ ॥

અતિ લાવણ્ય રૂપ અમિનય ગુણ-

નાદિન કોટિ કામ સમવધુ ।

બૃકુટિ નિલાસ હાસ રસ બરપત-

જય શ્રીહિત હરિવશ પ્રેસ ગસ મૂલહુ ॥૨॥

( શ્રીહિતસખીશ્લોક સખીન પ્રતિ પગ્ગર સંભાષણ ) રાસ મમય

ત્રિમંગી છંદ ચાર । રાગ જૈ રી ।

મોહન મદન ત્રિમંગી । મોહન મુનિ મન રંગી ॥

મોહન મુનિ સધન પ્રગટ પરમાર્જુન ગુણ ગુણીર ગુપાલા ।

શીશ દિરીટ અવણ મણિ કુડવ ઉર મંડિત બનમાલા ॥

પીતાવર તન ધાતુ વિચિત્રિત કલ કિંકિણિ કટિ ચંગી ।

નખ મણિ તંગણિ ચંણ સગ્ગીરુક મોહન મદન ત્રિમંગી ॥૧॥

મોહન વેણુ બળવૈ । ઇહિં રથ નારિ બુલાવૈ

આઈ જન નાગિ મુનત વંશી ગ્વ ગૃહપતિ-બન્ધુ ત્રિમારે ।

હરચન મદન ગુપાલ મનોહર મનસિજ તાપ નિચારે ॥

હરપિત બદન બંદ અવયોકનિ સરમ મધુર ધ્વનિ ગાવૈ ।

મધુમય સ્થામ સમાન અધર ધરૈ મોહન વેણુ બળવૈ ॥૨॥

રાસ રચૈ બન માહીં । વિમલ કંઠપતરુ છાહીં ॥

વિમલ કંઠપતરુ તીર સુપેસલ શરદ રૈન વર ચન્દા ।

શીતન મંદ મુગંધ પવન બદૈ તહાં ખેલત નૈદનન્દા ॥

અદ્ભુત તાલ મૃદંગ મનોહર કિંકિણિ શબ્દ દરોહીં ।

ચમુના પુલિન રસિક રમ સાગર રાસ રચૈ બન માહીં ॥૩॥

દેખત મધુકર કેલી । મોહે બગ મૃગ બેલી ॥

મોહે મૃગ ધેનુ સહિત સ્વર સુન્દર પ્રેમ મગન પટ છટે ।

ઉડગણુ અદિત ચકિત શશિ મંડલ કોટિ મદન મન લૂટે ॥

અધર પાત પરિગંબન અતિરસ આનંદ મગન સહેલી ।  
જય શ્રીહિત હરિવંશ રસિક સચુપાવત દેખત મધુકર ઢેલી ॥૪૦॥

( શ્રીહિતમખીજી શ્રીપ્રિયાજી ઔર સખીન પ્રતિ સંભાળજી )  
રાસ સમય યા સંભ્રમમાન । રાગ ગૌરી ।

વેણુ માઈ બાજૈ વંશીવટ ।

સદા જમન્ત રહત વૃન્દાવન-

પુલિન પવિત્ર સુભગ યમુના તટ ॥

જટિત કિરીટ મહારાકૃત કુંડલ-

સુખારવિંદ જૈમર માનૈં લટ ।

દશનનિ કુંદ ઢેલી છબિ લગ્નિજત-

સગ્નિજત દનક સમાન પીત પટ ॥

મુનિ મન ધ્યાન ધરત નાહ પાવત-

કરત વિનોદ સંગ બાલક બટ ।

દાસ અનન્ય ભજન રસ દારણુ-

જય શ્રીહિત હરિવંશ પ્રેમઠ લીલાનટ ॥૪૧॥

( શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી ઔર સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાળજી )  
રાસ સમય યા સંભ્રમમાન । રાગ ગૌરી ।

મદન મયન ધન નિકુંજ ખેલત હરિ-

રાક્ષ ગગિર સરદ રજની ।



यमुना पुविन तट सुगतर के निकट-

रचित रास यलि मिलि सजनी ॥

पानत मृदु मृदु ग नायत समै सुध ग-

तै न थवथु सुन्यौ वेथु भजनी ।

जय श्रीहित हरिच श प्रथु राधिम रमथ-

भोडौ भावै भाई जगत भगत भजनी ॥१॥

( श्रीहितसम्पत्ति सम्पत्ति प्रति परस्पर सभाषण ) श्रद्धा समथ  
गम कथाथु ।

मिहगत होजि प्रीतम कृष्ण ।

अनुपम गौर श्याम तन शोभा वन वग्यत सुख पुंज ॥

अद्भुत भेत मडा मनमथ डै दुहुनि लुनथु राव ।

जुमंत सुनट परस्पर अंग अंग विपजत कोटिक भाव ॥

हरि मश्रम रमित अति अमना निद्रायत कल नैन १

पिय के अ के लसंके तट तन आवस सुत कृत शैन ॥

लालन मिस आतु पिय पगसत छे नाबि विरजत ।

अद्भुत गटा जिवोकि अवनि पग निश्चित भेषय गात ॥

नागणि निगधि मदन विा व्यापत द्वियौ सुधाधर धीर ।

सत्व छे मडा मधु पीनत मिलत भीन भिव नीर ॥

अपडी मै सुख मध्य विनोडे जिभाचर सु गसाल ।

जयत न्यौ प्रम ज्यौ पर्यौ मन शत मनसिज कुल जय ॥

સકૃદાપે મયિ અધરામૃત મુખનય સુન્દરિ સહજ સનેહ ।  
 તવ પદ પાંદજ કૌ નિજ મન્દિર પાલય સખિ મમ દેહ ॥  
 પ્રિયા હૃદય કહ્યું કહ્યા હુને પ્રિય નવ નિકુંજ વર રાજ ।  
 સુન્દર વચન રચન કન રિતગત રતિ હાંપટ મિન દાગ ॥  
 હતનૌ શ્રવણ સુનત માનિનિ મુખ અંતર રહ્યૌ ન ધીર ।  
 મતિ કાતર બિન્દજ દુખ વ્યાપૌ બહુતર સ્વાંસ સમીર ॥  
 જય શ્રીહિત દરિવંશ બુજન આહ્યે લે રાણે હિર માંઝ ।  
 મિથુન મિલત જી કહ્યુંક મુખ કિપજ્યૌ તુટિ લવ મિવ બર્ધ સાંઝ ॥૧૬

( શ્રીહિતસખીજી મખીન શ્રુતિ પરસ્પર સંબાધણ )

ગસ યા સ'રા સમય । રાગ હૃદ્યાણુ ।

અચિર ગજત બધુ કાનન દિશોરી ।

સરસ પોડશ કિય તિલક શ્રુગમદ દિયે-

શ્રુગજ સોચન કિશ્ટિ અંગ શિર ખોરી ॥

મંડે પડીર મંડિત ચિકુર ચન્દ્રિકા-

મેદિની ક્વરિ મૂચિત મુરંગ ડોરી ।

શ્રવણ તાટક કે ચિત્રુક પર બિંદુ દૈ-

કસૂમી કંચુકી ફરે કિરજ ફલ દોરી ॥

જલય કંઠણુ છોતિ નખનિ જલક જ્યોતિ-

હિર શુખ રેખ પટ નીલ કટિ યોરી ।

સુભગ જનનસ્થલી' કલિતં કિંકિણિ બંધી-

કોકં સંગીતં રસં સિંધુઃ જકેં જોરી ॥

વિવિધિ લીલા' રચિત રહસિ' શ્રીહરિ' સ' હિત-

રસિક શિરમૌર' રાધારમણુ જોરી ।

બૃહુટિ નિર્જિત મહત્ત્વ મંદ સસ્મિત બંદન-

હિયે રસ બિવસ ધનશ્યામ પિય જોરી ॥૧૭॥

શ્રીહિતસખાંશ' સખીન પ્રતિ પંરસ્પર સંભાષણુ' રાસ' સર્મથ

રાગ' કલ્યાણુ ।

રાસ મેં રસિક મોહન બને' ભામિની' ।

સુભગ પાવન' પુલિને સંરસ' સૌરભ' નલિન-

મત્ત મધુકર નિકર ચરદ હી યામિની' ॥

ત્રિવિધિ રોચક પવન' તાપં દિન' મણિ' દવન-

તહાં હાટે' રમણુ' સંગ ચત્ત કામિની' ।

તાલ ખીણાં' મૃદંગ સંરસ નાયત સુધંગ-

ચક્રતે' ચક્ર' સંગીત કી' સ્વામિની' ॥

રાગ રાગિણિ જમી ત્રિપિત ખરધત અમી-

અધર જિજ્ઞાસિ રમી મુરલિ અભિરામિની' ।

લાગ કદર ઉરપ સમ સ્વર સૌ સુલપ-

લેત' સુંદર સુધર રાધિકા નામિની ॥

તત્ત' ચેઈ' ચેઈ' કરતે' ગતિવ નૌતન ધરત-

પલટિ' ડગમગ દરતિ' મત્ત ગજ ગામિની' ।

શીતલ હસસુતા ગસ ખીચિન—

પરસ પવન શીકર મૃદુ ખગમત ।

વગ મંદાર કમલ અંપક કુલ—

સૌરભ સરસ મિયુન મન હરપત ॥

સક્કલ સુધંગ ખિલાસ પગારધિ—

નાચત નવલ મિત્રે સ્વગ ગાવત ।

મૃગજ મપર મરાલ ખૅવર પિક—

અદ્ભુત કોટિ મદમ શિર નાવત ॥

નિર્મિત કુસુમ શયન મધુ પૂરિત—

ભાજન કનક નિકુળ ખિરાજત ।

ગજની મુખ મુખ ગણિ પરસ્પગ—

સુરત સમર દોર્ગ દય સાજન ॥

વિદ કુલ નૃપતિ કિશોરી કર ધૂત—

પ્રુધિ બલ નીખી બધન મોચત ।

નેતિ નેતિ બચનામૃત બોલત—

અખુષ કોપ પ્રીતમ નાલ સોચત ॥

જય મીઠિત દન્વિંશ ગસિલ સલિનાદિક—

સગા જનન ગંધનિ અવસોદન ।

અનુપમ મુખ જર જરિત વિરસ અગુ—

આનૈદ વારિ કંદ જગ રોકિત ॥ ૭૨ ॥

( શ્રીહિત સખીજી શ્રીપ્રિયાજી પ્રતિ પરસ્પર મંબાપણ )

પ્રેમાધિક્ષ્ય સંપ્રમમાન સમય । રાગ કાન્દરૌ ।

ખગન મીન મૃગજ મદ મેઢત કહા કહૌ નૈનનિ કી વાતૈ ।  
 સુનિ સુન્દરી કહા હૌ સિખઈ મોહન વશીકરણ કી ધાતૈ ॥  
 બંક નિશક ચપલ અનિયારે અરુણ સ્યામ સિત ગ્યે કહા તૈ ।  
 કરત ન હગત પરાયૌ મર્જસ મૃદુ મધુ મિર માદિક દુગ પાતૈ ॥  
 નૈક પ્રસન્ન દષ્ટિ પૂરણ કરિ નહિ મો તન ચિતયૌ પ્રમુદા તૈ ।  
 જય શ્રીહિત હરિવશ હસ હસ ગામિનિ ભાવૈ સો કગદુ પ્રેમ કે નાતૈ ॥

( શ્રીહિત સખીજી શ્રીપ્રિયાજી પ્રતિ પરસ્પર સખાપણ )

પ્રેમાધિક્ષ્ય સખમમાન સમય । રાગ કાન્દરૌ ।

કાહે કૌ માન બલવત હૈ—

બાલક મૃગધોયનિ ।

હૌડવ ડન કણુ કહ ન તકત—

મક બાત સૈકોયનિ ॥

મત મુરલિ અન્તર તબ ગાવત—

જાગ્રત સયન વવાકૃત સોયનિ ।

જય શ્રીહિત હરિવશ મહા મોહન પિય—

આતુર વિટ મિરહજ દુખ મોયનિ ॥૭૪॥

( શ્રીહિત મખીજી શ્રીપ્રિયાજી પ્રતિ પરસ્પર સખાપણ )

પ્રેમાધિક્ષ્ય સખમમાન સમય । રાગ કાન્દરૌ ।

હો જુ કદતિ નેક માત સખી—

મુન કાલે કો કારત ।

પ્રાણુ નમગુ મૌ ક્યોડવ હગન—

આગમ મિનુ આગત ॥

પિય ચિતનન તન ચદન વદન તન—

તુ અવમુખ નિજ ચરણુ નિહાગત ।

વે મૃદુ ચિમુદ પ્રતોલ પ્રમોદિત—

તુ આમિનિ હૃ રૌ હૃ હાગત ॥

રિતમ અધોઃ પ્રિદ્ધ અતિ કાતર—

મગ અવમગ દુષુ વૈ ન બિચાગત ।

જલ્ય શ્રીહિત દ્વનિગ વદનિ પ્રીતમ મિયિ—

મિયિન નયન કાલે ન પ્રાત પાગત ॥૭૫॥

( શ્રીહિત સખીજી અખીન પ્રતિ પગપગ મનાવણુ ) શય્યા સમઘ

ગમ કો-લગૈ ।

નાગરી નિકુર ઐન દિશ્યામ દલ રચિત મૈન—

કોમ દલા દુશન કુંભગિ અતિ હિદાઃ રી ।

મુગન ગમ અંગ અંગ દાર જાવ કાકુટિ ભગ—

માનુની નગમ મયન કોટિ માગ રી ॥

મુખ્ય નયનિ અન્નાવ મિમિ ॥ મિમિન નવ—

નિગમિ નિગમિ નાય મન જર બિદાઃ રી ।

સાદિલીદિયોઃ ગગ દેસ દસિનો સમાજ--

સૌમ્ય દરિયય નૈન નુસ સાઁ રી । ૭૬ ।

( શ્રીદિન સખીઁ શ્રીપ્રિયાઁ ૫૫ સખીન પ્રતિ પદ્મપદ મેભાજી )

પદિદાસ મે, મુગ્ધાન સમય ॥ ગમ દાન્દરે ।

સદ્દન દિનિતિ પુરવિત રમ જૂની ।

સાના બચન મે નરન સકલ નિશિ--

પિય મેમ મુગ્ધ દિગેરે મૂની ॥

યદ્યપિ અનિ અનુગમ ગમસય--

પાન વિવમ નાદિન નતિ જૂની ।

આપસ બચિત નૈન મિગચિત લટ--

દિ ૫૦ કુટુક કેમુટી ખૂની ॥

મગ્ધાઁ માન સિચિય કટિ અન્ન--

ચિતિત દાન્દરે પીક દુટ્ટી ।

જગ શ્રીદિત દગિંસ મદન શઁ જર જર--

ચિતેદિન ગમમ મેભીતન નવી । ૭૭ ।

( શ્રીદિન મખીઁ મખીન પ્રતિ ૫૦૦ મ૦ ) ગમ સમય ।

ગમ દાન્દરે ।

મુગ્ધા નામન નવય દિગેરી ।

મેઁ મેઁ કદન મદન શ્રીલમ દસિ--

જદન મન્દ માનો નિલિત મોરી ॥

તાન જંધાન માન મેં નાગરિ—

દેખત સ્વામ કહત હો હોરી ।

જય શ્રી હિત હરિવંશ માધુરી અંગ અંગ —

અગ્નિસ લિયો મોહન ચિતચોરી ॥૭૮॥

( શ્રીહિત મખીજી સખીન પ્રતિ પરં સં ) રાસ સમય ।

ગમ દાન્દરો ।

ગદસિ ગદસિ મોહન પિય કે સંગરી—

સડેતી અતિ રસ લટકતિ ।

સગસ સુરમ અંગ મેં નાગરિ—

ધેધ ધેધ દહનિ અવનિ પદ પટકતિ ॥

કોટ દવા કુવ જાનિ શિરોમણિ—

અનિનય કુટિય જીકુટિયન મટકતિ ।

વિનવ બો પ્રીનમ અસિ લખટ—

નિઃખિ દગ્ગ નાચા પુટ ચટકતિ ॥

શુભ મજી ગસિ રાય ચૂડામણિ—

ગિરવન પદક દાર પટ મટકતિ

જય શ્રીહિત હરિવંશ નિકટ દાસી જન—

લોચન ગપક ગસાસક મટકતિ ॥

( શ્રીનિસખીજી મખીન પ્રતિ પરં નં ) જયા મમય ।

ગમ દાન્દરો ।

જન્મતી સુદનક અશ્વરી નમોવ ગગન સો—

વામિ ગદી અંગ અંગ મનોભિગમિની ।



વદન જ્યોતિ મનૌ મય કઃ અલક તિલક છબિ કલંક -

છપતિ સ્યામ અ ક મનૌ જલદ દામિની ॥

ખિગત ગાસ હેમ ખંભ મનૌ ભુવંગ વેણી દંડ -

ચિય કે કંક ગ્રેમ યુજ કુંજ દામિની ।

જયશ્રી શોભિત હરિવંશ નાથ સાય સુરત આલસવંત -

કિરજ કનક કલશ રાધિકા સુનામિની ॥૮૦॥

( શ્રીહિતસખીઞ્ચ સખીન પ્રતિ પરસ્પર સમ્ભાષણ ) રાસ સમય  
ગગ કેદારૌ ।

વૃષભાનુનન્દિની મધુર કલ ગાવૈ ।

વિકટ અવધર તાન ચર્યરી તાલ સૌં -

નંદ નંદન મનસિ મોદ કિપજવૈ ॥

પ્રથમ મજ્જન ચાર ચીર કજ્જલ તિલક -

અવણ કુંડલ વદન ચંદ્રનિ લગવૈ ।

સુભગ નકખેસરી રતન હાટક જરી -

અધર બંધુક દશન કુંદ ચમકાવૈ ॥

વલય કંકણ ચાર કિંસિ રાજત હાર -

કટિવ કિંકિણિ ચ.ણ નૃપુર બળવૈ ।

હંમકલ ગામિની મથત મદ દામિની -

નખનિ મદ્યંતિકા રગ રચિ દાવૈ ॥

નિર્ત સાગર રભસિ રહસિ નાગરિ નવલ -

ચંદ ચાલી વિવિધિ બેદનિ જનાવૈ ।

## ફલ-સ્તુતી

(છાંપય) — ભવ જલ નિધિકૈ નાવ કામ પત્રક કૈ પાની ।  
 પ્રેમ ભક્તિ કૈ મૂલ મોદ મંગલ મુખ દાની ॥  
 નિગમ સાગ સિદ્ધાન્ત સન્ત વિશ્રામ મનુગ વર ।  
 રમકિન કૈ રન માગ મહલ અદાગ રમકૈ ધર ॥  
 ચૈરાસી ત્રી (હિત) હન્વિ શ કૃત પદૈ મુનૈ નિશિ ભોર ।  
 છુટૈ આગગી જમનિ તૈ નિન્ખૈ યુગલ કિંગોગ ॥૧॥

નિન્ખૈ યુગલ કિંગોગ ભોગ અરુ રૈન ન જનૈ ।  
 પિપૈ રૂપ રસ મત્ત બૈયૌ કંઠુ મનહિ ન આનૈ ॥  
 પ્રેમ લક્ષણા ભક્તિ હોય હિય આનંદ દારી ।  
 અરુ જન્દાનન બાસ સખી મુખ કૈ અધિકારી ॥  
 કુજ મહલ કી ટકલ મુખ મમ્પતિ દમ્પતિ પાય હૈ ।  
 જયત્રી રૂપમાય હિત પ્રીતિસૌ જો ચૈરાસી ગાય હૈ ॥૨॥

નામ સમ્પાદા—હવિત ।

પટ પદ નિભાસ માઝ સાત હૈ ગિલાવલ મૈ—  
 ટોડી મૈ અતુગ આસાનરી મૈ હૈ જને ।  
 સમ્પ હૈ ધનાત્રી મૈ યુગલ બસન્તકેવિ—  
 દેવગંધાર પચ હોય રમ ના સને ॥  
 સારંગ મૈ પોડશ હૈ ચાર હી મવાગ રુદ—  
 ગાહ મૈ મુહાવૌ નન ગૌરી રમ મૈ બો ।  
 પટ દનાણુ નિધિ કાન્હરૈ કેદારૈ ખેદ—  
 વાણી હિતજી કી સમ ચૈદહ ગા મૈ બને ॥  
 ઇતિ શ્રીફલસ્તુતી સમાપ્તા ।



श्रीनिजहितनेह प्रकाशक श्रीराधिकावतार श्रीहित मन्दकुल  
कदम्बर नृपतिर श्रीदामोदरजी ( श्रीसेवकजी ) महाराज ।

अवतरण  
ध्यात्रण शु० ३ हरियाली  
रुचन १२७२ विक्रम

श्रीवृन्दावन प्रकट आगमन  
संवत् १६१०

अतर्धान  
मयन् १६१० वि

❖ શ્રીરાધાવલ્લભો જયતિ ❖

❖ શ્રીહિત હરિવંશવંશો જયતિ ❖

❖ અધિકારી શ્રીહિત ગુરુ કિશોરીલાલો વિજયતેતરામ ❖

શ્રીહિતનાદકુલનરેશ શ્રીરાધિકાવતાર

શ્રીહિતસેવકજી ( દામોદરદાસજી ) મહારાજ કૃત-

# શ્રીસેવકવાણીજી

## ॥ શ્રીહિત યશ વિલાસ પ્રકરણ ૧ ॥

રાગ ધનાશ્રી । ત્રિપદી ૭-૮

શ્રીહરિવંશચન્દ્ર શુભ નામ । સખ સુખ સિન્ધુ પ્રેમ રસ ધામ ।  
યામ ધટી ગિસરે નહીં ॥  
યહ જુ પરૂયો બુદ્ધિ સહજ સ્વભાવ । શ્રીહરિવંશ નામ રસ ચાવ ।  
નામ સુદૃઢ, ભવ વરન કો ॥  
નામ રતવ આઈ સખ સોહિ । દેહ સુશુદ્ધિ કૃપા કર મોહિ ।  
પ્રેમ સુસુષુ માતા રચે ॥  
નિત્ય મુકંઠ જુ પહિરેં વાસા । પશ બસ્યો (શ્રી) હરિવંશ બિલાસ ।  
શ્રીહરિવંશદિ ગાય દો ॥૧॥  
શ્રી વૃન્દાવન વૈભવ બિલી । અરણ્યત બુદ્ધિ પ્રમાણો કિલી ।  
નિલી મવે હરિવંશ જી ॥

સખી સખા ક્યૌં કહૌં નિબેર । તૌ મેરે મન હી અવસેર ।

ટેર સકલ પ્રભુતા કહૌ ॥

હરિ હરિવંશ બેદ નહિં હોય । પ્રભુ ધસ્તર જનૈં સખ કોય ।

દોય કહૈં ન અનન્યતા ॥

વિસ્વંબર સખ જગ આભામં । યશ વરણૌં (શ્રી) હરિવંશ વિલાસ ।

શ્રી હરિવંશહિ ગાય હૌં ॥૨॥

જન્મ કર્મ શુભ રૂપ અપાર । બાદે કયા કહત વિસ્તાર ।

બાર બાર મુભિરથ કરૌ ॥

હૌ લધુ મતિ જુ અન્ત નહિં લહૌ । બુદ્ધિ પ્રમાણુ કહૌ કયિ કહૌં ।

રહૌ શરથ હરિવંશ કી ॥

સો ધૌ કહિ મોહિ કેતિક મતી । યશ વરણુત હારૌ મરસ્વતી ।

તિતી સવૌ હરિવંશ કી ॥

દેહુ કૃપા કરિ બુદ્ધિ પ્રકાશ । યશ બરણૌં (શ્રી) હરિવંશ વિલાસ ।

શ્રીહરિવંશહિ ગાય હૌ ॥૩॥

કલિયુગ કઠિન વેદ વિધિ ગદી । ધર્મ કહૌં નહિં દીપત સહી ।

કહી બલી કોડ ના કરૌ ॥

ઉદયસ વિગ્વ બયૌ મળ દેશ । ધર્મ રહિત મેદિની નરેશ ॥

ગ્લેગ્લ સકલ પડુમી બદે ॥

સખ જન કગરિ આધુનિક ધર્મ । વેદ વિહિત જનૈં નહિં કર્મ ।

મર્મ બકિર દૌ ક્યૌં લહૌ ॥

जगत भव आवै न विनास । यश वरखौ (श्री) हरिवंश विलास ।

श्रीहरिवंशहि गाय हो ॥४॥

धर्म गहित जगती सभ दुनी । भयेछनि सार दुषित मेदिनी ।

धनी और दूगै नहौ ॥

हरी कृपा मन कियै विचार । श्रुति पथ विमुक्त दुषित संसार ।

सार वेद विधि कहरी ॥

सभ अवतार बलि विस्तरी । पुनि रस रीति जगत उन्मरी ।

करुयै धर्म अपनी प्रगट ॥

प्रगटे जनि धर्म हो नाश । यश वरखौ (श्री) हरिवंश विलास ।

श्रीहरिवंशहि गाय हो ॥५॥

मथुरा मंडल श्रीमि आपनी । जहा पाद प्रगटे जग धनी

जनी अत्रनि वर आप मुभ ॥

शुभ वासर शुभ ऋक्ष विचार । भाषव भास व्यास उजियार ।

नारिनु मंगल भाष्यौ ॥

तारुण्य देव दुन्दुभी जानिये । जय जय शङ्ख मुरन भिसि किये ॥

दिये सिराने सभन के ॥

तारा जननि जगह ऋषि व्यास । यश वरखौ (श्री) हरिवंश विलास ।

श्रीहरिवंशहि गाय हो ॥६॥

श्रीभागवत ऋ शुक्र उन्मरी । तेसी विधि ऋ व्यासाविस्तरी ॥

हरी मन्द जैसी हुती ॥

धर धर तोरण्यु अँदनपार । धर धर प्रति चित्रहिं हरणार ।

पँयशब्द धर आगिये ॥

धर धर दान प्रतिअह होय । धर धर प्रति निरत सण होय ।

धर धर भंगल गावही ॥

धर धर प्रति अति होत दुखाम । मग वगुँ (श्री) हरिवंश विलास ।

श्रीहरिवंशहि गाय हो ॥७॥

निर्गल सजल सरावर भये । दुषरे छान पदलय नये ।

दये सकल सुख समनि हो ॥

असन मगन सुख नित नित नये । अन्न सुकल यहँ दिशि भये ।

गये अशुभ सण विग्व के ॥

भेदो भक्त्य हरि यश विस्तरहिं । पगु ललित आणी उअरहिं ।

हगहिं प्रण पालन सणै ॥

अपनी अपनी रयि विश्वाम । मग वगुँ (श्री) हरिवंश विलास ।

श्रीहरिवंशहि गाय हो ॥८॥

अयहिं सकल जन अपने धर्म । आहोय सकल हरहिं पट् धर्म ।

भर्म भगनि हो आगिये ॥

छूट गह दसियुग ही रीति । नित नित नव नव होत समीति ।

प्रीति पगुअ अति गढी ॥

प्रगट होत औसी जिधि भर्म । सण भव जनित आपदा गह ।

नर्म नर्म गयि अति पढी ॥

સખ જન કરહિ ધર્મ અભ્યાસ । યશ વરણા (શ્રી) હરિવંશ વિલાસ ।

શ્રીહરિવંશહિ ગાય હૈ ॥૮॥

બાલ બિનોદ ન વરણત જનહિ । અપના સૌ ઉપદેશત મનહિ ।

જનહિ કવન લીલા જિતી ॥

સખ હરિ સખ મુણુ રૂપ અપાર । મહા પુરુષ પ્રગટે મંસાર ।

માર બિમોહન તન ધર્યૌ ॥

ક્ષણ ન તૂપતિ શુભ દર્શન આસ । દુસરાવત ભોલત મુદુ હાસ ।

વ્યાસમિત્ર હૈ લાડિસૌ ॥

મુદિત સકલ નહિ છાડત પાસ । યશ વરણા (શ્રી) હરિવંશ વિલાસ ।

શ્રીહરિવંશહિ ગાય હૈ ॥૯॥

અખ ઉપદેશ બક્ષિ હૈ કલ્યૌ । જૈસી ત્રિધિ ભકે ચિત રલ્યૌ ।

લલ્યૌ જુ મન ચાન્તિ સરલ ॥

સખ હરિ ભક્તિ કહી સમુઝાય । જૈસી જૈસી ભવ મુહાય ।

આખ નકલ અગુનિ બજે ॥

સાધન સકલ કહે અબિરુદ્ધ । વેદ પુરાણ સુ આગમ શુદ્ધ ।

બુધિ વિવેક જે જનહી ॥

સમજી સખનિ મુ બક્ષિ ઉભસ । યશ વરણા (શ્રી) હરિવંશ વિલાસ ।

શ્રીહરિવંશહિ ગાય હૈ ॥૧૦॥

અખ અવતાર જોદ તિન કહે । સકલ ઉપાસિક તિન મન રહે ।

કહે બક્ષિ સાધન સદૈ ॥



જો રસ રીતિ સમન તં દૂરિ । મો સખ વિશ્વ રહી બરિપૂરિ ।

અરિ સજીવન કહિ દર્ષ ॥

સખ જન મુદિત કરત મન હાસ । સુનહુ રસિક હરિવંશ વિલાસ ।

શ્રીહરિવંશહિ ગાય હો ॥૨॥

લલિતાદિક રચામા અરુ રચામ । શ્રીહરિવંશ પ્રેમ રસ ધામ ।

નામ પ્રગટ જગ જનનિયૈ ॥

શ્રીહરિવંશ જનિત જહા પ્રેમ । તહા કહાં અત સયમ તેમ ।

હોમ સખ સુખ સપદા ॥

તહા જાતિ કુલ નહીં વિચાર । કૈન સુ ઉતમ કૈન જૈવાર ।

સાર બજન હરિવંશ કૈ ॥

યા રસ મગન મિટૈ બવ નાસ । સુનહુ રસિક હરિવંશ વિલાસ ।

શ્રીહરિવંશહિ ગાય હો ॥૩॥

શ્રીહરિવંશ સુમય ગાઠ્યૌ । સો રસ સખ રસિકન પાઠ્યૌ ॥

કિયૌ સુકૃત મળકૌ દ્રશ્યૌ ॥

યા રસ મે બિધિ નહીં નિષેધ । તહા ન લગન પ્રહન કે વેધ ।

તહાં કુદિન દિન કધુ નહીં ॥

નહીં શુન અશુભ માન અપમાન । નહીં અનૃત પ્રમ કષટ મયાન ।

આન કિયા જપ તપ નહીં ॥

જાન ધ્યાન તજો સક્લ પ્રયાસ । સુનહુ રસિક હરિવંશ વિલાસ ।

શ્રીહરિવંશહિ ગાય હો ॥૪॥

જહા હરિવંશ પ્રેમ ઉન્માદ । તહા કહા સ્વારથ નિસ્વાદ ।

બાદ વિવાદ તહા નહીં ॥

જે શ્રીહરિવંશ નાદ મોહિયે । તિન કિં બહુગિ ન કુમ કર્મ કિયે ।

જિયે કાલ જસ ના પરે ॥

કુલ બિન કહો કૌન સા ચાક । સહજ પ્રેમ ગસ સૌયે પાન ।

રંક ઈસ સમુગત નહીં ॥

નિધિ ન શક કૌન કુલ દાસ । સુનકુ રસિક હરિવ શ વિયામ ।

શ્રીહરિવ શદિ ગાય હા ॥૫॥

યા રસ વિમુખ કગત આચારી । પ્રેમ બિના જુ સયૈ કૃત આર ।

બાગ ધગત કત વિપ્ર દૈ ॥

શ્રીહરિવંશ કિશોર આહીર । અરુ તિન સૈગ બનિતન કી બીર ।

તીર યમુન નિત ખેલહીં ॥

તિન કી હઈ જુ જૂઠન ખાત । આચારી નિજ કહત ખિખ્યાત ।

ખાત મહે સાચી મદા ॥

શ્રીહરિવ શ કહત નિત જામ । સુનકુ રસિક હરિવ શ વિયાસ ।

શ્રીહરિવ શદિ ગાય હા ॥૬॥

નિધિ દિન કહત પુકારિ પુકારિ । અનુભવિ કરકુ દેકુ મોઝિ આગિ ।

હાગિ ન અપ ॥ માનિદૈ ॥

શ્રીહરિવ શ ચગણ નહિં તજૈ । અરુ તિનકે બજતનિ દૈ ભજૈ ।

ભજૈ નહીં, આતિ નિગ ૧૨ ॥

श्रीद्विंश नाम वय लदौ । अपने मन बाधिसन हँदौ ।

गै शङ्खु हविंस ही ॥

हृदय न बनत प्रेम हृदयस । सुनहु गसिक हविंस विवास ।

श्रीहरिवंशदि गाय हौ । ७ ।

७ हविंस प्रेम गस जिये । क्य मोहँ बोधनि मे भिये ।

गिये हल वय मजिये ॥

हम मक्षम न हगहँ हरे । स्वर्ग न पृथँ नर न उरे ।

धरे धर्म हविंस हौ ॥

श्रीहरिवंश धर्म निर्मद । श्रीहरिवंश प्रेम गस लदौ ।

ते सग श्रीद्विंश के ॥

मेवक तिन दामन है दास । सुनहु गसिक हविंस विवास ।

श्री हविंसदि गाय हौ ॥ ८ ॥

इति श्रीद्विपञ्चली शरस विनाय द्वितीय प्रकरण ही

गय वय श्रीद्विपञ्चली ॥ १० ॥



॥ श्रीहरिवंश नाम प्रताप प्रकरण ॥ ३ ॥

त्रिपदी छन्द ।

श्रीद्विंश नाम नित हँदौ । नाम प्रताप नाम हल लदौ ।

नाम हमारी गति सदा ॥

७ मेव हविंस सुनाम । पार्व तिन शङ्खुनि विनाम ।

नाम गहन म तत हरे ॥

नाम प्रसंग कृत उपदेश । जहा यह धर्म धन्य मो देख ।

धन्य सुकुल निर्दिष्ट जन्म भयो ॥

धन्य सुतात धन्य मो भाय । संतत सकल सुनहु यित लाय ।

श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥१॥

प्रथम हृदय अहो जो करै । आचारजन नय अनुसरै ।

जहा जहा हरिवंश के ॥

रसिकन ही सेवा नय देय । प्रीति महित यजहु सय देय ।

(१) डोल धर्म हरिवंश के ॥

(२) डोल सुरीति (३) डोल आचर्य ।

(४) डोल सुकृत निर्दिष्ट पावे जगल ।

(५) डोल हरिवंश कृपा करै ॥

तम सय धर्म कही समुजाय । संतत सकल सुनहु यित लाय ।

श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥२॥

(१धर्म) प्रथम गु मेवहु गुरु के यजन । बिन यह धर्म कही सय करन ।

नाम प्रताप जताभयो ॥

जो हरिवंश नाम अनुसरहु । निशि दिन गुरु को मेवन करहु ।

(२ गीति) सकल समर्पण पाव धन ॥

(३आचर्य) गुरु सेवा तनि करहि जो पानि । यहै अर्थ यहै सय डानि ।

(४सुकृत) कानि न रसिकनि मे रहै ॥

नोट—आचार्य गुरु की शरण देने के पीछे रसिक बनो की सेवा कर आ कष्टित व प्रथम पूछे, आगे के छन्द मे कमल । भाव्य प्रथम के आनुसार उत्तर श्रीसेवक भद्रागज ने ही कृपा कर जताये हैं ।

—श्रीद्वितीय अधिकारी.

(પદ્ય) ગુરુ ગોવિન્દ ન ભેદ કગાય । સંતત સદૃશ મુનહુ ચિત લાય ।

શ્રીહરિવંશ પ્રતાપ યશ ॥૩॥

ગુરુ ઉપદેશ મુનહુ સખ ધર્મ । શ્રીહરિવંશ નામ હલ મર્મ ।

ભર્મ ભગૈ બચનનિ મુનત ॥

શુક મુખ વચન શુ શ્રવણ મુનાવહુ । તમ શ્રીહરિવંશ મુનામ કહાવહુ ।

મન મુમિષુ નિસરૈ નહી ॥

હરિ ગુરુ ચગ્યુ એવા અનુસગ્યુ । અર્ચન વન્દન સંતત કર્યુ ।

દાસ-તનિ હરિ મુખ લહી ॥

સખ્ય સમર્પણુ ભક્તિ બદાય । સંતત સદૃશ મુનહુ ચિત લાય ।

શ્રીહરિવંશ પ્રતાપ યશ ॥૪॥

ગુરુ ઉપદેશ ચપહુ થહિ ચાલ । એસી ભક્તિ કર્યુ બહુ દાલ ।

થે નવ લક્ષણુ ભક્તિ કે ॥

થહ હરિ ભક્તિ કરૈ જળ કોથ । તમ શ્રીહરિવંશ નામ ગતિ હોય ।

થહ શુ બહુત હરિ કી કૃપા ॥

હરિ હરિવંશ ભેદ નહિ દૈ । શ્રીહરિવંશ નામ કિચ્ચકૈ ।

બાળુ કાળુ પ્રતિ વિમરૈ નહી ॥

પ્રીતિ મદિત થહ નામ કહાય । મંતન સદૃશ મુનહુ ચિત લાય ।

શ્રીહરિવંશ પ્રતાપ યશ ॥૫॥

ગુરુ ઉપદેશ ચપહુ થહિ ગતિ । શ્રીહરિવંશ નામ થહ પ્રીતિ ।

મેમ મુક્ત થહ નામ દે ॥

प्रेमी रसिक जयत यह नाम । प्रेम भगन निज जन विग्राम ।

श्रीहरिवंश जहा रहै ॥

प्रेम प्रवाह पड़े जन मोय । तज ओ लोक वेद सुधि होय ।

जय श्रीहरिवंश कृपा करी ॥

मत संयम तज डौन कराय । सतत सकल सुनहु यित लाय ।

श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥६॥

जय यह नाम हृदय आय है । तज सज सुज सम्पति पाय है ।

श्रीहरिवंश सुयग कहै ॥

अरु अपनी प्रभुता नहि सदै । तृष्ण न नीय अपनपौ कहै ।

शुभ अरु अशुभ न जनकी ॥

समुझै नही कष्ट कुय कर्म । सुख यज्ञ आपनो धर्म ।

रसिकन सौ प्रीतम कहै ॥

कण्हूँ काल वृथा नहिं जय । मतत सकल सुनहु यित लाय ।

श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥७॥

जय श्रीहरिवंश नाम जनि है । तज समही तें लघु भानि है ।

हंसि जोलै जहु भान है ॥

तनु सम भजन शीलता होय । परम उदात्त कहै सज कोय ।

मोय न मन कण्हूँ करै ॥

श्रीहरिवंश सुयश मन रहै । कोमल वसन ग्यान सुभ कहै ।

यग्न सुभक्त सय डौ सदा ॥

દુખદ બચન ક્યહું ન કહાય । સતત સકલ મુનહુ ચિત લાય ।

શ્રીહરિવંશ પ્રતાપ યશ ॥૮॥

પ્રગટ ધર્મ જૈસે જાનિયે । શ્રીહરિવંશ નામ જા હિયે ।

નામ સિદ્ધ પઢિયાનિયે ॥

શ્રીહરિવંશ નામ સજ સિદ્ધિ । મળે રસિક બિલસે નવ નિદિ ।

જુગતે દૈહિં ન જાયહી ॥

પોપણુ ભરણુ ન ચિત કરાદિં । શ્રીહરિવંશ વિભવ મિયસાદિં ।

શ્રીવૃન્દાવન કી માધુરી ॥

ગુણુ ગાવત જુ રસિક સચુપાય । સતત સકલ મુનહુ ચિત લાય ।

શ્રીહરિવંશ પ્રતાપ યશ ॥૯॥

શ્રીહરિવંશ ધર્મ જે ધરદિં । શ્રીહરિવંશ નામ હમ્યરદિં ।

તે મન શ્રીહરિવંશ કે ॥

શ્રવણુ મુનહિં જે શ્રીહરિવંશ । મુખ વગણુત વાણી હરિવંશ ।

મન મુખરણુ હગ્નિયંશ કૌ ॥

પેસે રસિક કૃપા જા કરે । તો હમ સે મેરક નિસ્તરે ।

જુઠન લે પાર્વે સદા ॥

સેવક શરણુ રહે ગુણુ ગાય । સતત સકલ મુનહુ ચિત લાય ।

શ્રીહરિવંશ પ્રતાપ યશ ॥૧૦॥

॥ કવિ શ્રીહિત હરિવંશ નામ પ્રતાપ તૃતીય પ્રકરણુ કી

જય જય શ્રીહિતહરિવંશ ॥૩॥



# ॥ હિત વાની પ્રતાપ ચતુર્થ પ્રકરણ ॥ ૪ ॥

ગગ માર, ચરણકુલક છન્દ દુપદ, ઘોઠ આઠ ।

મમઝો શ્રીહરિવિ શ મુવાની ।

રસદ મનોહર સગ જગ જાની ॥

કોમલ મધુર લલિત પદ ઐની ।

રસિકનિ કો જી પન્ન મુખ દેની ॥

શ્રીહરિવિ શ નામ , ઉચ્ચાગ ।

નિત્ય વિદ્યાગ મસ કલ્પો અપાગ ॥

શ્રીકૃ-દાવન ભૂમિ વખાનો ।

શ્રીહરિવિ શ દહે તે જાનો ॥

શ્રીહરિવિ શ ગિગ મસ સૂધી ।

દધુ નહિ દેહો આપની જુધી ॥

શ્રીહરિવિ શ કૃપા મતિ પાકે ।

તમ રસિકનિ કો ગય સુનાકે ॥૧॥

શ્રીહરિવિ શ જી શ્રીમુખ બાળી ।

મે જાન ભૂમિ ચિત મે રાખી ॥

હો દધુ મતિ નહિ લહો પ્રમાના ।

જાનત શ્રીહરિવિ શ મુખાના ॥

નવ પન્નવ પ્રય જૂલ અનન્તા ।

મહા રહત મતુ રન્દ જાનન્તા ॥



શ્રી પૃન્દાવન સુન્દરાર્થ ।

શ્રીહરિવંશ નિત્ય પ્રતિ ગાર્ધ ॥૨॥

શ્રીપૃન્દાવન નવ - નવ કુંજન ।

શ્રીહરિવંશ પ્રેમ રસ પુન્જન ॥

શ્રીહરિવંશ દગ્ધ નિત્ય ડેલી ।

દાશુ-દાશુ પ્રતિ નવ-નવ રસ ડેલી ॥

દબલુંદ નિર્મિત તરલ દિરોલા ।

બૂલત કૂલત દરત દસોલા ॥

દબલુંદ નવ દલ સેજ રચાવૈ ।

શ્રીહરિવંશ સુરતિ રતિ ગવૈ ॥૩॥

મુગ્ધાન્ત હવિ અગ્ધી ન જાઈ ।

દાશુ દાશુ પ્રતિ હરિવંશ જુ ગાર્ધ ॥

આજ સંભારત નાદિં ન યોરી ।

અંગ અંગ હવિ દલો મુ યોરી ॥

નૈન વૈન જૂપજુ ગિદિ લોતી ।

યદ હવિ મોપૈ વગ્ધી ન જાતી ॥

પ્રેમ પ્રીતિ ગ્મ રીતિ બદાર્ધ ।

શ્રીહરિવંશ વચન સુખદાર્ધ ॥૪॥

વંશ બળય વિમોહિત નારી ।

બોલી સંગ મુ નિત્ય ગિદારી ॥

પરિરંબન સુચ્ચન રસ કેલી ।

વિહરત કુંવરિ ઠંઠ ભુજ મેલી ॥

સુન્દર રાસ રચ્યો બન માંડ્યો ।

યમુના પુલિન કથપતરુ છાંઈ ॥

રાસ રંગ રતિ બરણી ન બાઈ ।

નિત નિત શ્રીહરિવંશ જી ગાઈ ॥૫॥

શ્રીહરિવંશ પ્રેમ રમ ગાના ।

રસિક વિમોહિત પરમ સુખના ॥

અંશનિ પર ભુજ દિયે વિમોહત ।

તૃપ્તિ ન સુન્દર મુખ અવિસેકત ॥

કંદુ બદન દીપત બિબિ ઓરા ।

ચારુ સુસોચન તૃપિત ચકેરા ॥

કરત પાન રસ મત સદાઈ ।

શ્રીહરિવંશ પ્રેમ રતિ ગાઈ ॥૬॥

શ્રીહરિવંશ સુરીતિ સુનાઈ ।

સ્વામા સ્યામ હૃદ સંગ ગાજી ॥

કાણુ ઇંદ કબહુ ન અન્તર હોઈ ।

પ્રાણુ સુ હૃદ દેહ હૈ દોઈ ॥

રાધા સંગ જિના નહિ રયામ ।

સ્વામ જિના નહિ રાધા નામ ॥

ક્ષણ ક્ષણ પ્રતિ આરાધત રહ્યો ।

ગદ્ય નામ સ્થાન તળ કહ્યો ॥

લલિતાદિક્ષિ સગ સચુ પાવે ।

શ્રીહરિવંશ સુરત રતિ આવે ॥૭॥

શ્રીહરિવંશ ગિરા યશ ગાયે ।

શ્રીહરિવંશ ગહત સચુ પાવે ॥

શ્રીહરિવંશ નામ પર સંગા ।

શ્રીહરિવંશ જાન ધંક સંગા ॥

મન કમ વચન કહો નિત રેરે ।

શ્રીહરિવંશ પ્રાણ ધન મેરે ॥

મેવક શ્રીહરિવંશ હિ ગાવે ।

શ્રીહરિવંશ નામ ગતિ પાવે ॥૮॥

કરખા છન્દ કથા ।

જમતિ જગદીશ જશ જગમગત જગત મુન—

જગત બદિત સુ હરિવંશ બાણી ।

મધુર કેમલ સુપદ પ્રીતિ આનન્દ રસ—

ત્રેમ વિન્નરિત હરિવંશ બાણી ॥

રસિક રમ મત શ્રુતિ સુનત પીવન્ત મન—

મસનિ ગાવન્ત હરિવંશ બાણી ॥

દહત હરિવંશ હરિવંશ હરિવંશ દિત—

જમત હરિવંશ હરિવંશ બાણી ॥૯॥

કહી નિત મેલિ રસ-ખેલિ જુદાવિપિન—

કુંજ તૈ કુંજ ડોલનિ બખાની ૧

પટ ન પરસંત નિકસંત વીચિન સધન—

પ્રેમ વિહ્વલ સુ નહિ દેહ માની ૨

મગન જિત જિત ચલત છિન સુ ડગમગ મિલત—

પન્થ બન દેત અતિ હેત ભવની ૩

રસિહ હિત પરમ આનન્દ અવલોક તન—

સરસ વિસ્તગિત હરિવંશ વાની ૥૨॥

વંદ્ય રસ નાદ મોહિત સકલ સુન્દરી—

આનિ રતિ માનિ કલ બાડિ કાની ૪

વાહુ પરિવંબ નીચી હિરજ પરસિ દૈસિ—

હમમિ રતિપતિ રમિત રીતિ બાની ૫

યથ મુવલિન મચિત રાસ મંડલ રચિત—

માન ગુણુ વૃત્ય આનન્દ દાની ૬

વત યેઈયેઈ કરત માલિવ નૌતન ધરત—

રાસ રસ રચિત હરિવંશ વાની ૥૩॥

રામ રસ રચિત બાણી જુ પ્રગટિત જગત—

શુદ્ધ અવિરદ પરસિદ્ધ બાની ૭

સ્વામ સ્વામા પ્રગટ પ્રગટ અક્ષર નિકટ—

પ્રગટ રમ અવત અતિ મધુર બાની ૮

સો જુ બાણી રસિક નિત્ય નિશિ દિન રટત—

કહત અરુ સુનત રસ રીતિ જાની ।

તાહિ તજિ ઔર ગાજિ ન કબહૂં કહૂ—

પ્રાણ રમિ રહી હરિવંશ વાની ॥૪॥

ભાગ અનભાગ જાનત જુ નહિ આપના—

કૌન ધો લાભ અરુ કૌન હાની ।

મગટ નિધિ છાંડિ કત દિરત રૂંકા કરત—

ભરમ બટકત સુ નહિ જુલ જાની ॥

પ્રીતિ બિનુ રીતિ રૂપી જુ લાગત સંકલ —

જુગતિ કરિ હોત કત કવિત માની ।

રસિક જો સઘ ચાહત જુ રસ રીતિ રૂલ—

તો કહો અરુ સુનો હરિવંશ વાની ॥૫॥

યહૈ નિત કેલિ ચેઈ જુ નામક નિપુણ—

યહૈ બન જૂમિ નિત નિત બખાની ।

બહુત રચના કરત રાગ રાગિનિ ધરત—

તાન બંધાન સખ કાનિ આની ॥

જ્યોં મૂંદ નહિ મિલત ટકસાર તે બાહિરી—

લાખ મેં ગૈર મુહરી જુ જાની ।

યો જુ રસ રીતિ અરણ્યત ન કાંઈ મિલત—

જો ન ઉચ્ચગત હરિવંશ જાની ॥૬॥

રસિક ખિનુ કહૈ સખ હી જુ માનત ખુરૈ—

રસિકઈ કહૈા કૈસૈ જુ જાની ।

આપની આપની ઠૈર જોઈ તહા—

આપની બુદ્ધિ કે હોત માની ॥

નિપટ કરિ રસિક જો હોહુ તેસી કહૈ—

અખ જુ યહ સુનૌ મેરી કહાની ।

જૌડરુ તુમ રસિક રસ રીતિ કે ચાહિલે—

તૌડરુ મન દેહુ હરિવંશ વાની ॥૭॥

વેદ વિદ્યા પઢત કર્મ ધર્મન કરત—

જલ્પ તન કપ હી અવધિ આની ।

મારુ મતિ છાડિ, સસાર બટકત શ્રમત—

આગ હી પાશ નહિ તોગિ જાની ॥

સકલ સ્વારથ કરત રહત જન્મત મરત—

દુ ખ અઽ સુખ કે હોત માની ।

છાડિ, જાજલ કૈસૈ ન નિરચમ ધરત—

એક કિન રમત હરિવંશ વાની ॥૮॥

પૃથા બલગન કરત ઘોસ ખોવત સકલ—

સોવતન ગતિ નહિ જાત જાની ।

એસૈ હી જાતિ સમુજૌ ન કબહૂં દજ—

કૌન સુખ દુ ખ કે લાજ હાની ॥

તથ મુખ હરિવંશ ગુણ નામ રસના રહત—

ઐર બહુ વચન અતિ દુઃખ દાની ।

હાનિ હરિવંશ કે નામ અન્તર પરે—

સાબ હરિવંશ ઉચ્ચરતે વાની ॥૮૫॥

નામ બાની નિકટ સ્થામ સ્થામા પ્રગટ—

રહત નિશિ દિન પરમ પ્રીતિ જાની ।

નામ બાની સુનત સ્થામ સ્થામા સુનત—

ગસદ માધુર્ય અતિ પ્રેમ દાની ॥

નામ બાની જહા સ્થામ સ્થામા તહા—

સુનત ગાવંત મો મન જુ માની ।

બલિત શુભ નામ બલિ વિશદ કીરતિ જગત—

દેા જુ બલિ બહે હરિવંશ બાની ॥૯૦॥

❀ ❀ ❀

બલિ બલિ શ્રીહરિવંશ નામ બલિ બલિત વિમલ વસ ।

બલિ બલિ શ્રીહરિવંશ કર્મ પ્રત ફૂત સુ નામ વસ ॥

બલિ બલિ શ્રીહરિવંશ વરણ ધર્મિત ગતિ જાનત ।

બલિ બલિ શ્રીહરિવંશ નામ કલિ પ્રગટ પ્રમાણત ॥

હરિવંશ નામ સુ પ્રતાપ બલિ બલિત જગત કીરતિ વિશદ ।

હરિવંશ વિમલ વાની સુ બલિ મુદુ કર્મનીય સુમધુર પદ ॥૯૧॥

ઇતિ શ્રીહિત હરિવંશ બાની પ્રતાપ ચતુર્થ પ્રકરણ કી

જમ જમ શ્રીહિત હરિવંશ ॥૯૨॥

# ॥ સર્વ શાસ્ત્રસાર શ્રીહિતદ્વિષ્ણુસાધન પ્રકરણ ૫ ॥

૭૮૬ ગાથા ।

પ્રથમ પ્રણમ્ય મુરમ્ય મતિ, મન યુધિ ચિત્ત પ્રસંસ ।

ચરણ શરણ સેવક સદા, સુ જય જય શ્રીહરિવંશ ॥

શ્રીહરિવંશ વિપુલ ગુણ મિષ્ટં ।

શ્રીહરિવંશ ઉપાસિક ધૃષ્ટં ॥

શ્રીહરિવંશ કૃપા મતિ પાત્રં ।

શ્રીહરિવંશ વિમલ ગુણ ગાત્રં ॥

ગાત્રં હરિવંશ નામ મય નિર્મલ શ્રીહરિવંશ રમિત પ્રાણં ।

હારજ હરિવંશ પ્રતાપ મુહુર્ધિત હારણ શ્રીહરિવંશ બળં ॥

વિદ્યા હરિવંશ મન્મ ચતુરક્ષર જપત મિદ્ધ ભવ ઉદ્ધરણં ।

જય જય હરિવંશ જગત મંગલ પર શ્રીહરિવંશ ચરણ શરણં ॥૧॥

હરિ ચિતિ અક્ષર બીજ ઋષિ વંશી શક્તિ સુ અંશ ।

નમ શિખ સુન્દર ધ્યાન ધરિ જય જય શ્રીહરિવંશ ॥

શ્રીહરિવંશ સુ સુન્દર ધ્યાનં ।

શ્રીહરિવંશ વિશદ વિગાનં ॥

શ્રીહરિવંશ નામ ગુણ રૂપં ।

શ્રીહરિવંશ પ્રેમ રસ રૂપં ॥

રસમય હરિવંશ પરમ પરમાક્ષર શ્રીહરિવંશ કૃપા સદનં ।

આત્મા હરિવંશ પ્રગટ પરમાર્નવ શ્રીહરિવંશ પ્રમાણ મનં ॥



જીવન હરિવંશ વિપુલ સુખ સંપતિ શ્રીહરિવંશ બલિત વરણું ।  
જય જય હરિવંશ જગત મંગલ પર શ્રીહરિવંશ ચરણુ શરણું ॥૨॥

શરણુ નિરાપદ પદ રમિત, સકલ અશુભ શુભ નંશ ।

દેત સહજ નિશ્ચય જગતિ, જય જય શ્રીહરિવંશ ॥

શ્રીહરિવંશ મુદિત મન લોભં ।

શ્રીહરિવંશ વચન વર શોભં ॥

શ્રીહરિવંશ કાયકૃત કારં ।

શ્રીહરિવંશ ત્રિશુદ્ધ વિચારં ॥

પૂજા હરિવંશ નામ પરમારથ શ્રીહરિવંશ બિખેદ પરં ।

ધીરજ હરિવંશ વિરદ બલ બીરજ શ્રીહરિવંશ અભદ્ર હરં ॥

તૃપ્તિ હરિવંશ સુયશ રસ લંપટ શ્રીહરિવંશ કર્મ કરણું ।

જય જય હરિવંશ જગત મંગલ પર શ્રીહરિવંશ ચરણુ શરણું ॥૩॥

શ્રીહરિવંશ સુગોત કુલ, દેવ જાતિ હરિવંશ ।

શ્રીહરિવંશ સ્વરૂપ હિત, ઋદ્ધિ સિદ્ધિ હરિવંશ ॥

શ્રીહરિવંશ વિદિત બિધિ વેદં ।

શ્રીહરિવંશ જીવ તત્વ અભેદં ॥

શ્રીહરિવંશ પ્રકાસિત યોગં ।

શ્રીહરિવંશ સુકૃત સુખ ભોગં ॥

પ્રજ્ઞા હરિવંશ પ્રતીતિ પ્રમાણુત પ્રીતમ શ્રીહરિવંશ પ્રિયં ।

ગાથા હરિવંશ ગીત શુભ જોયર ગુણિત ગુણિત હરિવંશ ગિયં ॥

સેવક હરિવંશ સાર સંચિત સખ—

શ્રીહરિવંશ ધર્મ ધરણું ।

જય જય હરિવંશ જગત મંગલ પર—

શ્રીહરિવંશ ચરણ ચરણું ॥૪॥

✽ ૭૫૫ ✽

જય જય શ્રીહરિવંશ ચન્દ્ર દિગ્ગંધ વર કુલ મંડન ।

જય જય શ્રીહરિવંશ ચન્દ્ર દક્ષિ તમ ભવ મંડન ॥

જય જય શ્રીહરિવંશ ચન્દ્ર અક્ષરક પ્રકાશિત ।

જય જય શ્રીહરિવંશ ચન્દ્ર મળ જગ આભાસિત ॥

હરિવંશ ચન્દ્ર અમૃત જરણિ, સદૃશ જન્મ તાપનિ હરણું ।

સેવક મમીષ મંત્રત રહે, શ્રીહરિવંશ ચરણ ચરણું ॥

મતિ સર્વશાસ્ત્રસાર શ્રીહિત મહારાધન પંચમ પ્રકરણ હી

જય જય શ્રીહિતહરિવંશ ॥૫॥



॥શ્રીહિત ધર્મિન કૃત્ય વર્ણન ષષ્ઠ પ્રકરણ॥૬

૭-૬ તોટક । સંખ્યા ચૌદ્ધ ॥

પહિલે હરિવંશ સુનામ કહો ।

હરિવંશ મુધર્મિનિ સંગ લહો ॥

હરિવંશ સુનામ સદા તિનકે ।

સુખ સમ્પતિ દમ્પતિ જૂ બિનકે ॥૧॥

हरिवंश सुनाम कहौ नित है ।

मिल ही कहौ कृत सुधर्मिनि है ॥

हरिवंश उपासना है तिन है ।

सुभ सम्पति दम्पति जू जिन है ॥२॥

हरिवंश जिरा अस रीति कहै ।

सुकृती जन संगति नित्य रहै ॥

अधु धर्म विरह नहीं तिनके ।

सुभ सम्पति दम्पति जू जिनके ॥३॥

हरिवंश प्रशंसित नित्य रहै ।

रम रीति भिवर्द्धित कृत्य कहै ॥

‘ जू कह कुल कर्म नहीं तिनके ।

सुभ सम्पति दम्पति जू जिनके ॥४॥

हरिवंश सुनाम जू नित्य रहै ।

दास्य याम समान न नैक धरै ॥

विधि और निषेध नहीं तिनके ।

सुभ सम्पति दम्पति जू जिनके ॥५॥

हरिवंश सुधर्म जू नित्य रहै ।

हरिवंश कही सु नही भिसरै ॥

हरिवंश सदा निधि है तिनके ।

सुभ सम्पति दम्पति जू जिनके ॥६॥

હરિવંશ પ્રતાપહિ જનત દે ।

હરિવંશ પ્રબોધ પ્રમાણુત દે ॥

હરિવંશ સુ સર્વસુ દે તિનકે ।

સુખ સમ્પતિ દમ્પતિ જૂ જિનકે ॥૭૭॥

હરિવંશ બિચાર પદે જુ ગદે ।

હરિવંશ ધગ્મ ધુરા નિનકે ॥

હરિવંશ નિવાદક દે તિનકે ।

સુખ સમ્પતિ દમ્પતિ જૂ જિનકે ॥૮૧॥

હરિવંશ રસાયન પીરત દે ।

હરિવંશ કદે સુખ છવત દે ॥

હરિવંશ પતિવ્રત દે તિનકે ।

સુખ સમ્પતિ દમ્પતિ જૂ જિનકે ॥૮૫॥

હરિવંશ ગિગ ગસ રીતિ બનં ।

હરિવંશ કદે હરિવંશ સુનં ॥

હરિવંશ હૃદય વ્રત દે તિનકે ।

સુખ સમ્પતિ દમ્પતિ જૂ જિનકે ॥૮૯॥

હરિવંશ કૃષા હરિવંશ કદે ।

હરિવંશ કદે હરિવંશ કદે ॥

હરિવંશ સુવામ સદા તિનકે ।

સુખ સમ્પતિ દમ્પતિ જૂ જિનકે ॥૯૩॥

હરિવંશ પરાયણ પ્રેમ ભરે ।

હરિવંશ સુ મન્ય જપે મુધરે ॥

હરિવંશ સુ ધ્યાન સદા તિનકે ।

સુખ સમ્પતિ દમ્પતિ જૂ બિનકે ॥૧૨॥  
નિત શ્રીહરિવંશ સુ નામ કહે ૧

નિત રાધિકા સ્થામ પ્રસન્ન રહે ॥  
નિત સાધન ઔર નહીં તિનકે ।

સુખ સમ્પતિ દમ્પતિ જૂ બિનકે ॥૧૩॥  
જમ્ય રાધિકા સ્થામ પ્રસન્ન બયે ।

તમ્ય નિત્ય સમીપ સુ ખેત્ર લયે ॥  
હરિવંશ સમીપ સદા તિનકે ।  
સુખ સમ્પતિ દમ્પતિ જૂ બિનકે ॥૧૪॥

૭ ૭૨૫૫ ૪

નિત નિત શ્રીહરિવંશ નામ ક્ષણ ક્ષણ જુ રહત નર ।  
નિત નિત રહત પ્રસન્ન જહા દમ્પતિ કિશેર વર ॥  
જહા હરિ તહા હરિવંશ જહા હરિવંશ તહા હરિ ।  
ફક શબ્દ હરિવંશ નામ રાખ્યા સમીપ કરિ ॥  
હરિવંશ નામ સુ પ્રસન્ન હરિ હરિ પ્રસન્ન હરિવંશ રતિ ।  
હરિવંશ ચાણુ મેવક જિતે મુનહુ રસિક રમ રીતિ ગતિ ॥૧૫॥

ઇતિ શ્રીહિત ઘર્મિન કૃત્ય વર્ણન પદ પ્રકરણ છી

જમ્ય જમ્ય શ્રીહિતહરિવંશ ૬૬ ॥



# ॥શ્રીહિત રસરોતિ વર્ણન સપ્તમ પ્રકરણ॥૭॥

છન્દ રઠડો । અન્તર્ગત પ્રમ ખ્યા ।

બ્યાસ નન્દન જગત આધાર—

જગમગત યશ સખ જગ વન્દનીય જગ બપ વિહડન ।  
જગ શોભા જગ સમ્પદા જગ જીવન સખ જગ મઠન ॥  
જગ મંગલ જગ ઉદ્ધરન જગ નિધિ જગત પ્રશસ ।  
ચરણ શરણ સેવક સદા સુ જય જય શ્રીહરિવંશ ॥૧॥

જયતિ ધમુના પિમલ વર બાગિ—

શીતલ તગલ તગમિશી રત્ન બદ્ધ નિવિ તટ નિરાજત ।  
પ્રકુલિત વિવિધ સરોજગણ ચક્રવાદિ કુચ હસ ગજત ॥  
કૃદ્ધ વિશદ વન દ્રુમ સધન લતા બરન અતિ ગમ્ય ।  
નિત્ય કેલિ હર્ગિવંશ ક્ષિત સુ બ્રહ્માદિકૈનિ અગમ્ય ॥૨॥

સુધર સુન્દર મુખતિ સર્વદ—

મંતલ સદૃજ સદા સદન મધન કુંજ સુખ પુંજ બરપત ।  
ઝાગસ સગસ મુખન ચપન મજિત ચપન સચુ રમ હમ્પત, ॥  
કેલિ મિશદ આનંદ રસદ ખેલિ બદત નિત યામ ।  
કેલિ નિગમ મગ પગ મુખમ ખેલિ કુમર વર વામ ॥૩॥

ગસિઃ મની રસદ ગમ ગસિ—

રસ સીવા રસ સાગરી ગસ નિકુંજ સુખ પુંજ બરપત ।

ગસ નિધિ મુવિધિ રસસ રસ રેખ રીતિ રસ પ્રીતિ હરપત ॥  
 ગસ મૂરતિ સૂરતિ સરસ રસ બિલસનિ રસ ગંગ ॥  
 ગસ પ્રવાહ સરિતા મગસ રતિ ગસ લહરિ તંગ ॥૪॥

સ્થામ સુન્દર કુગમિ બનમાલ—

કિરગ બોગ ભુજદંડ વર કમ્બુ ઇંદ મણિમણી બિરાજત ॥  
 કુચિત કચ મુખ તામગસ મહુ લમ્પટ જનુ મધુપ રાજત ॥  
 શીથ મુકુટ કુંડલ અનાજ મુગલી અધગ ત્રિભંગ ॥  
 દનક કપિલ પટ શોભિઆતિ જનુ ધન દામિનિ સંગ ॥૫॥

મુખમ મુદિતી સહજ શ્રુત—

સહજ મોખા સર્વોગ પ્રતિ મહજ રપ નૃપબાનુનન્દિની ॥  
 સહજનન્દ દાદ મિતી સહજ બિધિનિ વગ ઉદિત અદિતી ॥  
 મહજ કેવિ નિત નિત નળલ સહજ ગંગ મુખ ચૈન ॥  
 સહજ માધુરી અગ પ્રતિ મોખે કહત જતે ન ॥૬॥

બિધિનિ નિર્વત ગસિક ગસ રાસિ—

દમ્પતિ અતિ આનદ વશ પ્રેમ મત નિશક કીડત ॥  
 ચચન કુડવ દર અમ્લુ નયન લોલ ગતિ રગ આડત ॥  
 મટલ પટ ચુટકિન ચટક લટલત લટ મહુ હાસ ॥  
 પટલન પદ કપલત શનદ મટલત ભૂકુટિ વિલાસ ॥૭॥

નવલ નાગનિ નવલ યુગજ—

નન નન વન ધન કીડત નવ નિકુંજ વિલસત સર્વસ ॥

नव नव रति नित नित अद्भुत नयौ नेह नव रंग नयौ रस ॥  
 नव विलास कल हास नव मधु सरस मृदु नैन ।  
 नव किशोर हरिवंशदित सु नवस नवस सुभ नैन ॥८॥

✽ छाप्य ✽

नवस नवस सुभ नैन हेन आयने आय बस ।  
 निगम लोक मर्याद भंगि कीडंत रंग रस ॥  
 सुरत प्रसंग निशंक कृत लोभ लोभ भावत मन ।  
 ललित अंग यखि भंग भाव लज्जित सु कोकमन ॥

अद्भुत विहार हरिवंश दित—

निगमि हाम सेवक गियत ।

विस्तन्ति सुनत भावत रसिक—

सु नित नित लीला रस पियत ॥९॥

धति श्रीहित रमरीत वर्णन सप्तम 'हरि' ॥

नम नम श्रीहितहरिवंश ॥१०॥



॥ अथ श्रीहितधर्म अनन्यटेक प्रकरण ॥ ८ ॥

॥ दादस मवेसा ॥ पदावति ३० मात्रा २ गुरु ॥

धर्म धर्म कोड करहु वेद विधि—

कोड अहु विधि देवतन विचारी ।



કોઉ તીરથ તપ યાન ધ્યાન વૃત્ત—

અરુ કોઉ નિર્ગુણુ અક્ષ ઉપાસી ॥

કોઉ ચમ નિયમ કરત અપની રુચિ—

કોઉ અવતાર કદમ્બ ઉપાસી ।

મન કમ વચન ત્રિશુદ્ધ સકલ મત—

હમ શ્રીહિતહરિવંશ ઉપાસી ॥૧॥

ભતિ પાતિ કુલ કર્મ ધર્મ વૃત્ત—

સંત્રિત હેત અવિઘા નાસી ।

સેવક રીતિ પ્રતીતિ પ્રીતિ હિત—

વિધિ નિષેધ શ્રુંખલા વિનાસી ॥

અબ ભોઈ કહી કરૈ હમ સોઈ—

આશુપ લિયૈ ચલૈ નિજ દાસી ।

મન કમ વચન ત્રિશુદ્ધ સકલ મત—

હમ શ્રીહિતહરિવંશ ઉપાસી ॥૨॥

( સવૈયા સુગત )

ભો હરિવંશ કૌ નામ સુનાવૈ—

તન મન શ્રેણુ તામુ બલિહારી ।

ભો હરિવંશ ઉપાસિક મેવૈ—

સદા સેઈ તાકે ચરણુ વિચારી ॥

ભો હરિવંશ ગિરા યથ ગાવૈ—

સર્વસ્વ દેહુ તામુ પર વારી ।

જો હરિવંશ કૈા ધર્મ સિખાવે—

સોઈ તૌ મેરે પ્રભુ તે પ્રભુ બારી ॥ ૩ ॥

[ ખાલતી છન્દ ]

શ્રીહરિવંશ સુનાદ વિમોહી—

સુનિ ધુનિ નિત્ય તહાં મન દેહૌ ।

શ્રીહરિવંશ સુનન્ત ચત્રી સંગ—

હૌં તિન સખ નિત્ય પ્રતિ જૈહૌ ॥

શ્રીહરિવંશ વિલાસ રાસ રસ—

શ્રીહરિવંશ સંજ અનુભૈહૌ ।

જો હરિ નામ જગત સિરૌમધિ—

વંશ બિના કબહૂં નહિ લેહૌ ॥ ૪ ॥

[ મંદિરા છન્દ ]

પ્રેમી અનન્ય બજન્ન ન હોષ—

જો અન્તરૂપામી બજૈ મન મેં ।

જો બાજિ દેખૌયૌ વસોદા કૌ નન્દન—

તૌ વિશ્વ દિખાય સખૈ તન મેં ॥

શ્રીહરિવંશ સુનાદ વિમોહી—

તે શુદ્ધ સમીપ મિલૌં છન મેં ।

અખ યામેં મિલૌની મિલૌં ન કદ્દ—

જગ ખેલત રાસ સદા જન મેં ॥ ૫ ॥

માલતી છન્દ ।

જો બહુ માન કરે કોણ મેરૈ—

કિયે બહુ માનત નાહિ બઢાર્ધ ।

જો અપમાન કરે કોણ કેંઈ—

કિયે અપમાન નહીં લધુતાર્ધ ॥

શ્રી હરિવંશ ગિરા રસ સાગર—

માઝ મગન્ન સવૈ નિધિ પાર્ધ ।

જો હગ્વિંશ તળા બજા ઓગહિ—

તો મોહિ શ્રીહરિવંશ દુહાર્ધ ॥ ૬ ॥

[ પદ્માવતિ છન્દ ૩૨ માત્રા ૨ ચુર ]

કહી વન કેલિ નિકુંજ નિકુંજનિ —

નવ દલ નૂતન મેજ ગગાર્ધ ।

નાથ ગિર મિ ગિર મિ કહી તબ —

સો ગતિ તૈસીધૌ કેસૈ ભુલાર્ધ ॥

સત્વર ઉઠે મહામધુ પીવત—

માધુરી વાણી મેરે મન બાર્ધ ।

જો હગ્વિંશ તળા બજા ઓગહિ—

તો મોહિ શ્રીહરિવંશ દુહાર્ધ ॥ ૭ ॥

[ માલતી છન્દ ]

બુજ અંશનિ દીન્હે બિલોકિ ગહે -

મુખ ચન્દ કમલ મધુ પાન કરાર્ધ ।

आप बिसेकि हृदय द्वियै मान—

यिमुक सुयार प्रबोध भनार्थ ॥

श्रीहरिवंश भिना यह हेत—

को जनै, दडा, को ददैं समुझार्थ ।

नो हरिवंश तनौ तनौ औरहि—

तौ मोहि श्रीहरिवंश दुखार्थ ॥ ८ ॥

श्रीहरिवंश सुनाइ सुरीति—

सुगान भिसे बन भाधुरी गार्थ ।

श्रीहरिवंश भयन्न रयन्न—

सु नित्य किशोर किशोरी लडार्थ ॥

श्रीहरिवंश सिंग रस रीति—

सु चित प्रतीति न आन सुझार्थ ।

नो हरिवंश तनौ भनौ औरहि—

तौ मोहि श्रीहरिवंश दुखार्थ ॥ ९ ॥

श्रीहरिवंश को नाम सु सर्मसु—

जनि सु गण्यौ भैं चित समार्थ ।

श्रीहरिवंश के नाम प्रताप को—

साव लखौ सु कलौ नहिं नार्थ ॥

श्रीहरिवंश कृपा ते त्रिशुद्ध के—

सांख्यी यहै गु मेरे मन नार्थ ।

नो हरिवंश तनौ भनौ औरहि—

तौ मोहि श्रीहरिवंश दुखार्थ ॥ १० ॥

દેખે જુ મેં અવતાર મળે બનિ—

તહા તહા મન તૈસા ન બાઈ ।

ગોકુલનાથ મદા વજ વૈભવ—

લીના અનેક ન ચિત ખટાર્ધ ॥

પ્રાદિ ગીતિ પ્રતિતિ બૈધૈ મન—

મેહિ સમ હરિવશ બજાર્ધ ।

ને દગ્ગિવંશ તગૈ બગૈ ઔગદિ—

તૈ મોદિ શ્રીદગ્ગિવંશ દુહાર્ધ ॥ ૧૧ ॥

નામ અગદ દરે અધપુજ—

જગત હૈ હરિ નામ બડાર્ધ ।

સો દગ્ગિવશ સમેત મૈપૂજ—

પ્રેમી અનન્યનિ કૈ મુખદાર્ધ ॥

શ્રીદગ્ગિવશ દહંત મુનંત—

દાષુ દાષુ દાસ વથા નહિ બનર્ધ ।

ને દગ્ગિવશ તગૈ બગૈ ઔગદિ—

તૈ મોદિ શ્રીદગ્ગિવંશ દુહાર્ધ ॥ ૧૨ ॥



અધ્યય ।

શ્રીદગ્ગિવંશ મુખાણ મુમન દગ્ગિવંશ અનિન્તૈ ।

શ્રીદગ્ગિવંશ મુચિત મિત દગ્ગિવંશ અનિન્તૈ ॥

શ્રીહરિવંશ સુ બુદ્ધિ બરણ હરિવંશ નામ જસ ।

શ્રીહરિવંશ પ્રકાશ વચન હરિવંશ ગિરારસ ॥

શ્રીહરિવંશ નામ બિસરે ન કાણુ શ્રીહરિવંશ સહાય બલ ।

હરિવંશ ચરણ સેવક સદા સુ રાપથ કરી હરિવંશ બલ ॥૧૦॥

ઇતિ શ્રીહિતધર્મ અનન્ય ટેક રાપથ વર્ણન નામ અષ્ટમપદરણુ કરી

જમ જમ શ્રીહિતહરિવંશ ॥૭॥



## શ્રીહિતઅકૃપા શ્રીહિતકૃપા નવમ પ્રકરણ ।૯।

શ્રીહિતઅકૃપા લક્ષણ વર્ણન—સોરઠા ૧૦ ।

સખ જગ દેખ્યો આહિ, કાહિ કદો હરિ ભક્તિ બિનુ ।

પ્રીતિ ઠહો નહિ આહિ, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૧॥

ગુપ્ત પ્રીતિ કો ભંગ, સંગ પ્રચુર અતિ દેખિયત ।

નાહિન કપજત રંગ, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૨॥

મુખ પરણત રસ રીતિ, પ્રીતિ ચિત નહિ આવઈ ।

આહત મંજ જગ કીર્તિ, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૩॥

ગાવત ગીત રસાલ, બાલ તિલક શોભિત ધના ।

બિનુ પ્રીતિહિ બેહાલ, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૪॥

નાચત અતિહિ રસાલ, તાલ ન શોભિત પ્રીતિ બિનુ ।

જન બીધે જંગલ, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૫॥

માનત અપનો ભાગ, ગગ કરત અનુગમ બિનુ ।  
 દીખત સકલ અભાગ શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૬૩॥  
 પદત જુ વેદ પુરાણુ, દાન ન શોભિત પ્રીતિ બિનુ ।  
 ખીણે અતિ અભિમાન, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૬૪॥  
 દરશન ભક્ત અનૂપ રૂપ, ન શોભિત પ્રીતિ બિનુ ।  
 ભરમ ભટકત જૂપ, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૬૫॥  
 સુંદર પરમ પ્રીતુ લીન ન શોભિત પ્રીતિ વિનુ ।  
 તે સખ દીખત દીન, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૬૬॥  
 ગુણુ માની સમાગ, ઔર સકલ ગુણુ પ્રીતિ વિનુ ।  
 બહુત ધરત શિર બાર, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૬૭॥  
 ॥ ઇતિ શ્રીહિત અકૃપા લક્ષણુ સ્વરૂપ વર્ણન સોરઠા ॥૧૦૮॥



અથ શ્રીહિતકૃપા સ્વરૂપ, લક્ષણુ વર્ણન સોરઠા ૧૦ ॥

મુખ વરણુત હરિવંશ, ચિત નામ હરિવંશ ગતિ ।  
 મન સુખિરણુ હરિવંશ, યદ જુ કૃપા હરિવંશ કી ॥૧॥  
 સખ જીવનિ મા પ્રીતિ, રીતિ નિબાહત આપની ।  
 અવણુ કથન પરતીતિ, યદ જુ કૃપા હરિવંશ કી ॥૨॥  
 શત્રુ મિત્ર સખ જાનિ, આનિ માન અપમાન સમ ।  
 કૃપ મુખ લાભ ન હાનિ, યદ જુ કૃપા હરિવંશ કી ॥૩॥

નિત ધક ધર્મિન મંગ, રંગ બદત નિત નિત સરસ ।

નિત નિત પ્રેમ અભંગ, યહ જી કૃપા હરિવંશ કી ॥૪॥

નિરખત નિત્ય બિહાર, પ્રસન્નિત તન રોમાવલી ।

આનંદ નયન સુદાર, યહ જી કૃપા હરિવંશ કી ॥૫॥

ક્ષણ ક્ષણ રુદન કરંત, ક્ષણ આવત આનંદ બર ।

ક્ષણ ક્ષણ હરહર હસંત, યહ જી કૃપા હરિવંશ કી ॥૬॥

ક્ષણ ક્ષણ બિહગત સંગ, ક્ષણ ક્ષણ નિરખત પ્રેમ બરિ ।

ક્ષણ યશ કલત અભંગ, યહ જી કૃપા હરિવંશ કી ॥૭॥

નિરખત નિત્ય કિશોર, નિત્ય નિત્ય નવ નવ સુરતિ ।

નિત નિરખત છવિ ભોર, યહ જી કૃપા હરિવંશ કી ॥૮॥

વૃષ્ટિ ન માનત નૈન, કુંજ રંધ્ર અવશેષિ તન ।

યહ સુખ કલત બૈન, યહ જી કૃપા હરિવંશ કી ॥૯॥

કલ્પ કલ્પ બક, ભાગ, નિત નિત રતિ હરિવંશ હિત ।

નિત વર્દિત અનુરાગ, યહ જી કૃપા હરિવંશ કી ॥૧૦॥

✽ અધ્યય ✽

નિત વર્દિત અનુરાગ ભાગ અપના હરિ માનત ।

નિત્ય નિત્ય નવકેલિ નિરખિ નૈનનિ સચ્ચ માનત ॥

નિત નિત શ્રીહરિવંશ નામ નવ નવ રતિ માનત ।

નિત નિત શ્રીહરિવંશ કલત શ્રોષ સોષ શિર માનત ॥



આપુનો ભાગ આપુન પ્રગટ કહત જુ શ્રીહરિવંશ વલ ।

હરિવંશ બરોસે બળે નિહર--

સુ નિત ગર્જત હરિવંશ વલ ॥૧૧॥

ઇતિ શ્રીહિતકૃપા અકૃપા અન્યઅતિરેક વર્ણન નામ

નવમ પ્રકરણુ કી જય જય શ્રીહિતહરિવંશ ॥૧૨॥



## ॥ અથ શ્રીહિત ભક્ત ભજન દશમ પ્રકરણ ॥ ૧૦ ॥

( વાહસિ કુંડલિયા ) ( પ્રથમ સિદ્ધાન્ત કી ૧૧ )

શ્રીહરિવંશ સુ ધર્મ દહ, અરુ સમુજત નિજુ રીતિ ।

તિનકૌ હૈ સેવક સદા સુ મન કમ વચન પ્રતીતિ ॥

મન કમ વચન પ્રતીતિ પ્રીતિ દિન ચરણ પખારૌ ।

નિત પ્રતિ જુઠન ખાઈ વરણુ બેદહિ ન વિચારૌ ॥

તિનકી સંગતિ રહત જાતિ કુલ મદ સખ નંશહિ ।

સંતત સેવક સદા ભજત જે શ્રીહરિવંશહિ ॥૧॥

સખ અનન્ય સાચે સુબિધિ સજકૌ હૈ નિજુ દાસ ।

સુમિરણુ નામ પવિત્ર અતિ દરશ પરસ અધ નાસ ॥

દરશ પરસ અધ નાસ બાસ નિજુ સંજ કરૌ દિન ।

તિન સુખ હરિ વચ સુનત શ્રવણુ માનૌ ન તૃપ્તિ છિન ॥

કલિ અબદ વરણુત સંકસ કલિ કામાદિક દંડ વખ ।

સેવક ચરણુ સદા રહૈ સુબિધિ સાચે અનન્ય સખ ॥૨॥

રાધાવલ્લભ ભજત ભજિ, ભલી ભલી સખ હોય ।  
 રસિક અનન્ય સમ્પતિ ભજિ, ભલી ભલી સખ હોય ॥  
 ભલી ભલી તખ હોય જખહિ હરિવંશ ચરણ રતિ ।  
 ભલી ભલી તખ હોય રચિત રસરીતિ સદા માતે ॥  
 ભલી ભલી સખ હોય ભક્તિ મુરુ રીતિ અગાધા ।  
 ભલી ભલી સખ હોય ભજત ભજિ શ્રીહરિ રાધા ॥૩૥॥

રાધાવલ્લભ ભજત ભજિ, ભલી ભલી સખ હોય ।  
 અશુભ અનર્ભણિ સંગ જન, બિમુખ તજ્યે સખ હોય ॥  
 બિમુખ તજ્યે સખ હોય ગૂઢ બોધત સંયુ માનત ।  
 હોય કરત નિઃસંક રંક કરિ સંતાન જનત ॥  
 અભિમાની ગર્વિષ્ઠ લોભ મદ મત અગાધા ।  
 દુઃખ પરિહરે દુરિ ભજત ભજિ શ્રીહરિ રાધા ॥૪૥॥

રાધાવલ્લભ ભજત ભજિ, ભલી ભલી સખ હોય ।  
 જિતે વિનાયક શુભ અશુભ, વિધન કરે નહિ હોય ॥  
 વિધન કરે નહિ હોય કરે કલિ કષ્ટ કાલ ભય ।  
 હરે સકલ સંતાપ હરપિ હરિ નામ જપત જય ॥  
 શ્રીકૃત્તાવન નિત્ય કેલિ કલ કરત અગાધા ।  
 હિત હરિવંશ કિશોર ભજત ભજ શ્રીહરિ રાધા ॥૫૥॥

રાધાવલ્લભ ભજત ભજિ, ભલી ભલી સખ હોય ।  
 ત્રિવિધિ તાપ નાશહિ સકલ, સખ મુખ સમ્પતિ હોય ॥

મળ મુખ સમ્પતિ હોય હોય હગિવંશ ચગ્ધુ રતિ ।  
 હોય વિષય વિષ નાશ હોય વૃન્દાવન બસ ગતિ ॥  
 હોય સુદૃઢ સત્સંગ હોય ગસ રીતિ અગાધા ।  
 દોય સુચર જગ પ્રગટ દોય પદ પ્રીતિ સુ રાધા ॥૬॥  
 ગાગવત્યમ ભજત ભજિ, ભવી ભવી મમ હોય ।  
 ભીઝ મિટૈ ભટ ચમન છી, ભય બ જન હરિ સોય ॥  
 ભય ભંજન હગિ મોય ભગ્ન બૃથૌ ભટકત દતિ ।  
 ભગવત ભક્તિ વિચાર વેદ ભાગવત પ્રીતિ ગતિ ॥  
 ભક્ત ચગ્ધુ ધગિ ભાવ તગત ભવસિન્ધુ અગાધા ।  
 હિત હગિવંશ પ્રથમ ભજત ભજિ શ્રીહગિ રાધા ॥૭॥  
 ગાગવત્યમ ભજત ભજિ ભવી ભવી સખ હોય ।  
 અન્ય દેવ મેલી સદન, ચલત પુંછ સી ખોય ॥  
 ચલત પુંછ મી ખોય, રોય ઝપિ લોસ ગૈવાવતિ ।  
 મોય હપત સખ ઈન જોય દપિ સખ જુ નચાવતિ ॥  
 ભોય વિષમ વિઠ વિષય પ્રમ્લ સત્પુરુ નહિ લાધા ।  
 ધોય મદન દયિ દયુર દોઝ ભજિ શ્રીદરિ ગાધા ॥૮॥  
 ગાગવત્યમવાવ મિનુ જીવન જનમ અદત્ય ।  
 ભાધા મમ કુવ દર્મ કૃન, છુઠ ન લાગે દત્ય ॥  
 છુઠ ન લાગે દત્ય સત્ય સમગ્ય ન મિથૌ તન ।  
 માય ધુનવ દરિ વિમુખ મંગ ચમપંચ ચલત જમ ॥

માથે વિભવ મુણુ ગાન કૃત્ય ગણ અવણુ અમીધા ।  
 નાથે અનાથનિ હિત સમર્થે મોહન શ્રીરાધા ॥૮॥  
 કર્મકે કર્મનિ સસ્ય નિત, ઓચત શીશ ધુનંત ।  
 શ્રીહરિવંશ જુ ઉદરી, સોધ મ્મ રીતિ મુનંત ॥  
 સોધ મ્મ રીતિ મુનંત અનંત અનમંહન કંઠ સખ ।  
 જન જળ નિયનિ વિચાર સાગ માનત મન મન તખ ॥  
 ક્ષણ ક્ષણ લોહુપ ચિત સમર્થે છોડત તારં શક ।  
 કંઠ ન સંત સમાજ નિતે અભિમાની કર્મક ॥૧૦॥

હિત હરિન શ પ્રશ મ મન, નિત સેવન વિગ્રામ ।  
 ચિત નિષેધ નિધિ મુધિ નહીં વિદુ સચિત નિધિ નામ ॥  
 વિદુ સચિત નિધિ નામ કામ મુખિઅ દાસ તન ।  
 ચામ ઘટી ન વિશ્વમ્ જામ કૃત કંઠ નિકટ જન ॥  
 ગ્રામ પથ આરણ્ય દામ દંઢ ગ્રેમ અચિત નિત ।  
 તા મતિ ગત મુખ્ય ગસિ વામ દશ નવહિસોર હિત ॥૧૧॥

( કુંડલિયા મ્મ કી ૧૧ )

શ્રીગદા આનન કમલ, હરિ અસિ નિત સેખંત ।  
 નવ નવ ગતિ હરિવ શહિત, વૃન્દાવિધિન ખસંત ॥  
 વૃન્દાવિધિન ખસંત પરસ્પર બાહુ દડ ધરિ ।  
 અનંત અણુ મતિ મત કંઠણિ મગગાન ગર્વ કારિ ॥

કુજ ભવન નિત કેલિ કરત નન નનલ અમાધા ।  
 નાના દામ પ્રસંગ કરત મિલિ ઓહરિ રાધા ॥૧૦॥  
 મુખ મિહસત હરિવ સહિત, રખ રસ રાસિ પ્રવીન ।  
 મુખ સાગર નાગર શુર, પુહુપ શયન આસીન ॥  
 પુહુપ શયન આસીન દીન નિશુ પ્રેમ કેલિ બસ ।  
 ખીન હિરજ વગ પગસિ બીન નવ સુરત રંગ રસ ॥  
 ખીન નિગમિ મદ મદન દીન પાનત શુ ગિલખિ દુખ ।  
 મીનકેતુ નિર્જિજ્જત સુ લીન પ્રિય નિરખિ બિહસિ મુખ ॥૧૩॥  
 ગસ સાગર હરિવ રાહિત, લસત સરિત વર તીર ।  
 યશ જગ વિપદ સુ નિસ્તરિત, મસત શુ કુજ કુગીર ॥  
 બસત શુ કુજ કુગીર બીર નન રંગ લામિનિ ભર ।  
 ચીર નીચ ગૌરાગ સગસ ધન તન પીતામ્બ ॥  
 ધીર બહત દક્ષિણ સમીર કલ કેલિ કરત અસ ।  
 નીરજ શયન સુરચિત રીગ વગ મુગતર ગ રસ ॥૧૮॥  
 પ્રિય વિચિન બન હરપિ મન, જિયયશ વેપુ કનજીત ।  
 તિય તરણી સુનિ વૃષ્ટ ધુનિ, કિમૌ તહા ગમન તુરત ॥  
 કિયૌ તહા ગમન તુગન્ત કન્ત મિલિ મિલસત સર્વસ ।  
 તત ગસમ કલ જુરન્ત રસ નિર્ષ રગ રસ ॥  
 સતત સુર દુન્દુહિ મજત બરપ ત મુમન લિય ।  
 અંત કેલિ જલ જનુકિ મત ધલિરાટ દરિણિ પ્રિય ॥૧૫ ॥

હરિ વિહંગત જન યુગલ જનુ તડિત સુગધુ ધન સ ગ ।  
 કરે દિશયય દન રાવન લલ હરિ અનુરાગ અભંગ ॥  
 હરિ અનુરાગ અભંગ ર ગ અપને સમુપાવત ।  
 અંગ અંગ મજિ સુલટ જંગ મનસિજહિ લગવત ॥  
 પંગુ દૃષ્ટિ લલિતાદિકે ત ક નિગ્ધત ગંધન દરિ ।  
 મ ગ આદિ ગચિ ગિચિય સજત ઉચંગ ધગત હરિ ॥૧૬॥

ગ્યામ સુભગ તન પ્રિપિનધન ધામ પ્રિચિત્ત જનાય ।  
 તામહિ સંગમ યુગલ જન કામ કેલિ મનુષાય ।  
 કામ કેલિ સમુપામ દાવ જન પ્રિયદિ ગિઆવત ।  
 ધાય ધગત કિ અંદે લાન મન કેલિ લગવત ॥  
 ચાવ ચવગ્ગુન ચતુર ગય ગસ ગતિ સંગ્રામહિ ।  
 હાય મુશય જગ પ્રગટ માય મુદ્ધ જનત સ્યામહિ ॥૧૭॥

સરિતા તટ સુગ દુમ નિકટ, અલિતા મુમન મુવામ ।  
 લલિતાદિકે રસનનિ વિવસ, ચલિતા કુજ નિરાસ ॥  
 ચન્નિતા કુજ નિરાસ આસ તવ હિત મગ પરપત ।  
 રાસમયવ દ્રુતમ વિયામ સચિ મિલિ મન હગ્ધત ॥  
 તાસુ વચન મુનિ ચિત કુવાસ ગિગ્હજ દુખ ગલિતા ।  
 દામન્તન કુલ મુવતિ મામ માધવ મુખ સલિતા ॥૧૮॥

પન્પત પુલિન સુલિન ગિગ, કરધત ચિત સ્વર ઘોગ ।  
 હરપત હિત નિત નવલ રસ, વન્પત યુગલ દિશોગ ॥

વર્યન યુગલ દિયોર જોગ નવકુંજ સુરત ગન ।  
 મોર ચન્દ્ર ચપ ચલન રોર કય સિચિવ સુભગ તન ॥  
 ચોર ચિત્ત લલિતાદિ દોર રંધ્રનિ નિવૃત્ત નિગ્મત ।  
 યોગ પ્રીતિ અન્તર ન બોર દમ્પતિ હવિ પગમત ॥૮૦૧૫॥  
 ઝાતુ બસંત બન કલ સુમન, ચિત પ્રસન્ન નવ કુંજ ।  
 દિત દંપતિ ગતિ કલ્ય મતિ, બિતુ સંગિત સુખ પુંજ ॥  
 બિતુ સંગિત સુખ પુંજ પુંજ મધુકર મુનાદ ધુનિ ।  
 મંજ મૃદંગ કિપંગ ધુજ રૂઢ મંજિ તાલ મુનિ ॥  
 મંજુ સુવતિ ગમ ગાન કુંજકન ખગ તલ બિચદિતુ ।  
 ભુજત ગમ રિવાસ કુંજ નવ મચિ વસંત ઝાતુ ॥૮૦૧૬॥  
 દદત દડન ન દડી પડે મદત જુ મનદિ વિચાર ।  
 મદન મદત બાદે ભગતિ મૃદ તન ગુરુ દિન ગાર ॥  
 મૃદ તન ગુરુ દિત ગાગિ હાગિ અપની દર માનન ।  
 ચાગ વેદ સુખૃતિ જુ ચાગ કમ દર્મ ન જાનન ॥  
 હાગિ અનિષા દરિ રિગાગ ચિત દિત દરિવંશદિ ।  
 નાગિ ગસિક હદ બન બિદાર મદિમા ન પડે દદિ ॥૮૦૧૭॥  
 નવક શ્રોતન્વિંશ કે, જગ વાજત ગુણ ગાય ।  
 નિચિ દિન શ્રોતન્વિંશદિન, દગિ ચરખ ચિતલાય ॥  
 દગિ ચરખ ચિતલાય જપન દરિવંશ જિગ વચ ।  
 મનસિ જપસિ ચિત લાય જપન દરિવંશ નામ વચ ॥

श्रीहरिवंश प्रताप नाम नौका निष्ठु जेवक ।

लवसागर सुभ तरत निकट हरिवंश शु सेवक ॥११॥२२॥

इति श्रीदत्तलक्ष्म लक्ष्म नाम दशम प्रकरणं श्री

नम नम श्रीदत्तहरिवंश ॥१०॥



## श्रीहित ध्यान गुण प्रकाश एकादश प्रकरण ११

( भाषान्तर्गत छद्मांश छन्द )

सज्जति हरिवंशचन्द्र, नामोऽप्यार पदित सदा मुमुक्षु-  
रसिद्ध अनन्य प्रधान सत् साधु भंडारी भंडने। नमति ।

नम नम श्रीहरिवंश हित, प्रथम प्रसूति शिर नाथ ।

परम रसद निर्विघ्न ह्वै, जैसै हवित शिराय ॥

मुष्टवि विविज अनिज्जै समय प्रगन्ध जन ।

मुष्टवि विविज अनिज्जै हरि यश हीन मन ॥

आता सोर्ध परम सुगम सुनत चित रति करै ।

सोर्ध रसिद्ध अनन्य विमल यश गिरतदै ॥

सुयश सुनत वरसुत सुभ भायै ।

हीर जंग नारद शुद्ध भायै ॥

श्रीरुन्दावन सज्ज सुभदानी ।

रतन जटित वर भूमि रमानी ॥



વર શ્રુતિ રમાનિ સુખદ દુમ વદતી—

પ્રકૃતિત દક્ષિત વિવિધિ અરણ્યં ।

નિત સગદ બસંત મત મધુદર કુલ —

વડુ પતત્રિ નાદહિ દરણ્યં ॥

નાના દુમ કુંજ મંછ વગ બીધી—

બનગિદાર ગધાગમણ્યં ।

તદા સંતત મદત ગ્યામ ગ્યામા મંગ—

શ્રીકૃષ્ણેય ચરણ ચરણં ॥ ૧ ॥

મદત સદા સખિ સંગે રાસ રંગ રસ રમાસ વિશ્વાગં ।

લીલા લલિત રસાય મમ સ્વર તાલ્યં અરપત સુખ પુંગ્વં ॥

અત્થલિંગ રસ બદત સદા, સુખનિધાન બનબાસિ ।

અદ્ભુત મહિમા મહિ પ્રગટ સુન્દરતા હી રાસિ ॥

સુન્દરતા હી મસિ કનકે દુતિ દેહ રચિ ।

વાગિન બદન પ્રસન્ન લાસિ મૃદુ રંગ શુચિ ॥

શુભ શુકુલ લલાટ પદ સુન્દર દરણ્યં ।

નયન કૃપા અવલોકિ પ્રજ્વલિ આરતિ દરણ્યં ॥

સુન્દર મંત્ર વર્તમ બનમાલં ।

ચાગ અંશ વર બાદુ વિશ્વાલં ॥

દેહ મુનાબિ ચાગ દટ્ટિ દેશં ।

ચાર બનુ શુભ ચરણ મુવેશં ॥

શુભ ચરણ સુવેશ મત્ત મનવર ગતિ—

પર ઉપકાર દેહ ધરણું ।

નિજ ગુણ વિસ્તાર અધાર અવનિ પર—

વાણી વિશદ સુવિસ્તરણું ॥

કરુણામય પરમ પુનીત કૃપાનિધિ—

રસિક અનન્ય સભા ભરણું ।

જય જગ ઉદ્યોત વ્યાસકુલદીપક—

શ્રીહરિવંશ ચરણ સરણું ॥ ૭ ॥

( માહાન્તર્ગતગાહ છન્દ ઉપગીતિ ।

સારાસાર વિવેકી પ્રેમપુંજ અદ્ભુત અનુરામ ।

હરિ ચર રસ મધુ મત્ત સર્વ ત્યજવા દુરત્યજ કુલ કર્મ ॥

કર્મ છાંડિ કર્મક બજે, ગાની ગાન બિહાય ।

પતધારી મત તબિ બજે, અવણાદિક ચિતલાય ॥

અવણાદિક ચિત લાય ચોમ જપ તપ વજે ।

ઔરૈઃ કર્મ સકામ સકલ તબિ સમ બજે ॥

સાધન વિવિધ પ્રયાસ તે સકલ બિહાવહી ।

અવણુ કથન સુભિરણુ સેવન ચિત લાવહી ॥

અર્ચન વંદન અર દાસંતન । સખ્ય ઔર આદમા સમર્પન ।

થે નવ સક્ષણુ ભક્તિ બદાઈ । તબ તિન પ્રેમલક્ષણુ વાર્ધ ॥

પાઈ રસ ભક્તિ ગૂઢ, યુગ યુગ જગ—

દુર્લભ ભવ ઇન્દ્રાદિ વિધિ ।

આગમ અરુ નિગમ પુરાણ અજોચર—

સદજ માધુરી રૂપ નિધિ ॥

અનન્નમ આનન્દકન્દ નિજ સમ્પતિ—

ગુપ્ત સુરીતિ પ્રકટ કરણ ।

જય જગ ઉદોત વ્યાસકુલ દીપક—

શ્રીહરિવંશ ચરણ શરણ ॥ ૩ ॥

( ગાદાન્તર્ગત બિગાદા છન્દ )

પ્રગટિત પ્રેમ પ્રકાશ, સકલજંતુ શિશરી કૃત ચિત્ ।

ગત કલિ તિમિર સમૃદ્ધ, નિર્મલ અક્લંક લલિત જગ ચંદ્ર ।

ત્રિપદ ચન્દ્ર તારા તનય, શીતલ દિગ્ધૃ પ્રકાસિ ।

અમૃત સીંચન મમ હૃદય, મુખમય આનંદ રાસિ ॥

મુખમય આનંદ રાસિ મક્લ જન શેષ કર ।

લમઝિ ને આગે શરણુ તે કરત ન કાલ કર ॥

દિવો દાન તિન અબમ દ્રંદ દુષ્પ સળ ઘટે ।

નિત નિત નવ નવ પ્રેમ, કર્મ બન્ધન કટે ॥

કટે કર્મ બન્ધન સંસારી । સુખ સાગર પૃથિત અતિ બારી ॥

વિધિ નિષેધ શ્રુત્ત્વા છુડાવે । નિઝ આવય બન આનિ બસાવે ॥

આવય જન વસત સંગ પારસ કે—

આવસ કનક સમાન ભય ।  
માગૌ મન મનસિ દાસિ અપની કરિ—

પૃગ્ણ કામ મદા હૃદય' ॥  
સેવક મુખ્ય નામ આસ કૃગિ બગૈ—

અમ નિશ્ચ દાસિ કૃપા કે-લુ' ।  
જય જય કિશોત વ્યાસકુલ દીપક—

શ્રીહરિવંશ ચગ્ણ ચ-લુ' ॥ ૪ ॥

( છાંદસ )

પદ્મત મુનવ મુખ્ય નામ સદા સતસંગતિ પાવૈ ।

અરુ બાદૈ રસ રીતિ વિમલ વાણી મુખ્ય માવૈ ॥  
પ્રેમ લક્ષણા બક્તિ સદા આનંદ હિતકારી ।

શ્રીગદાધુગચગ્ણ પ્રીતિ વ્યગ્નૈ અતિ ભારી ॥

નિજ મહલ દલલ નવકુજ મે—

નિત સેવકે પ્રેવા કૃગ્ય' ।

નિશિદિન સમીપ સતત મૈ—

મુ શ્રીહરિવંશ ચરણ ચરણ' ॥૫॥

ઇતિ શ્રીહિતહરિન શયન્દ્ર ધ્યાન મુખ્યપ્રકાશ પદ્માદ્ય પ્રકરણ પ્રી

જય જય શ્રીહિત હરિવંશ ॥૧૧॥

## અથ શ્રીહિત મંજુલ ગાન દ્વાદશ પ્રકરણ ૧૨ ।

( છન્દ ચાગ ગગ સદા બિલાવલ )

૧૮૫ જય શ્રીદગ્ધિંશ વ્યાસકુલ મંડના ।

મસિદ અનન્યનિ મુખ્ય ગુર જન ભય મંડના ॥

શ્રીકૃષ્ણવન વાસ મસ રસ ભૂમિ જહાં ।

કીડત મ્યામ સ્વામ પુલિન મંજુલ તહાં ॥

પુલિન મંજુલ ધગ્ધ પાવન ત્રિવિધિ તહાં ખાગત જહાં ।

કુજભવન વિચિત્ર શોભા મન નિત મેવત રહે ॥

તહા સંતત વ્યામનન્દન ગહત કમુદ બિહંડના ।

જય જય શ્રીદગ્ધિંશ વ્યાસકુલ મંડના ॥૧૧॥

૧૮૬ જય શ્રીદગ્ધિંશચન્દ્ર ઉદિત સદા ।

દ્વિજકુલ કુમુદ પ્રકાશ વિપુલ સપ્ત સંપદા ॥

પર ઉપહાર વિચાર મુખતિ જગ વિસ્તરી ।

કરભ્યાસિધુ કૃપાવ દાસ ભય સખ દરી ॥

દરી સખ દસિ દાસ હી ભય કૃપારૂપ શુ બપુ પર્વે ॥

કત જે અનગહન નિદેહ સિનદુ પે અગુચ્ય કર્મો ॥

નિગબિમાન નિર્વેગ નિગમ નિષ્કલંક શુ મર્વદા ।

જય જય શ્રીદગ્ધિંશચન્દ્ર ઉદિત સદા ॥૧૨॥

૧૮૭ જય શ્રીદગ્ધિંશ પ્રસસિત સખ કુની ।

માગસાગ વિરેદિત કેવલ બદુશુની ॥

गुप्त रीति आचरण प्रगट सज्ज नम्र हिये ।

‘शान धर्म’ पद कर्म भक्ति छिंदर हिये ॥

१ भक्त ने हित सरल आये ६-५ दोष गुप्त सज्ज धरे ।

हमस कर निम अमय दीने कर्म ज-धन सज्ज करे ॥

परम सुख सुशील दुन्दर पाछि स्वामिनि भज धनी ।

जय जय श्रीहरिवंश प्रशंसित सज्ज हुनी ॥३॥

‘जय जय श्रीहरिवंश’ नाम गुप्त गाव है ।

अम लक्षणा भक्ति सुख, करि पाव है ॥

अरु पाठ, रस रीति प्रीति मित ना टरे ।

अत विषम भंसार हीति नम्र निस्तरे ॥

निस्तरे सज्ज नम्र विमल हीरति साधु संभति ना टरे ।

पास वृन्दाविधि पावै गीराधिका नृ कृपा करे ॥

अनुर सुगलकिसोर सेवक हिन प्रसादकि पाव है ।

जय जय श्रीहरिवंश नाम गुप्त गाव है ॥४॥

धति श्रीहित भंगल मान द्वादश प्रकरण की

जय जय श्रीहितलम्बि ॥१२॥



१ ‘भक्ति हित ने’ यह भी पाठ है । कहीं कहीं ‘भक्त हित ने’  
ऐसा भी पाठ है, पर ने सरलार्थक नहीं मान्य पड़े ।

અપુનર્જિવ સ્વર્ગે જો નાહિ જગજનર—

તો મુખ મર્ત્યે કહો કળ્યતે ॥

કહો કહે પ્રમાણ વચન બિસારત—

પ્રેમી અનન્ય ભયે જળ્ય તૈ ।

તથ શ્રીહરિવંશ કહી જી કૃપા કરિ—

સૌચો પ્રબોધ મુન્યો અમ તૈ ॥૫૥॥

( સવૈયા સુગત )

શ્રીહરિવંશ કહી જી સ્વામ સ્વામા પદ—

કમલ સંગી શિર નાયો ।

તે ન વચન માનત મુન્દ્રોહી—

નિશિ દિન કરત આપનો ભાયો ॥

ધત વ્યવહાર ન કિત પરમારથ—

ખીચ હી ખીચ જી જનમ ગમાયો ।

જો પરમિનિ સૌ પ્રીતિ કરત નહિ—

કહા ભયો ધર્મા જી કહાયો ॥૫૭॥

( સુમુખી ઇન્દ )

કરો શ્રીહરિવંશ ઉપાસિક સંગ—

જી પ્રીતિ તરંગ મુરંગ જલ્લો ।

કરો શ્રીહરિવંશ કી રીતિ સબૈ—

કુલ લોક વિરદ્ધ જી જન્ય સજ્જો ॥

करै श्रीहरिवंश के नाम सों प्रीति—

न नाम प्रताप धरम्भ खलौ ।

न धरम्भ धरम्भ स्वरूप खलौ—

मिसरै निन श्रीहरिवंश खलौ ॥ ७ ॥

( छिरीट छन्द )

श्रीहरिवंश धरम्भ ने जनत—

प्रीति ही अंघि तहाँ मिस जेसत ।

श्रीहरिवंश धरम्भनि माज—

धरम्भ मुहात धरम्भ है जेसत ॥

श्रीहरिवंश धरम्भ कृपा करै—

तासु कृपा रस भादक डोसत ।

श्रीहरिवंश ही वाणी समुद्र कै—

भीन भयो गु अगाध खोजत ॥ ८ ॥

( छन्द दुर्गिदा )

प्रत संयम कर्म सु धर्म निते—

सम्य शुद्ध विरह पिछानत है ।

अपनी अपनी करतूत करै—

रस भादक संके न आवत है ॥

हरिवंश गिरा रस रीति प्रसिद्ध—

प्रतीति प्रगट प्रमाणत है ।

जलि जखि अपने धरम्भनि ही—

ने धरम्भ धरम्भहि जनत है ॥ ९ ॥



કાચે ધરમિન કે સુનૌ છન્દ—

ધરમી ધરંમ મરંમ ન જનત ॥૭॥

જન્યૌ ધરંમ દેખી રસ રીતિ—

જુ નિજુર જોલત બદન પ્રકાશિત ।

પેસે ન વેસે રહે મઝ રૈદવ—

પાછિલી યે જુ કરી નિરભાસિત ॥

હવે હે દેરિ જૈસે કે તેસે હમ—

બારે તૈ આયે સન્યાસિન માનત ।

કાચે ધરમિન કે સુનૌ છન્દ—

ધરમી ધરંમ મરંમ ન જનત ॥૮॥

પક રિસાને સે રખે સે દીખત—

પૂજત રીતિ મજૂકત ધાખત ।

પક રગમજે જોલત ચાલત—

મામિલે હં બપુરે જુ જનાવત ॥

પક બદન કે સાચી સાચી કહે—

ચિત સચાર્ધ હી પકૌ ન આનત ।

કાચે ધરમિન કે સુનૌ છન્દ—

ધરમી ધરંમ મરંમ ન જનત ॥૯॥

પક ધરંમ સમુજઝે બિના ડવ—

સુચાર્ધ કે હવે જુ જગત પુખવત ।

મૂલ ન મન્ન ટટોરા ડી રીતિ—

ધરંભિનિ પૂછત બદન દુરાવત ॥

૯૬ મુલમ્મા સૌ દેત ઉધારિ—

શુ વસ્ત્રમ સૌ વસ્ત્રમ ધરમાણુત ।

કાચે ધરંભિનિ કે સુનૌ છન્દ—

ધરંમી ધરંમ મરંમ ન જનત ॥૨૦॥

૯૭ શુરન સૌ બાદ કરંત—

શુ પડિત માની હૃવે જીભહિ પેંકત ।

૯૮ દરબ્ય કે જોર બરબબદ—

આમન ચાપિ સખા મધિ બૈકત ॥

૯૯ શુ ફેરિ રીતિ ઉપદેશત—

૯૯ બડે હૃવે ન બાત પ્રમાણુત ।

કાચે ધરંભિનિ કે સુનૌ છન્દ—

ધરંમી ધરંમ મરંમ ન જનત ॥૧૧॥

૧૦૦ ધરંમી અનન્ન કહોય—

બડાઈકૌ ગારીયે વાજી સી માંડત ।

૧૦૧ કે બાપ સૌ બાપ કહંત—

દ્રવ્ય કે દાજ ધરંમહિ જાડત ॥

૧૦૨ બોલ બટાણી સે લાગત—

હૃવે શુર માની ન બાત પ્રમાણુત ।

કાચે ધરંભિનિ કે સુનૌ છન્દ—

ધરંમી ધરંમ મરંમ ન જનત ॥૧૨॥

( ૭૫મું ।

પ્રગટત શ્રીહરિવંશ ચરુ દુંદુભિ યજ્ઞમ બલ ।  
 મદન મોહ મદ મલિત નિદરિ નિર્દલિત દંભ દલ ॥  
 ભર્મ ભાગ્ય ભય બીત મર્વ દુર્ગંજન રજ ખંડન ।  
 ભોભ ક્રોધ દલિ કપટ પ્રબલ પાખંડ બિહંડન ॥  
 તૃપ્ત્યા પ્રપંચ મત્સર વ્યસન સર્વ દંડ નિર્બલ કરે ।  
 શુભ અશુભ દુર્ગ વિધ્વંસ તથ જયતિ જયતિ જગ ઉચ્ચરે ॥૧૮

ધૃતિ બી કાચે ધર્મી ધર્મ નામ ચતુર્થ પ્રકરણ કી  
 જય જય શ્રીહિત હરિવંશ ॥૧૪॥



## શ્રીહિત અલમ્બ લાભ પંચદશ પ્રકરણ ॥ ૧૫ ॥

( નારાયણ-૬ )

હરિવંશ નામ દૈ જહા, તહા તહા ઉદ્ધારતા—  
 સદાગતા તહા નહીં, કૃપાશુતા વિશેષિયે ।  
 હર્ષિવંશ નામ લીન જે, અખવશયુ તે સદા—  
 પ્રેમ ચ દંભ આદિ દૈ તહા કહ્ન ન પેખિયે ॥  
 હરિવંશ નામ જે કહ્ન, અનન્ત સુઃખ તે લહે—  
 દુરાધ્ય પ્રેમ હી દયા તહા પ્રત્યક્ષ દેખિયે ।  
 સૌઈ અનન્ય સાધુ, મો જગત્ પૂજિયે, સદા—  
 સુ ધન્ય ધન્ય વિશ્વ મેં જનમ્મ સત્ય લેખિયે ॥૧૫॥

હરિવંશચન્દ્ર જો કહી સુચિત હવે સખે લહી—

પત્ન આરુ માધુરી સુ પ્રેમ સૌ પિઠાનિયે ।

સુને પ્રપત્ર જો બધે અબદ સર્વ કે ગયે—

તિન્દૈ મિલે પ્રસન્ન હવે ન જાતિ બેઠ માનિયે ॥

સુભાગ લાભ પાપ હૈ પ્રસન્નિ દહ લાય દૈ—

સિગય નૈન દેખિ કે અબેદ બુદ્ધિ આનિયે ।

કૃપાલુ હવે સુ ભાખિ હૈ ધરમ્મ પુષ્ટ રાખિ હૈ—

શ્રીવ્યાસનન્દ નામ કૌ અસંખ્ય લાભ જાનિયે ॥૨॥

હરિવંશ નામ સર્વસાગ છાદિ, લેત જલુત બાર—

ગજ વિભવ દેખિ કે નિપય વિપમ્મ બોલ હૌ ।

સુ જો હોત સાધુસંગ આનિ કૃત પ્રીતિભંગ—

માન કોજ ગજસીન કે જુ મુગ્ધ જોનહી ॥

જહા તહો જુ અન્ન ખાત સખી કહત આપ માત—

સકલ હોસ કંદ જાત ગત્રિ સર્વ મોવહી ।

પ્રસિદ્ધ વ્યામનન્દ નામ જાનિ જુઝિ છોડ હી—

પ્રેમાદ તૈ લિયે જિના જનમ્મ જાદ બોવહી ॥૩॥

હરિવંશ નામ હીન, ખીન, દીન દેખિયે સદા—

કહા બપૌ જુઝા હવે પુરાણ વેદ પડ્દહી ।

કહા બપૌ બધે પ્રીણ જાનિ માનિયે જનવ —

લોહ રીઝિ મોભ કૌ જનાય જાત મદ્દહી ॥

કહા બધેા કિયે કરમ્મ મગ દાન દેત દેત—

શ્રલનિ પામ ઉચ્ચ ઉચ્ચ દેવવૌઠ મદ્દહી ।

પરૂયૌ પ્રતાહ કાલ કે કદાચિ છુટિ હે નહી—

શ્રીઆસનન્દ નામ જો પ્રતીતિ સૌ ન રદ્દ (દે) હી ॥૧૪॥

છતિ શ્રીહિત અલખ્યલાજ પ મદદ પ્રકરણ કી

જય જય શ્રીહિતહરિવંશ ॥૧૫॥

## હિત અબોલનૌ સિદ્ધાન્ત પોઢશ પ્રકરણ । ૧૬ ।

( દોહા )

વાણી શ્રીહરિવંશ કી, સુનકુ ગસિક ચિત લાય ।

નિદિં વિધિ બધેા અબોલનૌ, મો સજ્ય કદો સમુઅય ॥૧॥

શ્રીહરિવંશ જુ કયિ કહી, મોર સુનાર્જી ગાય ।

વાણી શ્રીહરિવંશ કી, નિત મન રહી સખાય ॥૨॥

શ્રીહરિવંશ અબોલનૌ, પ્રગટ પ્રેમ રસ સાર ।

અપની બુદ્ધિ ન કંડુ કદો, સો વાણી ઉચ્ચાર ॥૩॥

દિતહરિવંશ જુ કોડહી, દંપતિ રસ સમવસ ।

મહજ સમીપ અબોલનૌ, કરત જુ આનંદ મૂલ ॥૪॥

કાદે દો કારતિ બાગિની, હો જુ દહતિ હંક બાલ ।

નેક બદન સન્મુખ દરો, કશુ કશુ કરી સિરાત ॥૫॥

વે ચિતવત તુવ વદન બિધુ, તૂ નિજ ચરણુ નિહારૂતિ ।  
 વે મ્હુ ચિયુક પ્રશોભણી, વ હર સૌં હરદારૂતિ ॥૬॥  
 બચન અધીન સદા રહે, રૂપ સમુદ્ર અગાધ ।  
 પ્રાણુરમણુ સૌં હવ હરત, બિનુ આગસ અપરાધ ॥૭॥  
 ચિતૈ કૃપા કરિ ભામિની, લીને ઠંઠ લગાય ।  
 ભુખ સાગર પૂરિત બચે, દેખત દિયૌ સિરાય ॥૮॥  
 સેવક શરણુ સદા રહે, અનત નહીં વિશ્રામ ।  
 વાણી શ્રીહરિવંશ હી, કે હરિવંશહિ નામ ॥૯॥  
 ઇતિ શ્રીહિત અબોલનૌ સિદ્ધાન્ત નામ પોડશ પ્રકરણુ હી  
 જમ જમ શ્રીહિતહરિવંશ । ૧૦॥

ઇતિ શ્રીનાદકુલ મંડન હિત પથ અજન રસિક સંભા બૃષણ  
 શ્રીરાધિકાવતાર શ્રીહામોદરણ ( સેવકણ ) કૃત  
 શ્રીમત્ સેવકવાણીણ હી જમ જમ  
 શ્રીહિતહરિવંશ ।



## ॥ ફલસ્તુતિ છપ્પય ॥

( ભાવના પરાયણુ શ્રીકૃષ્ણદાસણ કૃત )

જયતિ જયતિ હરિવંશ નામ રતિ સેવક વાની ।  
 પરમ પ્રીતિ રસ રીતિ રહસિ કલિ પ્રગટ જન્માની ॥  
 પ્રેમ સંપત્તી ધામ સુખદ વિશ્રામ ધરમ્બિનિ ।  
 બહુત ગુણુત ગુણુ ગૂઢ, બક્ષત ભમ બજત હરમ્બિનિ ॥

શ્રીવ્યાસનન્દ અગર્વિંદ ચરણ મદ તાસુ રંગ રસગંધર્થી ।  
શ્રીકૃષ્ણદાસ હિત હેત સૌ જે સેવક વાણી બાચડી ॥૧૥॥

❀ ૭૧૫મ ❀

કે હરિવંશહિ નામ ધામ વૃન્દાવન બસ ગતિ ।  
વાણી શ્રીહરિવંશ સાર સંખ્યા સેવક મતિ ॥  
પઠન શ્રવણ જો કરે પ્રીતિ સૌ સેવક વાની ।  
બવ નિધિ દુસ્તર યદપિ હોય તિહિ ગોપદ પાની ॥  
શ્રી વ્યાસનન્દ પગસાદ લહિ મુગલ ગદસ દરસે જુ હો ।  
બાનિ વૃન્દાવન હિત રૂપ બલિ મુખ ચિલસે બાવુક ધામ ધુર ॥૧૥॥  
મન્ય સિન્ધુ તે સોધિ રંગ કલિ બાહિ બઢાપૌ ।  
પદ હિત કૃપા પ્રમાદ અખી બાજન બરિ પાવૌ ॥  
રસિક મનો મુર મખા આનિ સિનકૌ દરસાવૌ ।  
શ્રી સેવક નિજુ ગિગ મોહિની બાટિ પિરાવૌ ॥  
પઠન શ્રવણ નિશિ દિન કરે દમ્પતિ સુ ધામ મુખ લહે બલિ ।  
વાણી સ્વરૂપ હરિવંશ તન બાનિ વૃન્દાવન હિત રૂપ વલિ । ૩૥॥  
સકલ પ્રપન્ન બિનાશ હોત પદિ સેવક વાણી ।  
શ્રીવૃન્દાવન બાસ હોત પદિ સેવક વાણી ॥  
વ્યાસનન્દ પદ પ્રીતિ હોત પદિ સેવક વાણી ।  
શ્રી રાધાવદન મીત હોત પદિ સેવક વાણી ॥  
પદિયે નિત હિત રંગ સૌ સેવક વાણી પ્રેમ ભર ।  
સેવક વાણી હી કૃપા સેવક વાણી દહે સુ કર ॥૧૬॥

( ૫૬ )

સેવક સેવક વાણી બોલો ।

૩૫ રંગ રસ મદ મેં જાકે કુંજનિ કુંજનિ ડોલો ॥

જાકે પડે, સુનેં અરુ ગાયે ઉપજત પ્રેમ અમેલો ।

રસિક મુકુંદ સુમિર હિત ચિત મેં કપટ કપાટનિ બોલો ॥૫૫॥

✽ છપ્પમ ✽

તૈસેં તૈસેં જો કહે વક વાર હરિવંશ ।

પાયતુ માયો દૈ રહે જિન જિન કરૈ પ્રશંસ ॥

કપટ ૩૫ હરિવંશ કો હાસ હેત ધરિ આવે ।

૫૬ રજ મેં લોટ્યો કરૈ વાર વાર શિર નાવૈ ॥

અસુવનિ ધારા મૌ ચલે જ્યૌ પિયકારી જાનિ ।

સેવક કી રતિ જો ભઈ કૈસેં કરૌ જખાનિ ॥૫૬॥



હરિવંશ નામ કે સુનત હી રોમ રોમ ભરિ આવે ।

હરિવંશ ઉપાસિતે જો મિલે પદરજ તન લપટાવે ॥

હિય સોં રહત લગાય મુઝખ કણુ બોલિ ન આવે ।

અભ્યન્તર અકુશાનિ બુદ્ધિ ગતિ કસેં પાવૈ ॥

શિર નાવૈ ચહુ દિશિ દિરૈ જિન જિન લેત જલાય ।

સેવક કી મતિ જો ભઈ સુ મોયૈ કહી ન જાય ॥૫૭॥





# શ્રીહિત રૂપચન્દ્રો વિજયતે

## શ્રીસેવક-ઉત્કર્ષ

❀ ૭૫૫ ❀

હિતકો લાડ, લડાયો નીકેં હિતકો ધ્યાયો ।  
 હિત બિન ઔર ન ગાયો જરબસ દિય પ્રગટાયો ॥  
 હિતકો મિહી સ્વરૂપ ગિગ મધિ પ્રગટ બતાયો ।  
 હિતકો જાકો પંથ કૃપા કરિ તાહિ જતાયો ॥  
 હિત ધર્મ સર માંચો સકૃત શ્રીમેવક હી સર કો કરે ।  
 હિત ચરણ કમલ મહરંદ કો મધુપ બયો હિત ઉચ્ચરે ॥૧॥

શ્રીહરિવંશ જુ તજો ( તો ) મોહિ હરિવંશ દુહાઈ ।  
 શ્રીહરિવંશ ન બજો ( તો ) મોહિ હરિવંશ દુહાઈ ॥  
 હિત બિન ઔર ન ગાજો ધ્યાજો મહ પ્રણુ કાયો ।  
 હીયો ધનિ, બિન વંશ બિના હરિ નામ ન લીયો ॥  
 હિત ધર્મ વીર બાકો રમિક અલિ બનિત વિજય ડંકો દિયો ॥  
 જિહિ ઉધરિ મિતે હરિવંશ જુ—

અલિ અલિ દિશેરિ અસ કો રિયો ॥૨॥

જહો લો ધામી ધામ સદલ હિત હી કો ગોયો ।  
 હિત હી રમામ રમામ હિતહિં સજ રમિત બતાયો ॥

हित ही विद्या मन्त्र सु हित ही दारण्य दारण ।  
 हित ही परम स्वतन्त्र सु हित ही नो आचारण ॥  
 गिन तत अनन्य औंकार सिद्धा नय श्री सेवक हित धर्म धुर ।  
 हित रमि सु रत्नौ तन मन दिये—  
 अर राम राम रत्नौ हित सु पुर ॥३॥

॥ छति हस्ततुति श्री नय नय श्रीहितहरिवंश ॥



## श्रीआचार्य महाप्रभु श्रीहितहरिवंशचन्द्रजी कृत— श्रीयमुनाष्टक ।

धनधिराजन-दनाग्रामभाजन-दना—  
 नुक्षेपभंधरादिनीं भवान्धिरीशदादिनीम्  
 नगत्त्रये वसस्त्रिनीं वसस्त्रुव.पयस्त्रिनीं—  
 भजे प्रसि-दनन्दिनीं दुर तमेकभंजिनीम् ॥१॥

( ग्लोह है अर्थ ) इवित ।

मन्त्राजन-दन है भेष रयाम गात तामे मन्दन श्री और  
 चित्र रयना रयावै है । मोर्ध अनुक्षेप अंगराग है प्रवाद अहै  
 वसस्त्रिणी श्रीन निक्षेप है मन्त्रावै है ॥ तीन लोक भांज लडे

जस के वितान तन्यौ नुं सभ जल कीड । जुगल करायै है ।  
ता कलिनन्दनी के भजे हिनयन के दुरंत मोह भेद वन  
सम्पति लप्तावै है ॥२॥

रमैरसभगधिका पदाब्जभक्तिसाधिका—  
तदंगगर्भिजग्रभातिपुंनमंजुलाम् ।  
स्वशेषिपातिशोभिता कृतां जनाधिगंजनां—  
भजे कलिनन्दनीं दुरंतमोहभंजिनीम् ॥२॥

( श्लोक के अर्थ ) कवित ।

रमकी है एक सीव सदा गंधारपारीजु ताके अग्निकी  
सुभक्ति के सचावै है । प्रिया अंगगर्भ से विचित्र प्रभाई  
धरे अति मंजु पुंन छवि नव मग्सावै है ॥ अपनी सुशक्ति  
कहि सोभित मग्सा उप अजन के मंजन करत छवि लावै है ।  
ता कलिनन्दनी के भजे हिनयन के दुरंत मोह भेद वन  
सम्पति लप्तावै है ॥२॥

पूजेन्द्रसुराधिकाहृदिप्रपूर्यमाण्यो—  
भंडारसालिप्रपूर्योश्वातितीक्ष्णगेन ।  
भक्तिःसमुच्चयवप्रवादपिष्टमहं—  
भजे दायद-नन्दनीं दुरंतमोहभंजिनीम् ॥३॥

( श्लोक के अर्थ ) कवित ।

नित्य गंधारवल्ली के द्विय भाऊ पुरि देखौ भंडारस-सागर

સદ્દ હી ઉમગાવૈ હૈ । તાહી કો નો યૂગ સો સખનિ કો દૂર તાકો  
અતિ તીવ્ર વેગિ સૌ દગ દરસાવૈ હૈ ॥ ખાહર કો છલ કૈ નવલ  
પ્રગાદ રૂપ અતિ હી અનૂપ પરિકર કો રિઝાવૈ હૈ । તા કલિંદ-  
નન્દિની કો ભજૌ હિતચન્દ નો દુગંત મોહ બેદ વન સમ્પતિ  
લખાવૈ હૈ ॥૩॥

વચિત્રગ્નનબદ્ધસત્તટદ્વયધિગોળવનો—

વિચિત્રહ સમારસાધનન્તપક્ષિસંકુલામ્ ।

વિચિત્રમીનમેખલા કૃતાતિદીનપાલિતા—

ભજે કલિંદ-નન્દિની દુરંતમોહબંજિનીમ્ ॥૪॥

( મોહ કો અર્થ ) હવિત ।

ગતન જટિત મોહી તટનિ કી શોભા અતિ ઉજ્જવલ અનંત  
નો સગમ છવિ છાવૈ હૈ । ચિત્ર ઐ વિચિત્ર હ સ સારસ કો  
ખાદિ લૈ અનેક પછી ડોહૈ તિન્હે મોહ ઉપજાવૈ હૈ ॥ નાના  
ખાતિ મીન તે તૌ કરત દલોલ જામે દીનન કે પાલન કો વિગ્દ  
બદાવૈ હૈ । તા કલિંદ-નન્દિની કો ભજૌ હિતચન્દ નો દુગંત  
મોહાબેદ વન સમ્પતિ લખાવ હ ॥૪॥

વહંતિકા ત્રિયાહરેમુંદા કૃપાસ્વરૂપિણી—

વિશુદ્ધભક્તિમુજવવા પરેગસાત્મિકા વિદુઃ ।

સુધાશ્રુતિત્વલૌકિકી પરેશર્થરૂપિણી—

ભજે કલિંદનન્દિની દુરંતમોહબંજિનીમ્ ॥૫॥

( સ્લોક કૌ અર્થ ) કવિત ।

હરિજી હી શોભા તાકોં બહત સદાહી રહેં અતિ હી કૃપા  
સ્વરૂપ કહત ન આવૈ હૈ । બકિત જો વિશુદ્ધ સોઈ ઉજવલ મહા હૈ  
દ્રેષ રસ હી હી મરતિ જાનિ હિય સુખ પાવૈ હૈ ॥ નિત હી  
અલૌકિક મુધાકૌ અવૈ પ્રેમ દ્રવૈ રવામ કૌ પરન ધરૈં જિવિ દરસાવૈ  
હૈ । તા કલિંદ-નન્દિની કૌ બજૌં હિતચન્દ જો દુરંત મોહ ભેદ વન  
સમ્પતિ લખાવૈ હૈ ॥૫૥॥

મુરે-દ્રષ્ટ-દખન્દિતાં રસાદધિષ્ઠતેવને—

સદોપલબ્ધમાધિવાદ્ભુતૈસ્સંદ્રશોન્મદામ્ ।

અતીવવિહ્વલાભિવચનતરંગદોર્લતાં—

બજે કલિંદનન્દિની દુરંતમોહભંજિનીમ્ ॥૫૬॥

( સ્લોક કૌ અર્થ ) કવિત ।

શિવ વિધિ ઇન્દ્ર જાકોં વન્દન કરત સદા સો તૈ રસ રૂપ  
ધામ હી મેં સચુપાવૈ હૈ । આધવ સોં પાયૌ જો અદ્ભુત વક  
રસ તાસોં સદા ઉન્મત રહ છકનિ છકાવૈ હૈ ॥ અતિસૈ વિહ્વલ  
હૈ ઉજલેં તરંગ માનોં જોંચી જીજ લતાં કરિ મિલન કૌ આવૈ  
હૈ । તા કલિંદ-નન્દિની કૌ બજૌં હિતચન્દ જો દુરંત મોહ ભેદ  
વન સમ્પતિ લખાવૈ હૈ ॥૫૬॥

પ્રકુલપંજરાનનાં લસજ્વોત્પલેશ્વર્યા—

રયાંગનામયુગ્મકસ્તનીમુદારહંસિકામ્ ।

નિતંવચારુરોધસા હરે પ્રિયા રસોજ્જ્વલા—

બન્ને કલિંદનન્દિનીં દુરંતમોહભંજિનીમ્ ॥૬॥

( શ્લોક કો અર્થ ) કવિત્ત ।

પ્રકુલિત કંજ સો વદન માર્તો સોભા દેત ઉત પલ નૈનસો  
કટાક્ષ બરસાવૈ હૈ । ચક્રવા ઝૌ ચક્રવી થો રાજત હૈ કુચ દોગિ  
હંસ બોલોં સોઈ છુદ્ર ધ રિકા બળરૈ હૈ ॥ મુન્દર જો વિવિ તટ  
તેઈ હૈ નિતંવ પિય પ્યારી કૌ ઉજ્જ્વલ રસ રૂપ દરસાવૈ હૈ ।  
તા કલિંદ-નન્દિની કૌ બજૌ હિતચન્દ જો દુરંત મોહ ભેદ વન  
સમ્પતિ લખાવૈ હૈ ॥૭॥

સમસ્તવેદમસ્તકૈરગમ્ય વૈભવા સદા—

મહામુનીન્દ્રનારદાદિભિ સદૈન્ન ભાવિતામ્ ।

અતુલ્યપામરૈરપિ શ્રિતા પુમર્થશા દા—

બન્ને કલિંદનન્દિનીં દુરંતમોહભંજિનીમ્ ॥૮॥

( શ્લોક કો અર્થ ) કવિત્ત ।

શાસ્ત્ર ઝૌ પુરાણ વેદ ઉપનિષદાદિ જાકે વૈભવ કૌ ગાવૈ ભેદ  
હર મેં ન આવૈ હૈ । મહા જો મુનીન્દ્ર ઝૌર નારદાદિ ભક્ત સદા  
હિય માઝ ધ્યાવત પૈ મન ન અધાવૈ હૈ ॥ પામર અતુલ્ય જાકો  
આત્રય કરત માત્ર સજ પુરુષાર્થ હી કે સાર કૌ પાવૈ હૈ ।  
તા કલિંદ નન્દિની કૌ બજૌ હિતચન્દ જો દુરંત મોહ ભેદ વન  
સમ્પતિ લખાવૈ હૈ ॥૯॥

વૃન્દાવન દુતિપત્ર કી, ઉપમા કૈં કહ્યુ નાહિ ।  
 કોટિ કોટિ બૈકુંઠ હ, તેહિ મર્મ કહે ન જાહિ ॥૧૩॥  
 લતા લતા સખ કટપતરુ, પાગ્નિત સખ ફૂલ ।  
 સહજ પદરસ રહત હૈ, ઝલકત યમુના ફૂલ ॥૧૪॥  
 કુંજ કુંજ અતિ પ્રેમ સૌં, કોટિ કોટિ રતિ મૈન ।  
 દિનહિં સૌંભારત રહત હૈ, શ્રી વૃન્દાવન હેન ॥૧૫॥  
 વિપિનરાજ રાજત દિનહિં વરપત આનંદ પુંજ ।  
 લુખ્ય મુગધ પરાગ ગસ, મધુપ દસ્ત મધુ ગુંજ ॥૧૬॥  
 અપરણુ નીલ સિત કમલ કુવ, રહે ફૂલિ બહુરંગ ।  
 વૃન્દાવન પહિરે મનૌ, બહુ વિધિ વસન સુરંગ ॥૧૭॥  
 હિતસૌ ત્રિવિધિ સમીર બહૈ જૈસી રચિ જિહાહ કાલ ।  
 મધુર મધુર કલ કોટિવા, કુંજત મોર મરાલ ॥૧૮॥  
 મડિત યમુના વાગિ યૌ, ગજત પરમ ગસાલ ।  
 અતિ મુદેસ સેાનિત મનૌ, નીલમણિન કી માલ ॥૧૯॥  
 વિપિન ધામ આનન્દ કૈં, અણુગ્ધચિત્રિત તાહિ ।  
 મદન કૈલિ સમ્પતિ સદા, તેહિ દરિ પૂરણુ આહિ ॥૨૦॥  
 દેવી વૃન્દાવિપિન કી વૃન્દા સખી અરૂપ ।  
 જોદિવિધિ રુચિ હોષ ફુગ્ગન કી, તેહિવિધિ કરત અનૂપ ॥૨૧॥  
 ઊન ઊન વન કી છવિ નર્મ, નનવ યુગલ કે હેત ।  
 સમુજિ ખાત સખ જ્ય કી, સખિ વન્દા સુખ દેત ॥૨૨॥

गावत वृन्दा विपिन गुणु, नवल लाडिली लाल ।  
 सुभद सता इल इल इम, अद्भुत परम रसाव ॥२०॥  
 उपमा वृन्दा विपिन ही, कहि धौ दीगै दाहि ।  
 अति अभूत अद्भुत संगस, श्रीभुष वरलुत ताहि ॥२१॥  
 आदि अन्त न्हौ नही, नित्य सुभद जन आहि ।  
 भाया त्रिगुणु प्रपथ ही, पवन न परसत ताहि ॥२२॥  
 वृन्दाविपिन सुहावनौ, रहत एक रस नित ।  
 प्रेम सुग रंगे तहा एक भान है मित ॥२३॥  
 अति स्वरूप सुकुमार तन नव दिसोउ सुभरास ।  
 छरत प्राणु सभ सभिन के, करत मन्द मृदु वास ॥२४॥  
 न्यारै है सभ लोठ ते, वृन्दावन निज जेह ।  
 जेलत लाडिली लाल न्हौ, बीजे सरस सनेह ॥२५॥  
 गौर व्याम तन मन रंगे, प्रेम स्वाद भ्रम सार ।  
 निकसत नहिं तिहि पनतै, अटके सरस विहार ॥२६॥  
 जन है जाग सुहाग कौ, राभ्यौ रस में पागि ।  
 रूप रंग के कूल होइ, प्रीति सता रहि लागि ॥२७॥  
 भदन सुधा के गस भरे, कूलि रहे दिन रैन ।  
 यहुँ दिस भगत न तजत छिन लृग सभिन के नैन ॥२८॥  
 क्षानन मे रहे क्यकि कै, आनन विवि विधु कति ।  
 सहज यकौरी सभिन ही, अजिषा निरञ्जि भिगति ॥२९॥



ઘેસે રસ મેં દિન મગન, નહિ જનનત નિશિ યોર ।  
 વૃન્દાવન મેં પ્રેમ હી, નદી બદ્ધે ચડું ઝોર ॥૩૪॥  
 મહિમા વૃન્દાવિપિન કી, કેસે કે કહિજાય ।  
 ઘેમે રસિક કિશોર દોડ, જામે રહે લુભાય ॥૩૫॥  
 વિપિન અલૌકિક લોક મેં, અતિ અબૂત રસકંદ ।  
 નવ કિશોર ઇંદ વૈસ દ્રુમ, કૂચે રહત સુહંદ ॥૩૫॥  
 પત્ર ફૂલ ફલ લતા પ્રતિ, રહત રસિક પિય આદિ ।  
 નવલકુંવરિ દગ છટા જલ, તિલિ દર સંગે આદિ ॥૩૬॥  
 કુંવરિ ચરણ અંકિત ધરણિ, દેખત જોહિ જોહિ ઠોર ।  
 પ્રિયા ચરણ રજ જાનિ કે, છુકત રસિક સિરમોર ॥૩૭॥  
 વૃન્દાવન ખારે અધિક, યાતે પ્રેમ અપાર ।  
 જામે ખેલત લાડિલી, મર્વસ પ્રાણ અધાર ॥૩૮॥  
 સમૈ મખી સખ સૌજ લૈ, રંગી યુગલ ધ્રુવ રંજ ।  
 સમૈ સમૈ કી જાનિ રચિ, લિયે રહત હૈ સંગ ॥૩૯॥  
 વૃન્દાવન વૈભવ જિતૌ, તિતૌ કલૌ નહિ જત ।  
 દેખત સમ્પતિ વિપિન કી, કમલા હ લલયાત ॥૪૦॥  
 વૃન્દાવન કી લતા સમ, કોટિ કંપતરુ નાહિ ।  
 રજ કી લુલ બેકુંડે નહિ, ઝોર લોક કિહિ માહિ ॥૪૧॥  
 શ્રીપતિ શ્રીમુખ કમલ કલૌ, નારદ સૌ સમુદાય ।  
 વૃન્દાવન રસ સખન તેં, રાખ્યૌ દુરિ દુરાય ॥૪૨॥

अंश दृष्टा अवतार जे, ते सेवत हँ ताहि ।  
 ऐसे वृन्दाविधिनि को, मन जयकै अवगाहि ॥४३॥  
 शिव विधि छिदव सजनि हँ, यह आसा छै यित ।  
 शुक्ल लता छुवै सिर धरै; वृन्दावन रण नित ॥४४॥  
 यतुरानन देख्यौ कष्ट, वृन्दाविधि प्रभाव ।  
 द्रुम द्रुम प्रति अरु लता प्रति औरै जन्मौ जनाव ॥४५॥  
 आप सदित मज यतुर्बुज, सज हा गलौ निहार ।  
 प्रभुता अपनी ब्रुवि गयै, तन मन कै रखौ द्वार ॥४६॥  
 होत यतुर्दश कुरुरध, मंथति सहस्र समेत ।  
 मज तजि जस वृन्दाविधिनि, गसिकन को रसपेत ॥४७॥  
 सकहि तौ वृन्दाविधिनि जसि, छिन छिन आयु जिहात ।  
 ऐसे समय न पाछहै, जनी जनी है धात ॥४८॥  
 छाडि स्वाद सुख होह के, और जगत ही लाज ।  
 मनहि भारि तन हारि कै, वृन्दावन मे गज ॥४९॥  
 वृन्दावन के जगत ही, अन्तर जे करै आनि ।  
 तिहि सग शत्रु न और कोउ, मन जयकै यह जनि ॥५०॥  
 वृन्दावन के पास को, जिनके नहि दुखास ।  
 माता मित्र सुवादि तिय, तजि द्रुव तिनको पास ॥५१॥  
 और दोग के जसत ही, अधिक बजन जे होय ।  
 छडि सग नहि पूजत तजि, वृन्दावन रहै मोय ॥५२॥

વૃન્દાવન મે જો કળહું, બજન કહ્યું નહિ હોય ।  
 રજ તો ઉડિ લાગે તનહિ પીરે યમુના તોય ॥૫૩॥  
 વૃન્દાવિપિન પ્રભાવ મુનિ, અપનો હી ગુણ દેત ।  
 જૈસે બાલક મયિન કૈ, માત જોદ બરિ લેત ॥૫૪॥  
 ઐઝ ઠોઝ જો યતન કરૈ, હોત બજન તજી નાહિ ।  
 વા (યહા) ફિરૈ સ્વાગ્ય આપને બજન ગહે ફિરૈ બાહિ ॥૫૫॥  
 ઐઝ દેશ કે બગ્ત હી, ઘટત બજન કી બાત ।  
 વૃન્દાવન મે સ્વાગ્યૌ, ઉવટિ બજન હવૈ જાત ॥૫૬॥  
 યદ્યપિ સખ ઐગુણુ બરૈ, તદ્યપિ કવ્ત તુવ મ્હિ ।  
 હિતમય વૃન્દાવિપિન કૈ કૈસે દીજૈ પીઠ ॥૫૭॥  
 વૃન્દાવન તૈ અનત હી, જોતિક ઘૌસ બિદાત ।  
 તે દિન લેજે જિન સિખૌ, વૃથા અકારય જાત ॥૫૮॥  
 બજન ગસમયા વિપિન ધગ, સમુજિ બર્સ જો કોય ।  
 પ્રેમ બીજ તેહિ જેત તે, તનહી અકુગ રોય ॥૫૯॥  
 યદ્યપિ ધાવત વિરૈ કૈ, બજન ગહત મિથ પાનિ ।  
 એસે વૃન્દાવિપિન કી, ચરણ ગહી ધ્રુવ આનિ ॥૬૦॥  
 બસિબૌ વૃન્દાવિપિન કૈ, જિહિં તિહિં વિધિ દૃઢ હોય ।  
 નહિ ચૂકે એસૌ સગૌ, જતન દીજિયૈ સોય ॥૬૧॥  
 કહૌ તુ કહૌ વૃન્દાવિપિન, આનિ બનૈ ભવ વાન ।  
 યહૌ બાત જિય સમુજિ કૈ, અપનો છાડિ સમાન ॥૬૨॥

કાણુ ભંશુ તન જાત હૈ, છાડિ વિપૈ અસોલ ।  
 કોડી બદલે લેહિ વૃ, અદ્ભુત રતન અમોલ ॥૧૪૮॥  
 કોટિ કોટિ હીંગ રતન, અરુ મન વિવિધ અનેક ।  
 મિથ્યા લાલચ છાડિ કૈ, ગહિ વૃન્દાવન ઘટ ॥૧૪૯॥  
 નહિં સૌ માતા, પિતા નહિં, મિત્ર, પુત્ર કોઈ નહિં ।  
 ધનમેં જો અન્તર કરૈ, બસત વૃન્દાવન માહિં ॥૧૫૦॥  
 નાતે જોતે જગત કે, તે સમ મિથ્યા માન ।  
 સત્ય નિત્ય આનન્દમય વૃન્દાવન પહિયાન ॥૧૫૧॥  
 બસિઝૈ વૃન્દાવિપિન મેં દેસૌ મન મેં રાખ ।  
 પ્રાણુ તજૌ વન ના તજૌ કહૌ બાત કોઈ લાખ ॥૧૫૨॥  
 અમત દિગ્ત સુનિયત થહૈ, ( શ્રી ) ગધાવધ્વજવાલ ।  
 દેસૈ વૃન્દાવિપિન મે, બસત રહૌ સમ કાલ ॥૧૫૩॥  
 બસિઝૌ વૃન્દાવિપિન કૌ, થહ મન મે ધરિ સેહુ ।  
 કીજૈ દેસૌ નેમ દહ, યા રજ મેં પગૈ દેહ ॥૧૫૪॥  
 ખંડ ખંડ હૃવૈ જાવ તન અંગ અગ સત દ્રેક ।  
 વૃન્દાવન નહિં છાડિયે, છાડિવૌ હૈ બડી ચૂક ॥૧૫૫॥  
 પટાર વૃન્દાવિપિન કી, કહિં ધૌ દીજૈ કાહિ ।  
 જોહિ વન કી ધ્રુવ રેણુ મે, મરિજૌ મંગલ આહિ ॥૧૫૬॥  
 વૃન્દાવન કે મુણુનિ સુનિ, હિત સૌ રજ મે લોટ ।  
 જોહિ સુખ કૌ પૂજત નહીં, મુકિત આહિ સત કોટ ॥૧૫૭॥

મુરપતિ પશુપતિ પ્રજાપતિ, રહે જુલિ તેહિ ઠીર ।  
 વૃન્દાવન વૈભવ દેહો, કૌન જાનિ હૈ ઐર ॥૭૩॥  
 યદ્યપિ રાજત અવનિ પર, સજાતે જો ઐ આદિ ।  
 તાકી સમ દહિયે દહા, શ્રીપતિ વંદત તાહિ ॥૭૪॥  
 વૃન્દાવન વૃન્દાવિપિન, વૃન્દાકાનન ફેન ।  
 છિન છિન રસના ગટો કર, વૃન્દાવન સુખદેન । ૭૫॥  
 વૃન્દાવન આનન્દ ધન, તો તન નસ્વર આદિ ।  
 પશુ જ્યૌ ખોવત વિપૈ રસ, દાહિ ન ચિંતત તાહિ ॥૭૬॥  
 વૃન્દાવન વૃન્દા દહત, દુરિત વૃન્દ દુરિ જાદિ ।  
 નેહ બેસિ રસ ભજન કી, તથા ઉપજૈ અન માહિ ॥૭૭॥  
 વૃન્દાવન શ્રવણનિ મુનહિ, વૃન્દાવન કૌ ગાન ।  
 મન બચકૈ અતિ હેત સૌ, વૃન્દાવન હર આન । ૭૮॥  
 વૃન્દાવન કૌ નામ રટિ, વૃન્દાવન કૌ રેખિ ।  
 વૃન્દાવન સૌ પ્રીતિ કરિ, વૃન્દાવન હર લેખિ ॥૭૯॥  
 વૃન્દાવિપિન પ્રણામ કરિ વૃન્દાવન સુખખાનિ ।  
 જો આહત વિગ્રામ ધ્રુવ, વૃન્દાવન પહિચાનિ ॥૮૦॥  
 તજિ દ વૃન્દાવિપિન કૌ ઐર તીર્થ જો જાત ।  
 જાંડિ, વિમલ ચિંતામણી, કૌડી કૌ લલચાત । ૮૧॥  
 પાવ રતન ચીન્હો નહીં, દીનો કર તેં ડાર ।  
 યહ માયા શ્રીકૃષ્ણ કી, મોહો સખ સંસાર ॥૮૨॥

પ્રગટ જગત મેં જગમગે, વૃન્દાવિપિન અનૂપ ।  
 નૈન અહત દીસત નહીં, યહ માયા કૌ રૂપ ॥૮૩॥  
 વૃન્દાવન કૌ યશ અમલ જિહિ પુરાણ મેં નાહિ ।  
 તાકી બાની પરં જિનિ, કવહૂં શ્રવણ નાહિ ॥૮૪॥  
 વૃન્દાવન કૌ યશ સુનત, જિનકે નાહિ હુલાસ ।  
 તિનકૌ પરસ ન કીજિયૈ, તજિ દ્રુપ તિનકૌ પાસ ॥૮૫॥  
 ભુવન ચતુર્દશ આદિ દૈ, હવૈ હૈ મખકૌ નાશ ।  
 ઇક હત વૃન્દાવિપિન ધન, સુખ કૌ મહજ નિવાસ ॥૮૬॥  
 વૃન્દાવન યહ વિધિ બસૈ, તજિ કૈ સખ અભિમાન ।  
 તૃષ્ટ તૈં નીચૌ આપ કૌ, જનૈ સોઈ જન ॥૮૭॥  
 કામલ ચિત સખસૌ મિલૈ, કબહૂં કહોર ન હોય ।  
 નિરપ્રેક્ષી નિવૈરતા, તાકૌ યતુ ન કોય ॥૮૮॥  
 ફળે તીજે જો જ્યુરૈ, સાક પત્ર કણુ આય ।  
 તાહી સૌ સતોપ કનિ, રહૈ અધિક સુખ પાપ ॥૮૯॥  
 દેહ સ્વાદ છુટિ જાહિ સખ, કંતુ હોય ક્ષીણ શરીર ।  
 પ્રેમ રંગ ઉર મેં બઢૈ, વિહરૈ યમુના તીર ॥૯૦॥  
 યુગલ રૂપ કી ઝલક ઉર, નૈન રહૈ ઝલકાય ।  
 દેસે સુખ કે રંગ મેં, રાખૈ મનહિં રગાય ॥૯૧॥  
 આવૈ છવિ કી ઝલક ઉર, ઝલકૈ નૈનનિ બારિ ।  
 ચિંતત સાવલ ગૌર તન, સંકહિ ન તનહિં સંબારિ । ૯૨॥

જગન પદ, અતિ દીન લટ, દિગ્ધે સરસ અનુરાગ ।  
 બિવસ મધન વન મેં ફિરૈ, ગાવત યુગલ મુદાગ ॥૯૩॥  
 ગમ મેં દેખન ફિરૈ જન, નૈનનિ જન રહૈ આછ ।  
 હૃદ્ હૃદ્ આનંદ રંગ ભગિ પરૈ ધગનિ ચલરાછ ॥૯૪॥  
 હૈસી ગતિ હૃદૈ હૈ હૃદ્, મુખ નિસગત નદિ જૈન ।  
 દેખિ દેખિ વૃન્દાવિપિન, ભરિ ભરિ દારૈ નૈન ॥૯૫॥  
 વૃન્દાવન તરુ તરુ તરૈ, દરૈ નૈન મુખનીર ।  
 ચિતત ફિરૈ આવેમ જમ, સાવલ ગૌર શરીર ॥૯૬॥  
 પગમ સમ્મિદાનંદ ધન, વૃન્દાવિપિન મુદેશ ।  
 જામેં હૃદ્ હોત નદિ માયા દાસ પ્રવેશ ॥૯૭॥  
 શાગદ જો સત કોટિ મિલિ, દલપન દરૈ વિચાર ।  
 વૃન્દાવન મુખ રંગ હૈ હૃદ્ ન પારૈ પાગ ॥૯૮॥  
 વૃન્દાવન આનંદ ધન, સખ તૈ ઉત્તમ આદિ ।  
 મોતે નીચ ન ઔર કોર, દૈનૈ પૈદોં તાદિ ॥૯૯॥  
 મૃત જૈના આદૈશ રૂઝ, ચાલત દૈ મન માહિ ।  
 તાદોં ઘટ કૃપા જિના, ઔર ચગન હૃદ નાદિ ॥૧૦૦॥  
 કુવરિ દિગોરી નામ મૈ, દલપનૈ દૈ ચિન્તમ ।  
 હૃદ્ નિધિ મૃદુ ચિત્ત અતિ, તારૈ જદૈ જિય આસ ॥૧૦૧॥  
 જિનહૈ વૃન્દાવિપિન દૈ, કૃપા તિનદિ હૈ દોષ ।  
 વૃન્દાવન મેં તજદિ તૈ, જન પાવદે મોષ ॥૧૦૨॥

વૃન્દાવન સત રતન હી, માલા ઝુલી બનાય ।  
 બાલ બામ બકે લિખી, સોઈ પહિરૈ આય ॥૧૦૩॥  
 વૃન્દાવન સુખ ગંગા હી, આશા બે ચિત હોય ।  
 નિશિ દિન દંઢ ઘરૈ ગહૈ, છિન નહિ ટારૈ મોય ॥૧૦૪॥  
 વૃન્દાવન સત બે દહૈ, સુનિહૈ નીહી બાતિ ।  
 નિશિ દિન તેહિ ઉર જગમગૈ, વૃન્દાવન હી કાતિ ॥૧૦૫॥  
 વૃન્દાવન કો ચિતવન, યહૈ દીપ ઉર ખાર ।  
 કોટિ જન્મ કે તમ અગરિ, કાટિ કરૈ ઉન્નિયાર ॥૧૦૬॥  
 બસિકૈ વૃન્દાવિપિન મે, પ્રતનૌ બડૌ સયાન ।  
 યુગલ ચરણ કે બજન બિન, નિમિષ ન દીજૈ જન ॥૧૦૭॥  
 સહજ વિરાજત વક રસ, વૃન્દાવન નિજ ધામ ।  
 લલિતાદિક સખિયન સહિત, કીડત સ્થામાસ્થામ ॥૧૦૮॥  
 પ્રેમ સિન્ધુ વૃન્દાવિપિન, બકૌ અન્ત ન આદિ ।  
 જહા ઠસોલત રહત નિત, યુગલકિશોર અનાદિ ॥૧૦૯॥  
 ન્યારૌ ઐહલ લોક તૈ, વૃન્દાવન નિજ લેાન ।  
 તહા ન ઠગહૌ લગત હ, મહા પ્રલય પ્રી પૌન ॥૧૧૦॥  
 મદિમા વૃન્દાવિપિન હી, કહિ ન સકત મમ જીહ ।  
 બકે રમના દૈ સહસ, તિનહૌ કાદૌ લીહ ॥૧૧૧॥  
 શતી મતિ મો પૈ દહા, શોભા નિધિ બનરાજ ।  
 દીઠૌ કૈ કણુ કહત હૌ, આવત નહિ નિય લાજ ॥૧૧૨॥



મતિ પ્રમાણુ આદત દલૌ, સોજી દહત લખત ।  
 સિંધુ અગમ જોદિ પાર નહિ, કેસે સીપ સમાત ॥૧૨૩॥  
 યા મન કે અવલંબ હિત, ઠી-ઠી આદિ ઉપાય ।  
 જુદાવન રસ દહન મેં, મતિ કબહું ઉરઝાય ॥૧૨૪॥  
 મોલક સૈ મુવ છયાસિયા, પૂ-પૌ અમલન માસ ।  
 યદ પ્રબન્ધ પૂરજી ભયૌ, મુનત હોત અથ નાસ ॥૧૨૫॥  
 દોદા જુદાવિષિન કે, ઇકમત પોડ, સ આદિ ।  
 જો આદત ગસ રીતિ રૂપ, છિન છિન મુવ અવગાદિ ॥૧૨૬॥

૩। ઇતિ શ્રીકિતમુવદાસજીકૃત શ્રીજુદાવન સત લીલા કી  
 જય જય શ્રીકિતદરિવંશ ॥



આગ્યશ્વપદનિર્માતા ચાચા શ્રીજુદાવનદાસજી કૃત

## ॥ અથ કરુણા વેલી ॥

વ્યાસમુવન ૧ દગ્ગા અળ દરૌ । મો સિર આરુ ચરન રજ ધરૌ ॥  
 શ્રીકિત રૂપ કૃપા કી આસા । ચાચત ઉર ધગિ બડૌ દુસાસા ॥  
 દગ્ગાનિધિ તુમ નામ દહાવે । મોમી દીન ચગ્ગ ગતિ પાવે ॥  
 પ્રથમ દરૌ દગ્ગા મુગરાજ । જિનકોં ચગ્ગ મદે કી વાજ ॥  
 પુનિ ચે ગમિદ સુદિ નિદારૌ । મો પે દગ્ગા મદર રિચારૌ ॥  
 દગ્ગા રવા સાધુ મુરુ દરિ દે । મો જો તાપ નિમિત્ત મળ દરિ દે ॥  
 શ્રી મુગ સાધુ જનદિ અપનાવે । તેમ જન દરિ કે મન ભાવે ॥

जिनको विरह विहित जग भाई । अपना करे पकरे नवाही ॥  
 हे करुणानिधि करुणा दीजे । अज निज शरण रावरी दीजे ॥  
 ऐसी सदा चित्तारी चित दी । हाँ वर कृपा मनावत नित ही ॥  
 बिनती सुनौ साधु मन गंजन । तुम पद कमल मकल दुष्मगंजन ॥  
 अहो नाथ तुम दीनदयाला । अपने कै शीजे प्रतिभासा ॥  
 मो करनी नहिं चित मेँ धरिये । अपनी कृपा ओर ही धरिये ॥  
 नो भम अमंगुल्य ग्रहण करैये । अपने विरह आप बिसरैये ॥  
 करुणामय यह विरह जडावै । नो हम से दीनन अपनावै ॥  
 अहो कृष्ण यह रति अज पाखी । मुगल केलि हल प्रीति गाखी ॥  
 देहु कृष्ण यह भक्ति सुधन है । तुम दासन के हिय हँ पनहै ॥  
 भक्तन की अभिलाषा दायक । हो राधापति तुम सज सायक ॥  
 देहु देहु करुणा कर पद रति । तुम समान के त्रिभुवन मेँ पति ॥  
 हे मज्जसि सीस दीजे पद । तुम हो प्रभु दया करुणा हँ ॥  
 करै अनुग्रह अपने जन के । जैसे गद आहत वञ्छन के ॥  
 यो हरि देहु भक्ति बगानै । लकी रति हाँ जगत जमानै ॥  
 हे गोकुलविधु वदन दिभावै । नैन अठारन सुधा पिवावै ॥  
 निरभ सखल हूँ हूँ हम भेरे । पावन गुन भाखी मै तेरे ॥  
 अहो अहो त्रिभुवन के स्वामी । तुम हो सज के अन्तर्यामी ॥  
 पात अपनी ओर निहारै । भेरे दोष न चित मेँ धारै ॥  
 मिलन आस ही जेलनि पाछ । ऐसी करै ज्यु अक्षन न नार्छ ॥  
 तुम पद दरशन पुरणु हल है । है सव संगत सौख्य जल है ॥

યહ અભિલાપ રહત મન નિત દૈ । પ્રાણનાથ મમ આગત ચિત દૈ ॥  
 તુમ સમગ્ય દો દીન મદાર્જ । સગ્ય ગદે છી તુમ બડાર્જ ॥  
 હો વગ દુનદ નદ ફુલારે । કળ જેદો દગ આર્ગે પ્યારે ॥  
 નહિ જનને દિદિ છિન દગમોગે । તપત દિયે કમ સુખ બગમોગે ॥  
 કાનન મધન રીચિમન માહી । નિગખો ત્રિવા અ શગવાહી ॥  
 પૂરિત નેહ વચન મુનિ દો જવ । નવણુ લાભ ફલ હગિ ગનિદો તવ ॥  
 હે જુન્દાવનચદ નિનોદી । દે દાન દો ઝોટત ગોદી ॥  
 બાત તુમારી જીવન મેરી । સન વિધિ પૂજો આશ મેરી ॥  
 પરમ દમા કે મહિર તુમ હો । યાતૈ શરણુ ગદત હો હમ હો ॥  
 રાખો નાથ કૃપા કગિ નેરે । અહો કૃપાનિધિ હમ નિત ટેરે ॥  
 તુમ શુણુ ગદર કમલ દલ લોચન । અપને જન કે મન દુખ મોચન ॥  
 હે સુન્દર વગ તુમ દો નગમગ । દીજે અમય દાન સિગ કર વગ ॥  
 મુનો કાન દે વિનતી હો હગિ । તુમહિં સુ ધર્મ બહુત ખાતિ ટર ॥  
 અપને છી મુધિ આપુ ન લીજે । જેસી કહા નિગમતા પ્રીજે ॥  
 ઝોગ બાત નહિ ચિતહિ ત્રિયાગે । કૃપા દષ્ટિ મમ ઝોગ નિહારે ॥  
 યદિ વિધિ નાથ નુમ્હારે જસ હૈ । જો વિસરે તો કહ મમ વસ હૈ ॥  
 અહો કૃષ્ણ જો દાસ કહાવૈ । સા ઝો જગત માહિ દુખ પાવૈ ॥  
 યહ તો બડી ત્રાસ આવત હૈ । કૃપા અવધિ કો તોહિ ભાવત હૈ ॥  
 કવનુ ન કરો દયાલ જેસી અજ । આહત સગ્યુ તુમ્હારી હમ સન ॥  
 અપને જન છી લજ્જા ગહિવૈ । મહુત ન આવત હૈ પ્રણુ કહિવૈ ॥  
 જાકો અનુગ મો ન મુવિ વેહી । વહ ન કહાવૈ નાથ સનેહી ॥

અગણિત દુઃદ દેહ કે પથ હો । તુમ મિન ઠારન કે સમરથ હો ॥  
 વાગ વાર હરિ હમ મહ વાયો । તુમ પદ છાડિ અન્ત નહિ રાયો ॥  
 એસી સુમતિ દેહુ કરણાનિધિ । કહો પ્રાણપતિ મિલિ દો દિદિ વિધિ ॥  
 કળ ઉપજોગી થહ મન માહી । ગખોગે મોહિ ચરણન છાહી ॥  
 મં તો નિશ્ચય થહો કરી હૈ । તુમ ધો જિય મેં કહા ધરી હૈ ॥  
 ખોટો ખરો પરો જો સરની । કહા દેખવે તાહી કરની ॥  
 વિરહ તુમારો વિદિત રસાલા । અમ તો કરે જન પ્રતિપાલા ॥  
 કમ ફેદો ઇન નૈનનિ આગે । કમ થે રૂપ તિહારે પાગે ।  
 હો ગધાપતિ તુમ પદ દરખો । સુયશ રાવરો ગાવત મરસો ॥  
 હે અભિગમ સ્થામ વન વાસી । કવ પરસો વે પદ સુખ ગસી ॥  
 અખ હર આશા અગિર ભઈ હો । તુમ ધો મન મે કહા કઈ હૈ ॥  
 દેહુ ન નાથ અનાહની મોસો । અપની વિથા મુનાઈ તોસો ॥  
 ભલી લગો મો કરિ દો પ્રજપતિ । મેરો તો તુમહી હો હગિ ગતિ ॥  
 અહો જુગમ વિધુ મો દમ જૂપન । કળ સોચોગે પ્રેમ પિયૂષન ॥  
 કોણુક મિથુન સદસ સુખ પેના । બન ઘન અવત નિહારો નૈના ॥  
 નિમૃત કુંજતો નિહસો જાળ હી । મેરી દષ્ટિ પડોચે તમ હી ॥  
 કમ હૈ હૈ વહ મ અલ વિગિવા । આવત મુગમ અ ચ જુજ ધન્યા ॥  
 અમ કટુ કહત પરસ્પર વાની । સો તો પગમ નેહ રસ સાની ॥  
 તાહિ સુનત વદલો ગતિ તન કી । પૂજે અભિવાધા સળ મન કી ॥  
 હે સુખરાસિ દાસ્ય અમ પાલો । હો પ્રભુ તુમ પદ કૃપા મનાજો ॥  
 કાનન કમની કેલિ વિયોકો । નિરખત પવક ધરનિ ગતિ રોકો ॥

જેસા બાનક બન હૈ કળ હૈ । કરુણમય વિનતી સુન અબહૈ ॥  
 અતિ અગિરામ સ્થામ સુખદાતા । તુમ પતિતન પાવન વિખ્યાતા ॥  
 અહો અકિંચન જન મન ભાવન । ભક્તન હર આનન્દ બદાવન ॥  
 દાસન ભીગ સદા લાગત દો । અળ કહુ નાથ દૂર ભાગત દો ॥  
 જો તુમ કહો કર્મ તુમ ખોટ । તો તુમ હગિ કિર્કિ વિધિ દો મોટ ॥  
 કર્મન કે બસ તુમ જન હોઈ । કહો તુમ ભજન કરૈ કયો કોઈ ॥  
 જો તુમ બડે કર્મ હંદરાવૌ । તો તુમ કયો જગ ઇશ કહાવૌ ॥  
 જા કે દડ જગત ચે નાયૈ । સોઈ ધની કહાવૈ સાચૈ ॥  
 જો હરિદુસ કર્મ બસ કહિયે । તો પ્રભુ તુમહિં ન જેસી ચહિયે ॥  
 નીતિ અનીતિ આપડી દેખૌ । હમકા યાકો બડૌ પરેખૌ ॥  
 ઉત્તમ કર્મન કર જો તગિયૌ । તો તુમકો કાહે અનુસગિયૌ ॥  
 ચે હક છાડિ દેહ અમ હગિ દિન । કર્મન લાગ વહાવૌ પ્રભુ જિન ॥  
 માડુ સમા કે તુમ હી મડન । દરૌ કટાક્ષ કર્મ હોય ખડન ॥  
 હો મજનાથ સાથ દેહ મેરૌ । ખંચૌ પકગિ વાહ, દૌ તેરૌ ॥  
 દૌ બુઝૌ સસાર વિપવ વન । ભ્રમતે દિરૌ પાછૌ પીડા તન ॥  
 તુમ સૌ દયાલ દેખ ઊટકારૌ । કહૌ કૃષ્ણ કે પાગ લગાનૌ ॥  
 પદ ગતિ દેખ જો ન કર્મકૌ મન । તો હગિ કહા કહાચે તો જન ॥  
 અપને કૌ સ્વામી જો તજિ હૈ । લેડુ નિચાર કૌન હરિ લજિ દૈ ॥  
 જો અમતિન કી ગતિ ના કગિ હૈ । કહૌ કૃષ્ણ કે ફેટ પમગિ હૈ ॥  
 અળ ચિતવૌ ગંચક સુદષ્ટિ દગ । અનિય જીવન તો જાચ નાથ તગ ॥  
 જાડૌ જાગન કડા કર્મનૌ હૈ । રચ દયા હદય ધરિરૌ હૈ ॥

तुम तौ दीनदयाल प्रभु अति । हो दित रूप अरुण पाछी रति ॥  
 तुम हरि उर आनन्द भरन हो । भक्तान की आरति ब्यु हरन हो ॥  
 अम्ब न गहर कीनै छत होयौ । जेयै दरै कर्म की रेयौ ॥  
 हो दुभ दमन रसिक राधापति । भक्ति दान दीनै उदार भति ॥  
 दाता देत कछु नहि राखै । श्री गुरु संत भागवत भाषै ॥  
 रेनु रेनु यह मेव सदाई । तुम दानी, हो कृपण भदाई ॥  
 मय जग भाहि विहित यह गाथा । जो अनाथ सो किये सनाथा ॥  
 तातैं विरह पुरातन गहिये । तुम सौ बार बार हरि कहिये ॥  
 वृन्दावन छित रूप गवरे । कृष्ण पति हो भक्त हृष्टि सावरे ॥  
 राधारसिक कछावौ नागर । भक्तान की गति हरिदासागर ॥  
 जगन सुनाय वेदी हरना । अम्ब तौ नाथ कृपा दिसि दरेना ॥  
 हो नहि सोक भजन तैं उरौछी । एक जात हो संशय हरौछी ॥  
 विसरौ जिन उगे भगवत । प्रणव वस तन धरौ अनंत ॥  
 जो कौन जगदी सरनी आवै । यद्यपि औगुण्य दंड न पावै ॥  
 अहो शरणागति पावक गिरिधर । अम्ब भो लाल राख सुन्दरवर ॥  
 सती यकी सर अग्नि न जारै । कछो नाथ वर कछा सुदारै ॥  
 आमे हो जल नदी न होई । तौ हरि कछो कौन सुधि सोई ॥  
 प्रकुलित कमल रेष रवि दानै । यह दुभ वाणिज कछा वधानै ॥  
 अन्ध यकारन तैं दुर रहि हो । हो हरि व्यथा कछा वर कहि हो ॥  
 दीपक गन्धिर दरै न तम हो । तौ प्रभु तुम विसरावौ डम हो ॥  
 जो जल हाठ न तरै सुसाई तर वर वैदन देय न होई ॥

સુના પ્રાણપતિ તો દેહ વમ દે । જો પૈ જન મન ધરૂયો વિરમે દે ॥  
 યે પ્રન તર્કે તો અચગ્ગ નાદો । પૈ ન સંભવે પ્રભુ તુમ માંદો ॥  
 અગો કૃપ્યુ અમ કરો ન જેસો । જૈસી તુમ જુ વિચારો તૈસી ॥  
 નૈક સુદિ દો મમ ઓગી । દારજ દોષ બાત વદ ધોરી ॥  
 હે બચીગ મીગ મતિ પન કે । ગ્ગસ સદા આપને જન કે ॥  
 પ્રાદિમાન શગ્ગાગતિ આયો । ત્યામ ન બચિન જુ બૃત્ય દેહાયો ॥  
 સુના દાન દે દાનનવાસી । અમ જિન જગત દરાયો દારી ॥  
 તુમ જુ જ્ઞાન પન ત્રિભુવન ઈમો । અમય દર દમન ધરો મમ સીમો ॥  
 મે વિનતી પ્રભુ દરી ધનેરી । દરી ગચિ દૈની પ્રેમ પહેરી ॥  
 સુનકે નાય ધરી મન માહી । જૈસૈ પરૂયો રદો પદ છાદી ॥  
 તુમ સાવકે દાયકે સખડી મુખ । દેશાંઓ દોલે ન સુન્દર મુખ ॥  
 પાગો વદ પ્રમાદ શોભાધર । પ્રપતિ નન્દન દો ગધાવર ॥

દોહા—શ્રીદગ્ધિવંશ પ્રતાપ તે, વરણી દરણા વેલિ ।

વૃન્દાવન ગધાધની, દરસારો રસ કેલિ ॥

સંવન સે દશ આકગત, ચાર વરણ વપરંત ।

કૃષ્ણદરસ અભિમાય હિત દયી સુનો દરિ સંત ॥

જેક વદી પાયે સુ દિન, બસિ હિત રૂપ વિચાર ।

દરિ ગુર સાધુ કૃપા કરી, રંગ્યો વદ મુખ સાર ॥

દીનજન્મુ દરણા અરધિ બક્ષત વત્સલ વદ નામ ।

વૃન્દાવન હિત લેકે સુધિ, ગિરદ બદૈ જ્યો સ્થામ ॥

ધતિ શ્રીદરણા વેળી સંપૂર્ણ થી જય જય શ્રીહિતદગ્ધિવંશ ॥

॥ નેહી શ્રીહિત નાગરીદાસજી કૃત શ્રીહિતાષ્ટક પ્રારંભ ॥

કરખા છન્દ ॥

રસિક હરિવંશ સર્વંશ શ્રીરાધિકા રાધિકા સર્વંશ હરિવંશ  
વંશી । હરિવંશ ગુરુ શિષ્ય હરિવંશ પ્રેમાવલી હરિવંશ ધન ધર્મ  
રાધા પ્રસંશી ॥ રાધિકા દેહ હરિવંશ મન રાધિકા રાધિકા હરિવંશ  
મમ શ્રુતિવતંશી । રસિક જન મનનિ આભરણ હરિવંશ હિત  
હરિવંશ આભરણ કલ હંસ હંસી ॥૧॥

રસિક હરિવંશ રસલાડિલી લાલ વસ લસત વન અંગ છકે  
રંગ રંગી । શ્રીરાધિકાવલ્લભો વલ્લરી પ્રાણ ધન સુધન નિરખત રહો  
સુરત રંગી ॥ લલિત સખી કુંજ સુખ પુંજ વરપત યુગલ લલિત  
મન ધક તન ચારિ ગૌરાંગી । રૂપ લાવણ્ય અનુરાગ અંગ માધુરી  
કેલિ કલ કલિત તરલિત તરંગી ॥૨॥

રસિક હરિવંશ મન લાડિલી લાલ તન લલિત અનુરાગ વપુ  
કરન લીને । ખામ જુજ લાલ દક્ષિણ જુજ લાડિલી લલિત ગતિ  
ચલત મલ્લકત પ્રવીને ॥ રસદ વૃન્દાવિપિન મોદ મંકરંદ સદ માધુરી  
ખ્યાય પીવત નીને । યુગલ ધક રંગ ચતુરંગ પુલિન રચલી યમુના  
કલ કુંજ રતિ રંગ જીને ॥૩॥

રસિક હરિવંશ મન ધક તન ચારિ હૈ તૌ વેણુ વાણી વિમલ  
મોલ લીની । વાંહો છદ્દો છાંહો કરિ છદ્દો પદરજ સિરધર અખિયાં  
છદ્દો છઝીં છવિ રહોં અધીની ॥ અલ્પ પલ ઝોટ શત દલ્પ વીતત  
બિન્હો દિવ્ય કૈશોર હેદિ દષ્ટિ દીની । નાગરી નવ રંગ નિકુંજ



હિત દૃષ્ય તરતીર છવિ શીર અંગનિ નવીની ॥૪૮॥

રૂપહર લાહિલી લાલ લાવણ્ય હર નેહ હર હરિવંશ વિપિન  
આસક્તિ હર । વય સંધિ મુક વર્ણ્ય ઐન વર્ણ્ય વરણ્યત ધર્મ ન  
તરણ્ય સૈસવ વિભો વિલસે સૌંદર્ય સદ ॥ નયનામૃત મંજરી  
મૃદુલ અસિ રાજ યુગ યુગલ મુક રંગ રંગ પુલિન દાલિદિ નદ ।  
નાગિરી નવ રંગ નિકુંજ હિત દૃષ્ય તરુ પત્ર ફલફલ સર્વાંગ  
ગૌરાગિ પદ ॥૫૦॥

યુગલ રસ સિંધુ સેવે પુલિન રસ સિંધુ કેાં નલિન હરિવંશ  
આનંદ લહરી । લલિત વાણી વિમલ પાર અર વારનાહિ થાલ કહુ  
નાહિ અતિ નિષટ મહરી ॥ અનન્ય જન મીન આધીન હૃદયે  
અનુસરે પ્રેમ અંજન દિયે દૃષ્ટિ હરરી । નાગિરી નવરંગ નિકુંજ  
હિત દૃષ્ય તરુ પલક પલ લલક પરી રૂપ હરરી ॥૫૧॥

રસિક હરિવંશ વર વિમલ કલ દૃષ્ય તરુ પ્રેમ ફલ ફલિત  
અનુગાગ વાની । કેલિ દલ દલિત અતિ લલિત આમોદ વન  
અવણ્ય પુટ પિવત નવ રંગ રાની ॥ રસિક મંડલ વિમલ ઝૂંમિકા  
ઝૂંમિ રહે શ્રીરાધિકાવલ્લભ અમાન દાની । પરમહંસ આધાર રમ  
સાર ધારા અવત બજન વક્રાંત જિન મન સમાની ॥૫૨॥

રસિક રસ સગસ સર હંસ હરિવંશ જી કેલિ મુક્તા યુગત  
મન નયન દીને । પ્રાણુ કે પ્રાણુ ॥ મેરે પ્રાણુ જીવન સુધન દૃષ્ટિ  
પ્રતિ દૃષ્ટિ આલિંગન નનીને ॥ સદલ સુખ ધામ વિશ્રામ વન  
નિલમિ હૃસિ યમુના . કલ ફલ અંગ અરગજન બીને ।

दि य आभरण वसन ललित अँग माधुरी त्रेम पर्यंत अंठनि  
मे खीने ॥८॥

धति श्रीगसिंह यू०।मथि श्रीमद्वित नागरीदासजु कृताष्ट संपूर्णम्

अथ श्रीमद्वित चन्द्रलालज महाराज कृत

गसिंह नामावलीध्वनि लिप्यते ॥

जय जय राधावल्लभ गुरु हरिवंश । गौरीदा राधावल्लभ  
द्वित हरिवंश ॥ छपीला राधावल्लभ प्यारो हरिवंश । रसीला  
राधावल्लभ छवन हरिवंश ॥ श्री वृन्दावन रानी राधानक्षत्र नृपति  
प्रेमश । द्वितके वस यश गस हर धरिये हरिये श्रुति अवतंश ।  
वंशीवट यमुना तट धीर समीर पुलिन सुभ पुन । विहरत रग  
गौरीसे द्वितसे म डय सेवा कुन ॥ ललित विशाखा अपक यित्रा  
तुंगविद्या रंगेरी । छट्टोष्णा सुहेरी सज्जी मणी वृक्ष द्वित सेरी ॥  
श्रीवनचन्द्र श्रीकृष्णचन्द्र श्रीगोपीनाथ श्रीमोहन । नाह रिह परिवार  
रंगीला द्वित से नित छवि जेहन ॥ नरवाहन ध्रुवदास व्यास  
श्रीसेवक नागरीदास । वीर्य मोहन नवल छपीये द्वित यरखुन ही  
आस ॥ द्विदास नाहरमय गोविंद जयमल सुन सुमन ।  
भगमे न हरिव श्याम परमानन्द के द्वित हर प्रान ॥ ग गा यमुना  
हर्मिणी अर भागमनी ये पार्त । द्वित के यरखु शरखु हूँ के छन  
हंपति स पति पाछ ॥ दास अतुल्य हृदयवागी अर प्रेमाध  
हृदय । रर भीनाह हमोहर पुँकरि सुन्दर द्वित छ आन ॥  
हरीदास तुलानार और यशवंत महा भति नागर । रसिकदास

હરિધ્વજ દોડે મે પ્રેમ ભક્તિ કે સાગર ॥ મોહન માધુરીદાસ  
 દારિકાદાસ પરમ અનુરાગી । રમામયાદ વૃંદાવન કુવ દિત સો દંપતિ  
 મે' મતિ પાગી ॥ શ્રીહિત રાણુ બધે અરુ અખ હૈં ફેરફુ જે જન  
 હવે હૈં । પ્રેમ ભક્તિ ઉર ભાવ આર સો વૃન્દાવન નિધિ પૈ હૈં ॥  
 રસિક મંડળી મે' યા તન કો નીકે દંગ લગાવૌ । દંપતિ યશ ગાવૌ  
 હયોવૌ હિત સો રીઝ રિઝાવૌ ॥ દેવન કો દુર્લભ નગદેહી સો તૈ  
 સહજહિ પાઈ । મન બાઈ નિધિ પાઈ મો ક્યો જન જૂઝ વિસરાઈ ॥  
 એક અહંતા મમતા મે હૈ જગ મે' અતિ દુખદાઈ । મે જવ શ્રીજી  
 હી આર લગૈં તજ હોત પરમ સુખદાઈ ॥ માત તાત સુત માર દેદ  
 મે' મત અરુઝૈ મતિમદા । શ્રીહિત કિશોર કો દ્વે અકોર તૂં લખિ  
 શ્રીવૃન્દાવન અન્દા ॥૧ ॥

છતિ શ્રીહિત રસિક નામાવલી સંપૂર્ણ ॥

અથ શ્રીમદ્દિતકુવલમલદિવાકર શ્રીરાધાવલમલાલ કે સર્વોધિકારી  
 શ્રીમદ્ગોસ્વામી અનન્ત શ્રીધુત્ કિશોરીલાલજી મહારાજ કે  
 જન્મોત્સવ કૌમંડલવધાઈ લિખ્યતે ॥ મંડલ ॥

મંડલ શ્રીહરિવંશ નામ શુણુ ગાઘ્યે । પિય પ્યારી કો હેતુ  
 સુતાહિ લકાઘ્યે ॥ વિપિન અલૌકિક ધામ લતા ગૃહ રાજહો ।  
 અંદનિ દ પતિ લસત સુરતિરણુ સાજહો ॥ સાજહો જહા સુરતિ  
 કીડ । શ્રીકિશોરી લાવરી । પ્રેમ વિહંગલ ગાત કમની ઉમંગ હિત  
 હર માલગી ॥ ગંધ મગ હવિ કિરણુ પ્રગી સખિનુ દગ મધિ ડાઘ્યે ।  
 મંડલ શ્રીહરિવંશ નામ શુણુ ગાઘ્યે ॥૧ ॥

જય જય શીહિત વ્યાસ સુવન કરુણા ભરે । રસિક મુકુટ  
 મણિ લાલ અમય પ્રણતનુ કરે ॥ શ્રીરાધાવલ્લભ લાલ સુવસ  
 પ્રથાપ્રયો । પિય પ્યારી ઉપદેશ નિદેશ લખાપ્રયો ॥ લખાપ્રયો હિત  
 કેલિ નિગુપ્તી કુંજ નિમૃત સુહાવની । રસિક જન મન મોદ દાપનિ  
 નવલ રચિ ઉપજાવની ॥ જળ ઘટત નિમ્ન ધર્મ જનૌ દરિ અનુમદ  
 અવતરે । જય જય શીહિત વ્યાસ સુવન કરુણા ભરે ॥૨॥

જય જય શ્રીહરિવંશ વિપિન ચૂડામની । ઉપકારક અવતંશ  
 રસિક જીવન ધની ॥ કોમલ પરમ કૃપાલ સુગલ હિત રંગરી । દુઃ  
 ચિતવન રસભરી મુનિર્મલ અંગરી ॥ અંગ નિર્મલ હૃદય શીતલ  
 અધમ જન કલિ કારણે । ધર્યૌ અદ્ભુત રૂપ ચિત્ર વિવિત શરણુ  
 ઉદ્ધારણે ॥ શ્રીકૃષ્ણારીલાલ હિત વપુ નામ પાવન મુખ્ય બની ।  
 જય જય શ્રીહરિવંશ વિપિન ચૂડામની ॥૩॥

જય જય જનની કૃષ્ણ સદૃશ હિત રસ ભરી । પ્રગટયૌ કુમર  
 અનૂપ લગી આનંદ ઝરી ॥ તિથિ આરો શુદ્ધિ ભાદ્ર મહરત શુભ  
 ધરી । જન્દાવન હિત ધામ રહમ વર્ષો કરી ॥ કરી હિત રસ રહસ  
 વર્ષો નૃત્ય સુવતી જન કરે । મંગલ કુલાહલ અગિર મધિ વાદ્યંત્ર  
 ધ્વનિ હિત હિત ઝરે ॥ પદ્મ નિગમન ઝગ્યા વિપ્ર સુ ચૌક સથિયા  
 શુભ ધરી । જય જય જનની કૃષ્ણ સદૃશ હિત રસ ભરી ॥૪॥

જય જય શ્રીહરિલાલ ભવન ભૂપલુ મહા । પ્રગટે વિજય  
 અરૂપ અનૂપમ છવિ અહા ॥ કોવિદ રસિક રસય હૃદય હિત મિત  
 બહે । મુખ્ય અંબુજ દુઃખ ભૂંગ પિવત રસ ચિત રહે ॥ રહે હિત  
 ચિત ચિત રસ ભર શબ્દ જય જય જોલહી । જનની મનોહરિ  
 જોદ બાલક લખિ મુદિત મન ડોલહી ॥ કીરતિ કુમરિ કે જન્મ

દિન પ્રદેશી પરમ આનંદ લહા । જય જય શ્રીહિતલાલ ભવન  
બૃષણ મહા । પા ।

જય જય શ્રીહિત રૂપ દિશોરી લાલરી । દંપતિ વધુ વક્તવ્ય  
રસિક જન પાલરી ॥ હિત અલિ આરા પાય સુમશ ગમ વિસ્તરે ।  
શરણાગતિ પ્રતિપાલ અભય કર પર ધર્યો ॥ ધર્યો કર પર જાસુ  
કે શિર ગૃધ્રિ દર્શન હી દટી । અલિભાવ બાપુક બહુ દિયે સુખ ભરત  
હિય રવિજા તટી । પાદાબજ પગથત મરસ તન, મન પરત હિત  
છવિ જાલરી । જય જય શ્રીહિત રૂપ દિશોરી લાલરી ॥૬॥

જય જય શ્રીહિતલાલ સુવન નિર્ભય હિયો । શ્રીગદાવલ્લભ  
લાલ લડાયો હિત પિયો ॥ અધિકારી, હિત કોશ, મૃદુલ વચનાવલી ।  
હૈંસત હરત મન મનહુ અરત સુમનાવલી ॥ સુમનાવલી મનુ અરત  
શ્રીહરિવંશ હિત રટના લગી । રહત કુંજન સુખ મને જહા હિત  
અલી ગસ મે પગી ॥ કુગિલ કામી વિષય ગત સહ દાસ પ્રીતમ  
ગહિ હિયો । જય જય શ્રીહરિલાલ સુવન નિર્ભય હિયો । જા ।

( વધાર્ધ )

બધાર્ધ આજ બાજત રંગ જરી । બારો સુદી મહા તિથિ  
આઠે જન્મે શુભગ ધરી ॥ ગાવત વધુ સોહિલે ગયિ રયિ માનહુ  
મેઘ અરી । ધગત સવાસિનિ કલશ સાચિયે નેગિન નેગ અરી ।  
મંગલ મુખી ગતિન સો નિર્તત તાનનિ લેત ખરી । બજત  
મૃદ ગ ધિક્કિટ ધિક્કિટકિટ પરનન કગજ દરી । શુષ્કિયન જીગ દાગ શુભ  
ગાવત બિગ્દનિ મુખ હયરી ॥ વિપ્રનિ ત્રાયા પઢાય વેદ ધ્યનિ નામ  
કરણ વિતરી । શ્રીયુત નામ દિશોરીલાલ હિત વંશી બેલિ ફરી ॥  
દગિહૈં ધર્મ પ્રચુર પુહમી મેં જગ જન રક્ષ દરી । રાધાવલ્લભવાધ

લડેહું ઇષ્ટ સુદૃષ્ટિ કરી ॥ દંપતિ હિત અવતાર દુઃખિક રસિકન  
જાનિ પરી । હિત પ્રીતમ હરિલાલ સુવન મુખ નિરખત પલ  
ન ઠરી ॥૧॥

વિમુખ મુખ જાનિકૈ રસિક મન રાંજિકૈ જયતિ હરિલાલ  
સુત પરમ નિર્મલ હિયૌ । શ્રી રાધિકાચરણ રસ ઇષ્ટ બલ પાયકૈ  
પ્રણુત જન જાન, હૈ અભય જગતૈ કિયૌ ॥ નામ સુદિ મિષ્ટ હરિવંશ  
ઉર ધ્યાત ધર કુંજ કીડ, મગન લગન હિત રસ પિયૌ । જયતિ જમ  
જયતિ શ્રીલાલ કેશોર જૂ નવેલિ હિત ચરણ લખિ પાદ  
જ્યાવત જિયૌ ॥૨॥

સરસ વધાર્થ રસનિધિ માર્ધ । જયતિ કિશોરીલાલ દયાનિધિ  
પ્રકટે સખ મુખદાર્ધ ॥ શ્રી હરિવંશ વંશ કલ્પ દ્રુમ દૂધ્યૌ ફૂલ  
મહાર્ધ । મહાકિ ઉડી સૂદી રસ જમ કી અહા અહા ધ્વનિ રહી જાર્ધ ॥  
ભાદોં શુકલ અહમી પ્રકટે શ્રીરાધા કાન્તિ સવાર્ધ । શ્રી હિત ચરણ  
મહા મંગલ કી કણ્ઠક પ્રસાદી પાર્ધ ॥૩॥

પ્રતિ વધાર્થ સમાપ્તમ્ ॥



અથ શ્રીહિતાવતાર ગોસ્વામી શ્રીકિશોરીલાલાત્મજ  
શ્રીમદ્ ગોસ્વામી અનન્ત શ્રીયુત્ શ્રીહિતરપલાલજી મહારાજ  
શ્રીમન્દિર અધિકારીજી કી જન્મોત્તમ મંગલવધાર્થ ॥

જય જય શ્રીહિત અલિ અંશ પ્રકટ જગ જગમગૈ ।  
શ્રીરાધાવલ્લભ લાલ લડાવત રસ મગૈ ॥ શ્રીરપલાલ દિગ બોલિ  
કુંજ, હિત ચો કહી । પુનિ પ્રકટૌ જગ માહિ સરસતા ના રહી ॥  
પદી આચ્છા પાયકૈ શુભ ધરી શુભ દિન જમ બયૌ । શ્રીહિત

કિશોરીલાલજી કે પ્રકટ મંગલ હૈ ગયો ॥ શ્રીરૂપલાલ મુદાવનૌ  
શ્રીરાધિકા હિત રંગ ગંગૌ । જય જય શ્રીહિત આલિ અંશ પ્રકટ  
જગ જગમગૌ ॥૧॥

જય જય રસે હી ખેલિ કેલિ પ્રિયા લાવ હી । ફૂલી બહુરિ  
બસંત રસિકતા ખ્યાલ હી ॥ મરસ સુગંધ અપાર ગસિક ચિત  
અલિ બનૌ । મડરાવત દિન રૈન સુવશ રસ મુખ બનૌ ॥ શ્રીરૂપલાલ  
રૂપાલ હી બખ પ્રના પુનિ નિસ્તૂત ભઈ । સરસ રસ હૌ મિન્દુ  
ઉમડ પૌ દહિનતા જગ મો ગઈ ॥ જિતે નીરસ દરશ હીન્દૌ  
સરસતા કે દિંગ લગૌ । જય જય શ્રીહિત આલિ અંશ પ્રકટ  
જગ જગમગૌ ॥૨॥

જય જય હિત હૌ રૂપલાલ મન મોહના । સુન્દર સુખદ સુખને  
મસીહી મોહના ॥ ટહલ ખવાસી ગોમ્ય સદાયક બનિકૌ । હિત  
અલિ પગમ પ્રસન્ન બઈનિજ માનિકૌ ॥ જિયૌ આશિષ દેત સજગી  
સખૌ ઝવિ પૌ વલિ ગઈ । લાલ નયનનિ દિયૌ દગરા બાલ દાતી  
હૌ દઈ ॥ મુગલ દીપ્ત નિહાર ખેગહિ કબી કલમપિ સખ ભગૌ । જય  
જય થી હિત આલિ અંશ પ્રકટ જગ જગમગૌ ॥૩॥

જય જય શ્રી રૂપલાલ મુખદૈન રૂપા હૌ દીજિયૌ । શ્રીવૃન્દાવન  
હિત ફેરિ જગત હૌ દીજિયૌ ॥ ખૂડત થા ભવસિંધુ ઉવારૌ જીવ હૌ ।  
દગશાવૌ માધુર્ય સરસ રસ સૌંદર હૌ ॥ આખ પ્રકટે સરસ પરિકર  
ખેગ અખ પ્રકટાઈયૌ । શ્રી રાધિકા વર લાલ કે નવ નિત્ય કોતુક  
ગાઈયૌ ॥ હિત શરણુ કી વિનય નિન નવ ભાવ વૃત્તો હિય જગૌ ।  
જય જય શ્રી હિત આનિ અંશ પ્રકટ જગ જગમગૌ ॥૪॥

## अष्टयाम की सेवा के पद संक्षेप से

( भंगला समय ) राग बैराग ।

प्रथम श्री सेवक पद सिर नाजि ।

हरौ कृपा श्री दामोदर मोधि श्रीहरिवंश अरखु रति पाजि ॥

गुणु गंभीर व्यासनन्दनजु के गुण प्रसाद सुयश रस गाजि ।

नागरीदास के तुमही सदायक रसिक अनन्य वृषति मन भाजि ॥१॥

जयति जगदीश भय जगमगत जगत गुरु-

जगत वंदित सु हरिवंश वानी ।

मधुर कामल सुपद प्रीति आनन्द रस-

प्रेम विस्तारित हरिवंश वानी ॥

रसिक रस भक्त श्रुति सुनत पीठंत रस-

रसन गाथांत हरिवंश वानी ।

कहत हरिवंश हरिवंश हरिवंश हित-

जयत हरिवंश हरिवंश वानी ॥२॥

जयति वृषभानुज कुँवरि राधे ।

सख्यदानन्द धन रसिक शिर मार पर सकल वांछित सदा रहत

साधे ॥ निगम आगम स्मृती गूँडे जहु भाषि जहाँ कहि नहाँ

सकत गुणु गय अभाधे । जय श्रीरूपवास हित पर करहु-करहु

प्रिये देहु वृन्दाविधि नित अवाधे ॥३॥



જય જય જય ગધિકે પદ સંતત અરાધિકે-

ગાધિકે શુક સનક શેષ નારદાદિ સેરી ।

વૃન્દાવન વિષ્ણુલ ધામ ગની નવ નૃપતિ સ્યામ-

અખિલ લોક પારદાદિ લલિતાદિક નેમી ॥

લીલા દર વિરિધિ બાઝ વરપત રમ અમિત ચામ-

કમલ પ્રાય ગુણ પગલ લાલન અલિ ખેરી ।

મુગ વર પદ કંજ આસ વાઝિત દિત કૃષ્ણ દામ-

કુવ ઉદાગ સ્વામિનિ મમ સુન્દર ગુરુ દેરી ॥૪॥

રાધિકા સમ નાગિગી પ્રીત કે નરીન સખી-

રૂપ ગુણ મુહામ બાગ આગરી ન નારિ ।

વરણુ ઓપ નામ બૃમિ દેવલોક હી કુમારિ-

ધ્યારી જુ કે રૌમ જીવર ડારે સખ વારિ ॥

આનંદકન્દ નન્દનંદન જાકે રસ રંગ રચૌ-

અગ બરિ મુધંગ નચે માનત હંસિ હારિ ।

જાકે બલ ગર્વ બરે રસિક વ્યાસ સે ન ડરે-

કર્મ ધર્મ લોક વેદ છાડિ, મુક્તિ ચારિ ॥૫॥

રાધા ધ્યારી કે ચરણાવિંદ શીતલ મુખદાર્ઠ ।

કોટિ ચન્દ મન્દ કરત નખ વિધુ વ્યુન્દાર્ઠ ॥

તાપ સાપ રોગ દોષ દાગણુ દુષ્કારી ।

લાલ મેદ દુષ્ટ દમન કુંજ બવન ચારી ॥

રયામ હૃદય જીત્યુ જિત દૂષણ દિત સંગી ।

દુન્દાવન ધૃગિ ધૃસગ રાસ ગચિત ગંગી ॥

સરથાગત અમય વિગ્દ પવિત પાવન વાને ।

વ્યાસ સે અતિ અવમ આતુર કેા કેા ન સમાને ॥૬॥

વ્યાસનન્દન વ્યાસનન્દન વ્યામનન્દન ગાધયે ।

જિનકો દિત નામ હેત દમ્પતિ રતિ પાપ્રયે ॥

રામ મધ્ય સસિતાદિક પ્રાર્થના જો કીની ।

કરતે તુકુમારી પ્યારી વંશી તળ દીની ॥

મોઈ દસિ પ્રકટ ગપ વંશી વપુ ધારે ।

કુંજ બવન રામ રમન ત્રિભુવન વિભારે ॥

ગોકુપ ગવલ મુ હામ નિકટ વાદ રાજે ।

રિદિત પ્રેમ રામ જન્મ ગસિદન દિત દેજે ॥

તિનકો પિય નામ સહિત મન દિયો શીરાયે ।

સત્ સિત આનન્દ રૂપ નિગમ અગમ સાથે ॥

શ્રી દુન્દાવન ધામ તગનિબ મુ તીગ બારી ।

શ્રીરાધાપતિ રતિ અનન્ય દગ્ત નિત ખગાસી ॥

અદ્ભુત હરિ મુક્ત વંશ બધિત નામ સ્થામા ।

જવ શ્રીરૂપલાલ દિત સિત દ પાયો ત્રિશામા ॥૭॥

( ગામ ગ.મકલી )

પ્રજાપદિ બાવુક બાવ વિચારે ।

મન તન નય કિશોર સહચરિ વપુ દિત સુર કૃપા નિહારે ॥

એક ચરન હિત સૌ સદરાવૈ । એક વચન પરિહાસ સુનાવૈ ॥  
 હૃદિ બેઠે દોઢિ બાલ રંગીલે । વિથુરી અલક સખૈ અંગ ઢીલે ॥  
 ધૂમત અરન નયન અનિયારે । જીવણુ વસન ન જાત સંઘારે ॥  
 ઠહુ અંગન ઠહુ પીઠ રહી રૂવિ । કેમે કહી જાત હૈ સૌ હવિ ॥  
 હાર બાગ મિલકે અરજાને । નિશિ કે ચિન્હ નિરખિ મુસમ્યાને ॥

નિરખિ નિરખિ નિશિ કે ચિન્હન, રેખાંચિત હૃદૈ જાય ॥

માનો અંકુર મૈન કે, ફિર ઉપજે તન માહિ ॥૧૫॥

( મંગલ આરતી )

નિરખિ આરતી મંગલ ભોર । મંગલ સ્યામા સ્યામ કિશોર ॥  
 મંગલ શ્રીજન્મદાનન ધામ । મંગલ કુંજ મહલ અભિરામ ॥  
 મંગલ ધંટા નાદ સુહોત । મંગલ ચાર મણિન હી જોત ॥  
 મંગલ દુંદુભિ ધુન હવિ હાઈ । મંગલ સહચરિ દર્શન આઈ ॥  
 મંગલ વીણા મૃદંગ બજાવૈ । મંગલ તાલ ઝાઝ ઝરલાવૈ ॥  
 મંગલ સખી જૂથ કર જોરૈ । મંગલ ચમર લિયે ચહુ ઝોરૈ ॥  
 મંગલ પુષ્પાવલિ ખરસાઈ । મંગલ જોત સદસ બન હાઈ ॥  
 જય શ્રીરમલાલ હિત હૃદય પ્રકાશ । મંગલ અદ્ભુત યુગલ વિલાસ ॥



( ધૂપ આરતી )

રતન જટિત સિંહાસન બેઠે દોઢ આયકૈ ।

દરબન દિયે દુહન કર સાદર નિઃખત હવિ ચિત આયકૈ ॥

કમહૈં ન્યારે ન્યારે દેખત દખહૈં વદન મિલાયૈં ।  
 અપને રૂપ આપછી મોહિત દહા મુનાજૈં ગાયકૈં ॥  
 દોડી તન સૌરજ યગચિ સુધગ અલિ અગર ઘૂપ કરનાયકૈં ।  
 સુન્દરતા માગર મેં અલિ દમ નિકમત ગોતા ખાયકૈં ॥  
 સુન્દર ભવન સુવાસિત કરકૈં ચૌદી દઈ બિજાયકૈં ।  
 વૃન્દાવન હિત રૂપ પાક રચે જુગલ જિભાવત ચાયકૈં ॥૧૮॥

( નૃગાંગ આરતી )

કગત હૈં બીજી હિય કે બાય સો આરત કરત સબોધ ।  
 ગૌર રચામ પૈ મુદિત ઉતારત આનન જગમગ હોઈ ॥  
 દોડી જો જો પુન પુન ઉચગત ચૈવર દુરાવત દોય ।  
 દોડી પડુપામસિ ખારત ઢોળી વાર પિવત હૈં તોય ॥  
 બાર બાર વાગત જો અપુનપૌ ચિત કો પ્રેમ સમેય ।  
 વૃન્દાવન હિત રૂપ મિધુ દ્રગ અંજુરી સમાત ન સોય ॥૧૯॥

લડૈતા થેઇ થેઇ મુચ બાળૈં ।

પરત નવીં જૂમ માનો મડલ વેર્મ પદ ગાયૈં ॥  
 દગજન ચવત હૈલાવત આરત માનો શોભા સાળૈં ।  
 વૃન્દાવન હિત રૂપ ભરત પ્રીતમ મન અબિનાળૈં ॥૨૦॥

( રાજબોગ ) રાગ સારંગ ।

બોજન કૈ સમયૌ જળ જન્યૌ ।

તથ સખિઅન મણિમય ચૌહી પર પોઠખર બિછયૌ મન માનૌ ॥

ઝારી ધરી ધરી શીતલ જલ કંચન ચાલ ધુળાયે ।

બેલા જન ધરૈ બેલા અજલા નવ લાલ ખુલાયે ॥

ઠપુ ઠપુ બુધણ વસન અસન કૈ સમયૌ જન ઉતારે ।

રતન સુ ચૌહી પહોંચી ધર પદુકા પટ ન્યારે ॥

દૈ આચરન પરોસત વ્યંજન બર્ણૌ કા પૈ જાઈ ।

ચંપકલતા ચતુર સજ વિધિ સૌ કરે ભરે મન લાઈ ॥

પાયસ ખૂરા ચૌર ધૂત પૂરા બરા લેચઈ રાટી ।

ભાત પીત સિત બર કમોદ કૈ કડી પકોડી છોડી ॥

ઘોઆ દાર મુંગ સાથ પુન બરી કુલૌરી ધીની ।

મીઠી કડી મુરખ્યા અમરસં પનૌ સિખરની દીની ॥

ફલા લવંગ કપૂર સુનાસિત પુનિ મેવા મધિ ડારી ।

મિચરી ચૂલી ધૂત કર મિશ્રિત સ્વાદ અધિક રુચિકારી ॥

મઠા રાયતે ભાંતિ ભાતિ કે વિવિધિ સદાને આને ।

પત્ર ફલ ફલ ફલી કંદ તરકારી ડારી જાને ॥

સાલન બહુત કરે બેસન કે ઝાલ પિટૌર બનાયે ।

ફલ દલ શાક મમેત હેત સૌં ઇક દંધિ તક મિલાયે ॥

મખરે અંગન બહુત બાંતિ કે કહાં લગ વલો નેતે ।  
 પરસ બહુર મન શ્રી રચિ કારન મેવા સુરસ સમેતે ॥  
 નીજ આદૌ અરુ નારંગી સુરસ દાડમી દાને ।  
 મેવ આમ સરદા બિલી ખીરા નાસપાતિ સરસાને ॥  
 સુરસ દાખ મેવા અલિ નેતી ડાલી બર બર કેતી ।  
 ડેજી લવન ડેજી ખૂરા સો ડેજી લ્લોં શ્રી ત્યાં તેતી ॥  
 પૂઆ પુરી જામેબી વાહુ ખાળ ખુરમા ફેની ।  
 ચન્દ્રકલા વાવર અરુ ઘેવર અમૃતપુટી મુખ ફેની ॥  
 મોહન ભોગ દુધ શ્રી રોટી જોઆ સેવ મલાઈ ।  
 અમૃત ગુટીરુ અમૃત ખૂંદી માદિન હેત સરાઈ ॥  
 મેવ સિંગારે કે ખુરમા જુલ સકરખારે પેસ ।  
 ગુલિયાં ઔર પિરાક ખાપરી પાપર વરે દેસ ॥  
 તલી દ્યારિયાં બાતિ બાતિ શ્રી નોન મધુર રસ સાંને ।  
 પેડા પિરતા તલી ચિરૌંછ પમે મખાને દાને ॥  
 પક પક પકવાન અતેક વિધિ પરસ દ્યૌરી આતી ।  
 સખિજન દેત હેત પિય પ્યાદી હેત અધિક મન જાતી ॥  
 અંગન શ્રીને આર બાંતિ કે પટરસ રસ કર માન ।  
 બહુ ભોલ્ય અરુ ચોખ્ય લેહવ યે ત્રિવિધિ પ્રકાર જાખાને ॥  
 સજન કવાય વિકા કટુ અઘરુ મધુર વિવિધિ વિધિ કેતે ।  
 રસિ અનુભવ જનાયે રચિ કર મિશ્રિત ન્યારે નેતે ॥

દૈદરિમઠ શરા સૌં છોકે પુનિ પત્રજ સૌં કેતે ।  
 સૌંદ્ર ગૌંધેલ દાલચીની સૌં કૈઈં ફઠ લૌંગ સમેતે ॥  
 પલા લવંગ કપૂર જાયફર જાવિત્રી મધિનાઈ ।  
 કેશરપુટ પુનિ નાગવેલિ રસ અતર કુશભ અધિકાઈ ॥  
 ગિરી છુહારે દાખ ચિરૌંજ પિસ્તા અરુ બાદામા ।  
 યથા યોગ્ય સામિત્રી મિલિ યે ચંપક ચતુર સુભામા ॥  
 દૂલહ દુલહિન રાધાવલ્લભ બોજન કરત વિરાજૈ ।  
 હૈંસત પરસ્પર કૌર લેત મુખ દસન વસન છળિ છાજૈ ॥  
 યહિ પ્રકાર બોજન કરાયકેં પુનિ આચવન દિવાયૌ ।  
 હાય અગૌંજ અવાબત ખીસી કરત આપનૌ બાયૌ ॥  
 બૈઠે જાય સિંહાસન ઊપર સખિયન ચાર હઠાયૌ ।  
 રાજભોગ કી કરત આરતી જૈ શ્રીકમલનયન યશ ગાયૌ ॥૨૧॥

( રાજભોગ આરતી )

નવલ ધનસ્વામ નવ નવલ વર રાધિકા—

નવલ નવ કુંજ નવ કેલિ ઠાની ।

નવલ કુસુમાવલી નવલ સિન્ધ્યા રચિત—

નવલ કોકિલ કીર જૂંઝ ગાની ॥

નવલ સહચરિ જુદ નવલ વીણા મૃદંગ—

નવલ સ્વર તાન નવ રાગ વાની ।

જય શ્રી નવલ ગોપીનાથ હિત નવલ રસ રીતિ સૌ—

નવલ હરિવંશ અનુરાગ દાની ॥૨૨॥

॥ विद्यापन समय ॥ धूप आरती ॥

( गग गौरी )

गधा मेरे प्राणुन हूँ तैं प्यारी । नुस हूँ मान न कीजिये  
सुन्दरि दौ तो यरखु तिरहारी ॥ नैक गितय हँसि भोसियै मोते  
भोसियै धूँधट सारी । नय श्री कृष्णदास हित प्रीति रीति वस  
भरसई अंकन प्यारी ॥२३॥

प्रीतम मेरैं प्राणुन हूँ तैं प्यारौ । निशि दिन डर लगाये  
गहँ हित सो नैक न करिहँ न्यारौ ॥ देखत नय परम सुख उपजत  
इय रंग गुणु गारौ । नय श्रीकमलनयन हित सुन प्रिय वैनन तन  
भन धन भव पारौ ॥२४॥

ऐसी करौ नव सास रंगीले नु मित न और कहँ लसयार्ध ।  
ने सुख दुःख रहे लगि देख सो ते भिट नय अरु बोके पड़ार्ध ॥  
संगति साधु वृन्दावन कानन गुन गुणु गावन भाज बिडार्ध । छवि  
कंज यरत्र तिरहारे वसौ डर देखु यहै ध्रुव कौ ध्रुवतार्ध ॥२५॥

प्रीतम तुम मेरे दगन बसत हो । कदा भोरे हवै पूछत हो  
है यतुगार्ध हरि नु हँसत हो ॥ सीजिये पग्न्य स्पर्श आपनौ  
पुतरिनु मेँ प्यारे तुम्हौ लपत हो । वृन्दावन हित इय वलि गर्ध  
कंज लड़ायत हिय दुखसत हो ॥२६॥

शोभित आन रंगीली न्हेरी । सुन्दर रसिक नवल मनमोहन  
अलवेली नव वयस कियोरी ॥ वेशरि उभय हँसनि मेँ डोसत सो



શ્રીદાવિપિન વિલાસી ॥૩૬

અખ મેં શ્રીદાવન ધન પાપૌ । રાધે જુ ચરણ સરણ મન દીના  
(શી) શુર હરિવંશ બતાપૌ ॥ સોપૌ વૃત્તો વિષય મન્દિર મેં હિતશુર  
દેરિ જગાપૌ । અખતૌ વ્યાસ વિહાર વિશોકત શુક નારદ મુનિ ગાપૌ ॥

ધારી લાગે શ્રીદાવન છી ધૂર । રાધે જુ રાતી, મોહન  
ગળ, રાજ સદા જર પૂર ॥ કનક કલશ કરુઆ, મહમુદી ખાશા  
વૂજ કમશિતુ છી ચૂર । વ્યાસહિ (શી) શુર હરિવંશ બતાઈ  
અપની છવન મૂર ॥૩૮॥

દોઠ—આપ વિરાજે મહલ મેં, મન્ધ્યા સમયો જન ।

આલી સ્વાઈભોગ સખ, મેવા વહુ પક્ષવાન ॥૩૯॥

પદ—સન્ધ્યા ભોગ અલી લૈ આઈ । પેડ, ખુરમા ઔર  
જાસેબી મોહક મગદ મલાઈ ॥ કંચન ચાર ધરે બરિ આગે પિરતા  
અરુ ખાકામ રસાઈ । પાત પવાવત લેવ પરપર હૈસન દશન  
અમકનિ અધિકાઈ ॥ પાણિ પગસિ મુખ દેત બીરી પિવ તવ ધારી  
નયનનિ મેં મુસકાઈ । લલિતપદિક જય શ્રી કમલ નયન હિત ધન  
દિન માનત આપનો માર્ગ ॥૪૦॥

દોઠ—અહ્મુત મીડે મહુર ફલ, વ્યાઈમખી બનાવ ।

પવાવત ધારે લાલ કો, સુ પદિલે પ્રિયા પવાવ ॥૪૧॥

પાગ બની ચટકા બની, બની લાવ કો બેન ।

રાધાવલ્લભ લાવ છી, દોર આરતી દેખ ॥૪૨॥

મુલિ મન્ધ્યા ભોગ સમ્પૂર્ણ ॥

અથ નામ ધ્વનિ ॥

જય જય રાધાવલ્લભ ગુરુ હરિવંશ । રંગીલો રાધાવલ્લભ  
હિત હરિવંશ ॥ છબીલો રાધાવલ્લભ ખારો હરિવંશ । ગસીલો  
રાધાવલ્લભ જીવન હરિવંશ ॥ શ્રીહરિવંશ જય જય હરિવંશ ।  
શ્રીરાધાવલ્લભ શ્રીહિત રાધે રાધે, રાધાવલ્લભ ગુરુ હરિવંશ

ઇતિ નામ ધ્વનિ સમાપ્ત ॥

॥ અથ શ્રીસંધ્યા આરતી ॥

આગતિ કીજે સ્થામ સુન્દર કી । નદ કે નંદન રાધિકા વગ  
કી ॥ ભક્તિ કર દીપ પ્રેમ કરિ પાતી । સાધુ સંગતિ કરિ અનુદિન  
ગતી ॥ આરતિ વૂજ સુવતિ યથ મન ભાવે । સ્થામ લીલા શ્રી  
હરિવંશ હિત ગાવે । ૪૩॥

આરતિ શ્રીરાધિકાવલ્લભવાલ કી કીજે । નિગમ નયન  
છવિ લાહો લીજે ॥ સખિ કુણું ઓગ અમર કર લીધે ।  
અનુરાગન એ બીને લીધે । સનસુખ વીણુ મૃદંગ બજાવે ।  
સહચરિ નાના ગમ સુનાવે ॥ કંથન શાર જરિત મણિ  
મેહલે । મધ્યવર્તિકા ત્રિજુલ મેહલે ॥ પંડા નાદ કલો નહિ ભડે ।  
આનંદ મંગલ કી નિધિ માર્છે ॥ જયતિ જયતિ જોરી સુખ રાગી ।  
જય શ્રીકૃષ્ણવાલ હિત ચરણ નિવાસી ॥૪૪॥

અથ સ્તુતી દોહા ॥

ચન્દ્ર મિટૈ દિન કર મિટૈ, મિટૈ ત્રિજુણ વિન્ધાર ।

દહ પૂત શ્રીહરિવંશ કૌ, મિટૈ ન નિત્ય વિહાર ॥૪૫॥

नेरी युगलकिशोर हो, आग, रग्यी विधि पाद ।  
 हूँ वृत्त श्रीहरिवंश हो, निवर्त्तौ आदि युगाद ॥४६॥  
 निगम अहं परशत नही, जे रम सण तेँ हर ।  
 कियौ प्रकट हरिवंश नृ, गमिकन जवन भूर ॥४७॥  
 रूप जेसि प्यारी जनी, सु प्रीतम प्रेम तमाल ।  
 होहि मन मिलि एकहि अये श्रीराधावल्लभलाल ॥४८॥  
 निकसि कुंज छोड़, अये, जुग परस्पर अंश ।  
 राधावल्लभ मुष्ण हृमय निरभ नयन हरिवंश ॥४९॥  
 हे मन श्रीहरिवंश बन, जे आहत विभ्राम ।  
 निहाइ रस अस पूज सुन्दरिनु, छाडि, दिये सुष्ण धाम ॥५०॥  
 निगम नीर मिलि एक अया, अजन दुग्ध सभ ज्वेत ।  
 श्रीहरिवंश हंस न्यारै कियौ, प्रकट जगत के छेत ॥५१॥

॥ कुंडलिया ॥

श्रीराधावल्लभ लाडिले, अति छंदार सुकुमार ।  
 ध्रुव तो भूयो ओर ते, तुम निनि देहु विसार ॥  
 तुम निनि देहु विसारि और मोको कहुँ नाही ।  
 पिय रँग बगी कटाक्ष नैह बितवौ मो भाही ॥  
 जदे, प्रीति ही रीति ज्यैय हथु होय न वाधा ।  
 तुम हो परम प्रीण्य प्राण्य वल्लभ श्रीराधा ॥५२॥  
 दोहा—न विसरि दौन विसारि हौ, यदै दान मुहि देव ।  
 श्रीहरिवंश के लाडिले मुहि अपनी हर भेद ॥५३॥

કેસોઈ પાપી કો ન હોય શ્રીહરિવંશ નામ જો લેય ।  
 અલક લડે તી રીઝિકૈ, મહલ ખવાસી દેય મયજા ॥  
 મહિમા તેરી કહા કહો, શ્રીહરિવંશ દયાલ ।  
 તેરે દારે વચત હૈ, સહજ સાડિલી લાલ ॥૧૫॥  
 સખ અધમન કો બૂપ હો નાહિન કછુ સમઝંત ।  
 અધમ ઉધારણુ વ્યાસ સુત, વદ સુનિ કૈ હરપંત ॥૧૬॥  
 વન્દો શ્રીહરિવંશ કે, ચરણ કમલ સુખ ધામ ।  
 જિનકો વન્દત નિત્ય હી, હૈલ છરીલા સ્યામ ॥૧૭॥  
 શ્રીહરિવંશ સ્વરૂપ કૈ, મન વચ કરૌ પ્રણામ ।  
 સદા સદા તન પાઝયે, શ્રીવૃન્દાવન ધામ ॥૧૮॥  
 જોરી શ્રીહરિવંશ કી, શ્રીહરિવંશ સ્વરૂપ ।  
 સેવક વાણી કુંજ મેં, ચિહરત પરમ અનૂપ ॥૧૯॥  
 હરણુનિધિ અરુ કૃપાનિધિ શ્રીહરિવંશ હૈદાર ।  
 વૃન્દાવન રસ કહનિ કૈ, પ્રકટ ધર્યો અરતાર ॥૨૦॥  
 હિત હી ચહા ઉપાસના, હિત કે હૈ હમ દાસ ।  
 હિત વિશેષ રાખત રહો, ચિત નિત હિત હી આસ ॥૨૧॥  
 હરિવંશી હરિ અધર ચદિ, મૂંજત સદા અમંદ ।  
 દુગ ચકોર ધ્યાસે સદા, પાય સુવા મહરંદ ॥૨૨॥  
 શ્રીહરિવંશ હિ ગાય મન, બાવૈ યશ હરિવંશ ।  
 હરિવંશ જિના નહિ બાવિહો, પદ નિવાસિ હરિવંશ ॥૨૩॥

૧૬—દોજે શ્રીવૃન્દાવન વાસ । નિરખો શ્રીરાધાવલ્લભલાલકૌ ॥

લડેતી લાલકોં । યહ જોરી મેરે જીવન પ્રાણુ । નિરખૂં ॥ મોર  
મુકુટ પીતાબર ઉર વૈજન્ટી માલ ॥ નિરખૂં ॥ યમુના પુલિન  
વંશીવટ । સેવાકુંજ નિજ ધામ ॥ નિરખૂં ॥ વંશી બળવૈ  
ખારૈ મોહના । લૈલૈ ગધા રાધા નામ ॥ નિરખૂં ॥ દેખૈ યા  
મજ હી રચના । નાર્યે યુગલકિશોર ॥ નિરખૂં ॥ ચન્દ્રસંખી કૈ  
ખારૈ । શ્રીરાધા જુ કૈ ખારૈ ॥ ગોપિન કૈ ખારૈ । મજ  
રખવારૈ । શ્રીહરિવંશ ફુલારૈ ॥ દર્શન દીજૈ દીનાનાથ । દર્શન  
દીજૈ હિતલાલ । નિરખૂં શ્રીરાધાવલ્લભલાલ કૈ । લડેતી લાલ કૈ ॥

( દર્બારી સભા મહલ કે મંગલ પદ )

જય જય શ્રીહારિવંશ પરમ કરણામર્થ । નૃપ નર વાહન તાહિ  
જુગલ પદ નિધિ દર્ધ ॥ નાહગ્મલહિ નિહાવ કિયૌ હિત ખીઝ કૈ ।  
ખીઝ મોહન અગ સંગ લિયે રીઝ કૈ ॥ રીઝ કૈ પગિઝર મિલાયૌ  
હિત હખીલી દાસ કૈ । નવલ ખેડી તોગિ સંત પ્રભાવ દીનૌ બ્યાસ  
કૈ ॥ કુંજ કીડૌ બેલિ શ્રીહરિદામ કે ઉર મે બર્ધ । જય જય  
શ્રીહરિવંશ પરમ કરણામર્થ ॥ જય જય શ્રીહરિવંશ દેત આનંદ  
કૈ । બાખ્યૌ ધામ સ્વરૂપ પ્રભોધાનંદ કૈ ॥ ધર હી મન્ત્ર લિયૌ  
નૃપ પરમાનંદ નૈ । પૂરન સંગ દિયૌ મુહિત રસકંદ નૈ ॥ રસ  
કંદ જમુના સંગ ગંગા કર્મહી શિર કર ધર્યૌ । હરિવંશ દાસ  
કૃપાલુતા સૌ નરક તે દ્રોહી વર્યૌ ॥ જો ન હોતૌ સેવક તૌ કૈ  
કાટૌ પ્રમ કંદ કૈ । જય જય શ્રીહરિવંશ દેત આનંદ કૈ ॥ ૨ ॥  
જય જય શ્રીહરિવંશ સદાયક ધીગ કૈ । ચતુર્જ અર હરિદાસ

હરત પર પીર કૈ ॥ જૈમલ રક્ષા હેત આપ જૈમલ ભયે । ખરગસેન  
જસેવ ત્ર ભુવન જસ જગ છયે ॥ ભુવન જસ જગ છયે સુન્દરલાલ  
સ્વામી ગસમઈ । દામોદર પ્રણુ રાખિ હિત ધ્રુવદાસ કૈ વાણી દઈ ॥  
દાસ નાગિરી ભાગમતી મિલિ ગુનત ગુણુ ગંભીર કૈ । જય જય  
શ્રીહરિવંશ મહાયક ધીર કૈ ॥૩૥॥ જય જય શ્રીહરિવંશ શ્રગ્ધુ  
સુખદાન જૂ । કન્હર સ્વામી હરે કૃષ્ણુ દેખાન જૂ ॥ હરીદાસ  
ગોવિંદ જુ મોહન માધુરી । સ્યામમાલ હિત રસિક શ્રીતિ લાગનિ  
દુરી ॥ દુરી દારિકાદાસ પુષ્કર દાસ પૈ ગુરુ હી કૃપા । કિયૌ હિત  
મૌ ભેંટ સર્વસ મિટ ગઈ તીનૌ તપા ॥ વાસ વૃન્દાવન દરત  
સખ મહલ ટહવ સુજાન જૂ । જય જય શ્રીહરિવંશ શ્રગ્ધુ  
સુખદાનજૂ ॥૪૥॥૫૫॥

કૃપાનિધિ કૃપા અનુમહ હીજૈ । રાખૌ લાજ શરણુ આયે પ્રી  
નામ ધામ રતિ લીજૈ ॥ સંત સંગ ગુણુ જાગૌ ગચૌ પ્રેમ સુધા  
રસ પીજૈ । જય શ્રીરૂપલાલ હિત લલિત ત્રિભંગી અબ અપનૌ  
કરે લીજૈ ॥૫૬॥

દહાવૌ અન્તર્યામી સ્યામ ।

દુમ સૌ કહૂ ન દુગત દુગઈ વૃદ્ધ બરોસૌ નામ ॥

પતિતન પાવન દરત નિરંતર વિગ્દ મદા સુખધામ ।

જય શ્રીરૂપલાલ હિત લલિત ત્રિનંગી ભક્તાન પૂજન કામ ॥૫૭॥

જિનકે દેહ નેહ ગસ બીનૌ ।

તિનકે નૈન પ્રેમ મદમાતે નાતે જય કે નૌં કે ન ચીનૌ ॥

વેદ બેદ તજ નેમ ધૃષ્ણલા વિહોસિ બધે પ્રીતમં સૌં લીનૈં ।  
જય શ્રીગુપ્તાલ હિત મતિ મતિ ન્યારી કહિ ન જાત જૈસે મતિ બીનૈં ॥

મય જગ મોવૈ પ્રેમી રોવૈ નૈન સમોવૈ ધોવૈ ।  
દૈલલકોવૈ આનંદ વોવૈ હિત જોવૈ દુખ ખોવૈ ॥  
છિન છિન ગાવૈ હગિહિ લડાવૈ વિગ્દ વિથા તન ભોવૈ ।  
જય શ્રીગુપ્તાલ હિત ચિત મો મિત ઠણુ તવ મસ વસ હી હોવૈ ॥૧૯

વિન સિં પ્રેમી રહૈ નિગંતર સિર સાટે પિય પાવૈ ।  
તૈનન નીગ ધીર તજ છવૈ છિન છિન ગુણ મણુ ગાવૈ ॥  
જગ તે મહા ક્રોધ આશ છકે ઉપ રમાસવે ભાવૈ ।  
જય શ્રીગુપ્તાલ હિત લલિત ત્રિભંગી વિન ચિત ઔગ ન આવૈ ॥૨૦

મ ગવ— જય જય શ્રીહર્ષિવંશ વંશ જગ મોહના ।  
નમિકન પ્રાણ અધાગ પરમ મસ સોહના ॥  
મા નમ કે નક્ષત્ર મયૈ મુખદાયકા ।  
મૃદ નિદ્યંદ મયંક મંદ નિધિ લાપકા ॥  
શ્રી દિગોરીલાલજી હી પ્રભા જય વિમ્ભૂત બર્મ ।  
જગત જગ મેં જે મદોરી પગ્મ શીતલ તે બર્મ ॥  
મુખાધાગ શ્રવત વાણી વાલ લલના જોહના ।  
જય જય શ્રીહર્ષિવંશ વંશ જગ મોહના ॥૨૧॥  
જય જય હિત દૈા હેત દિગોરીલાલ જૂ ।  
આગત દગંને કૃપાનુ નેદ પ્રતિપાલ જૂ ॥

ધીરોધાવલ્લભલાલ લડાવત યાવ સૌ ।  
 ખેલ ખિલાવત નિત્ય બરે રસ આવ સૌ ॥  
 કુંજ, હિત હી જે અનેકન પરમ મુંખદ મુંહાવની ।  
 લાડ, ઝટુ અનુસાર કે કર,વાત કહ્યે મન ભાવની ॥  
 ચલન ખ્યારી પીય,હી મેં લગે રહ્યે નિત મોહનાં ।  
 જય જય શ્રીહરિવંશ વંશ જગ મોહના ॥૨॥

જય જય હિત કૌ વંશ અંશ પ્રિયા લાલ કૌ ।  
 પ્રગટયૌ ફકહિ સંગ રંગ રૈયૌ ખાલ કૌ ॥  
 આનંદ નિધિ મુકુમાર બાર જગ હર લિયૌ ।  
 નીરસ નિપટ નિકામ હૃદય રસ બર દિયૌ ॥  
 હિત દિશેરીલાલ ખ્યારે હિત-દિશેરી-લાલ-હૃદયે ।  
 વંશ વૈભવ, કુંજ લીલા, પ્રપટ કીન્હે ભાવ દૈ ॥  
 ભાંડ શુકલા અષ્ટમી કૌ દિવસ મંગલ દોહના ।  
 જય જય શ્રીહરિવંશ વંશ જગ મોહના ॥૩॥

જય જય હિત રવિ ખાલ લાલ લાલી શ્વરી ।  
 તિમિર ગયૌ, ગ્સખેલિ શ્લી ઝુંકે ઝુંક નવી ॥  
 પ્રાત મુહાવન પવન ત્રિવિધિ હૃદયે બહ રહી ।  
 પ્રેમ ભક્તિ રસ ભાવ બદ્ધે ગતિ સખ લહી ॥  
 જે હલકી પ્રકૃતિ કે જન કિરન દેખે બનિ ગયે ।  
 ગસિક ગ્સ કે વીર, વાનૌ ખાંધિ કે સખ મનિ ગયે ॥



ચરણ રજ પાસ પાસ કૈ હિત ચરણ રહે લોહ ના ।  
જય જય શ્રીહરિવંશ વંશ જગ મોહના ॥૪૧॥૭૧॥

અથ સયન સમય કૈ ભોગ ॥ ૫૬ રાગ વિહાગરૈ ॥

લાડિલી લાલ રાજત રુચિર કુંજ મેં । અંરગળ અંગ રંગ  
રંગ વાગે બને દોહ જન પ્રેમ સૌ સને રસ પુંજ મેં ॥ નિર્મલ  
હાડી અલી બલી ગતિ બેઠ સૌ રૈન પહિલી જામ વૃદ્ધ અલિ શુંજ  
મેં । પર્યો પરદા ધર્યો સૈન કૈ ભોગ ૫૫ પૂરી બર થાર  
શ્રોત્રજલાલ કર મુંજ મેં ॥૭૨॥

સૈન ભોગ સ્વાઈબર થારી । રુચિર કચૌરી પૂવા પૂરી મોહન  
ભોગ જેવત પિય ખ્યારી ॥ ધરે કટોરા બરે મુરખ્યા સરસ સધાને  
વર તરહારી । ઝોટયો દૂધ રજત બાજન બરિ તામધિ પીસ શિતા  
બહુ ઠારી ॥ \*

ભોજન સૈન સમય કર્યાવત । શુભમ્ મોહનભોગ અભિરતી  
મિશ્રી હૈની દૂધ મિલાવત ॥ દગ કોરનિ મધિ હંગત પરસ્પર રદ છપ  
પરસત લલન ખવાવત । †

નોટ— લલિતા લલિત કરન અગવાવત મનુનાજલ કંચન ઠી  
ઝારી । જૈ શ્રીહિત વૃજલાલ ખવાવત ચીરી કંપતિ  
ઝવિ સંપતિ કિર ધારી ॥૭૩॥

† જૈ શ્રી કમલ નયન હિત દેત આચમન ચીરી લેત મુખ  
અતિ સચુપાવત ॥૭૪॥

રાધા મોહન લાલ વ્યાર કીજે । પૂરી દૂધ મલાઈ મિત્રી  
પહિલે કોર શ્રીપ્રિયાજી કો દીજે ॥ જેમત લાલ લાડિલી દોહી  
લલિતાદિક નિરખત મુખ બીજે । \*

રાધા લાલ વ્યાર કરત । મગદ મોહનભોગ મોદક મધુર લે  
મુખ ધરત ॥ મોન હી પૂરી કચેરી લાડૂ મન કો હરત । ચરપરે  
ચીલા ત્રિકાના રસના ગસ વિસ્તગત ॥ દૂધ ફલ બરફી શુભાખી  
અધિક રચિ અનુસરત । ચન્દ્રકલા ધેવર રસીલે સ્વાદ બહુ ઉચરતા ॥  
પુગમી ખાજ દૂધ ફેની સિતા તિન મધિ રરત । અમિરતી મઠરી  
જલેખી પામ આનંદ બરત ॥ તરકરી ભાજી પરાસી જૈવત અતિ  
મુખ દરત । પાપર કચરી અરુ મુરખ્યા જુગલ બહુ આહરત ॥  
ગ્રાસ લે ખતરાત આનંદ બીજ મનુ મુખ ઝરત । છવિ વિહારી  
નૈન નિખત પલક નાહિ ન પગત ॥ વદન પર ભઈ મદન  
લલકન સૈન કો અર વરત । વન્દાવન હિત રૂપ ગજની દેખ  
મન મન અરત ॥૭૬॥

હૈંસિ હૈંસિ દૂધ પીવત પાલ । મધુર વગ સૌધે સુવાસિત  
રચિર પગમ રસાલ ॥ જીવ જામ ગંગ અનગ વિતરત ચિત  
મોહન ઓગ । સુધાનિધિ મનો પ્રેમ ધારા મુપિત ત્રિપિત અકોગ ॥  
ખારો લાલ રસ લ પટ સુક અવવાય મુખ છવિ હેર । સેત તવ  
અવશેષ આપુન પરે મનમથ ફેર ॥૭૭॥

---

નોટ— - જૈ ત્રોહિત જોખીનાથ ભાગિનિ મુખ પોરી પિઠલાની મોહન  
કો લીજે ૧૭૫ ॥

પય પૈ ધરૂં કનક કટોર । સુગંધ દલા મિલ્યો મિત્રી લેત  
દેત નિહોર ॥ વસિ જાજી કળહૂં હેલેં કળહૂં મેલેં કર કટાક્ષનિ  
કોર । મુખ-કલાનિધિ મનો સુધા પીવત સખિન નૈન ચકોર ॥૭૮॥

હૌંસિ હૌંસિ દ્વધ પીવત પિય પ્યારી । ચંદન વારુ કનક  
ચર ( ચિર ) ઔટપૌ વારૈ કોટિ સુધારી ॥ મિત્રા લાગ ચિરૌછ  
દલા કપૂર સુગંધ સંવારી । ઉજવલ સરસ સચિકન સુન્દર સ્વાદ  
મુમિષ્ટ મહારી ॥ ૪

નવલ નવેલી અલવેલી મુકુમારીજી કૌં રૂપ પિય પ્રાણુન કૌં  
સહજ અદારી । વ્યંજન સુ બાવન કે નેહ ધૂત સૌ વને રોચક  
ચિર હૌં અનૂપ અતિ ચારુરી ॥ નૈનન કી રસના તૃપિત ન હોત  
મૈં હૌં નર્તનર્ત રચિ ધ્રુવ બદ્ધત અપારી । પાનિપ કૌં પાની  
પ્યાય પાન મુસકાન ખવાય રાજે ઉર મેજ સ્વાય પાપૌ મુખ  
સાર રી ॥૮૦॥

( આરતી રાગન )

આરતી કીજિયૈ રાધિકા લાલ કી । કુંજ અભિરામ વર  
મુખગ મુખ સેજ પર ફૈલિ રહી કાંતિ વર ગૌર તન બાલ કી ॥  
કંઈ હીરા દમક ચમક બૂપલુ વસન અલકની મુગય ઉર મુક્ત રસ

નોટ—૬ લલિતા કર પટ લીયૈ દાહી વમુના જત કંચન કી  
ગરી । મજ સખિયન કૌં દર્શ હૈ પ્રસાદી જૈ શ્રીરૂપલાલ  
અસિદાગી ॥૭૯॥

भाल की । भंड भृदु मुमडिनी लसत दसनावणी खपय हुग या-  
छवि छाव गही भाल की ॥ सरस सौगंध कर गवित वर वर्तिका  
नटित मखियाल हल घात की आगती । दामोदर हित सप्पी हाथ  
लसिता लिये सखित तन मन प्राणु मन भदन छवि वारती ॥८१॥

सप्पी जन आरती शयन साज्ये । मध्य मखि लाडि, ली  
विवस आलस पसित जुकत अरु लाल के अंक राज्ये ॥ इनक भय  
दाय के मध्य जयमल हुती वागती प्राणु अलि गती लाज्ये । होत  
जर जय धुनी नाह घंटा सुनी जालरी अज छक गगन लाज्ये ॥  
अंग की होति छिद्यत अति भवन की गमन होजि सेव पर भदन  
लीयें । भोग भग वाग चिक डार जाडिग यणी जय श्री मेरी हित  
लाल हृद, हृगन साक्ष्य कियें ॥८२॥

( शयन )

लडेलीअ के नैननि नीह धुरी ।  
आलस वस जेन वस भद वस पिय के अंस हुरी ॥  
पिय कर परस्यो सख अविषुह वर वाशी लौह मुरी ।  
वाररी भणी हित व्यास सुवन वल देभतलनन हुरी ॥८३॥  
आलस नैन आवत धूम ।  
लाल सुटपी है जगावत जुवै ताकत जूम ॥  
भसत जुज पिय अ स तौ सभगय कर लै जूम ।  
वृन्दावन हित रूप धून्ढ वदन पर ग्लौ जूम ॥८४॥

દેખો ચિત્રસારી બની ।

મણિ દીપક રંગ્ર જલકત વિવિધિ શોભા સની ॥

સંસ્તર પરસ સુગંધ છી ઉદગાર આવત જની ।

મધ્ય સેજ વિરાજ પૈદે, ગસિક દંપતિ મની ॥

અંગ અંગ રંગ અનંગ બીને રાધિકા ધન ધની ।

પદ કમલ સેવત તહા શ્રીહિત રૂપ વક જની ॥૮૫॥

લાલ છી નીંદ અપત અખિયા ।

ખંજન સુત અરવરત ઉડન માનો ઉલ્લી નઈ પખિયા ॥

ધારી રૂપ છી ધૂમત મતવારી લખિયા ।

જુદાવન હિત રૂપ રસાસવ પીય જિવત સખિયા ॥૮૬॥

ીરી રચન સુધગ મહા પ્રીતિ અવધિ કરો દહા—

ગતન જટિત ડના મુવિધિ ધરતિ લાઘ લામ્રી ।

અતરનિ છી શીશી ચારુ ફૂલનિ કે રચે હાગ—

રંગ મહલ દંપતિ કે નિકટ ધગતિ જામ્રી ॥

મોહક અરુ મગદ ભગતિ બાજન મધુ પાન ધરતિ—

લૈ વલાઘ ચિકહિ ઠારિ બીજી રસ બામ્રી ।

સુરતિ સુદ મહા સુર વિહંગ હૈ રસ ગરુ—

વલિ વલિ જુદાવન હિય રૂપ સુજશ ગામ્રી । ૮૭ ।

નાહી સુરજત અરુઝન પ્રેમ છી, ગહી રોમ રોમ મેં ભોય ।

રાવે જુ મોહન હો રહે, મોહન રાધે હોય ॥

ત્રિવુ તરે પિય કર દિય હો શોભિત હૈ યદ બાય ।

નીલ કમલ પર અરન કમલ, માનો ખિલે હૈ પગ સત્યપાય ॥

લલિત લતન તર ગંગમગે, હો દોહ મૈન સનમાન ।  
 નૈનન મેં નૈના ખગે અરુ પગે હૈં પ્રાણુન મેં પ્રાન ॥  
 નાગરિયા રજની ઘટૈ, જ્યો અંદ મલિન ભઈ જોત ।  
 ત્યો ત્યો આલસ રૂપ દુહુન ક, ઉતૈ યૌગુનૌ હોત ॥૮૮॥

દેત હવિ આલસ નૈન ભરે ।

અપકત ખુલત પલકે માનૌ અગ્ર્યુજ સમુપટ લૈ ઉપરે ॥

દિધો શોભા પિંજરન મેં ખંજન પરવસ આન પરે ।

ભૂકુટી ધનુપ વાન મપિ રેખા નાયત દેખ રે ॥

પિય દિશ ઝુકન વેલ તરુ માનૌ અતિ હિત માન અરે ।

દુન્દાવન હિત રૂપ વદન સરવર કેં માન તરે ॥૮૯॥

પોઢી મુખ સેજ પ્રિયા, સ્યામ ભુજ શીષ ત્રિવૈં—

ઉરઝ અંગ અંગ વાલ, લાલ ઉર સમાઈ ।

વીરીં વિવિ ખંડ ખંડ આનન દગ પાનન રૂપ—

હકે સમ્મ સૌરમ દુતિ પરત નહિ લખાઈ ॥

ઓઢિં પટ નીલ પકે ઝલમલાત વદન અન્દ—

ભૂપન ઉડગન સમાજ દવિ અતિ વિલખાઈ ।

સેવત પદ કમલ દહલ મહલ અલી શ્રીલાલ—

રૂપ હિત અનુગત જન માન નિજ કગ અપનાઈ ॥૯૦॥

હતિ અણ્યામ દી સેવા કે સંદેષ સે પદ સમ્પૂર્ણ દી

જય જય શ્રીહિત હર્ગિવંસ ॥



# ਸ਼ੀਰਾਧਾਵਲਲਭਜੁ ਕੌ ਅਠ੍ਹਾਹਰ ਸੇਵਾਵਿਲਾਸ

( ਧਿਆਨ ਕੌ ਢਕਾਰ )

ਪ੍ਰਥਮ ਛੀ ਆਰ ਧੜੀ ਗਤਿ ਰਹੈ ਤਥ 'ਸ਼ੀਰਾਧਾਵਲਲਭ ਸ਼ੀਰੋਮਣੀ' ਸ਼ੀਰੋਮਣੀ-ਨਾਮ ਸ਼ੀਰੋਮਣੀ-ਨਾਮ 'ਸ਼ੀਰੋਮਣੀ' ਥੇ ਨਾਮ ਸੇਵਾ ਛਹੈ ਤਥ ਅਪਨੇ ਆਧਾਰ ਕੌ ਧਿਆਨ ਕਰੈ । ਤਦਾ ਛਹੈ ਧੜੀ ਗਤਿ ਰਹੈ ਅਰੁ ਛਹੈ ਧੜੀ ਆਰ, ਤਥ ਲਗ ਸੰਗੁਲ ਸਮਧ ਛਹੈ ।

ਅਥ ਸ਼ੀਰੋਮਣੀ ਸਮਧ

ਪ੍ਰਥਮ ਆਗਾਛਿ ਕਹਿਓ ਆਪ ਕੇ ਹੋਨੋ ਹੋਪਨ ਕੇ ਮਧ ਨਾਸਿਕਾ ਮਧ ਸੇ ਭੀਖੁੰਡੂ ਤਿਥਕ ਹੋਸਰੀ ਧਨੁ-ਨੁ ਧੁਵਾਲ ਧਾ ਲਾਧਵਨੀ ਛਹੈ ਧਾ ਰਧਾਮਧ ਹਿਨੀ ਵਿਨੁ ਧੁਕਤ ਤਿਲਕ ਛਹੈ । ਪਾਠੈ ਮਨਿਧ ਪੀ ਮਾਧਨੀ ਕਰੈ, ਹਿਰ ਨਲ ਧੁਕਤਮਾਛਿ ਕਹਿ ਮਨਿਧ ਛਹੈ ਧੁਕਤ ਕਰੈ । ਤੈਸੇਛਿ ਸ਼ੀਰਾਧਾਵਲਲਭ ਕੇ ਪਾਤ੍ਰਾਛਿਕ ਨਲਾਛਿਕ ਸੋ ਧੁਕਤ ਕਰੈ । ਪਾਠੈ ਆਸਨ ਪੈ ਆਛਿਕ ਅਪਨੌ ਸਭੀ ਰਾਧ ਪਿਆਛੈ । ਸ਼ੀਰੋਮਣੀ ਸੇ ਸ਼ੀਰੋਮਣੀਛਿਕ ਸਭੀ ਰਾਨਾਛਿ ਕਰੈ ਛਹੈ । ਤਦਾ ਆਪ ਆਪ ਸੋ ਰਾਨਾ ਕਰੈ । ਤਾ ਪੀਠੈ ਧੁਰਨ ਕੌ ਹਿਧੀ ਪ੍ਰਸਾਦੀ ਧੁਗਾਛਿ ਛਹੈ ਸਾਰੀ ਲਛਿ ਗਾ ਕਹਿਓ ਆਛਿ ਨੇ ਵਰਨ ਧੁਪਾਛਿ ਛਹੈ ਤੇ ਪਛਿਰੈ ਅਪਨੌ ਧੁਗਾਛਿ ਕਰੈ । ਅਪਨੀ ਧੁਧੇਧਰੀ ਸ਼ੀ ਨਿਧ ਸੁਛਿਕ ਅਲਿ ਸ਼ੀਰੋਮਣੀ ਅਲਿ ਨੂ ਕੌ ਨਾਨੈ ਧੋਗ ਛਹੈ ਅਨੁਗਤੀ ਛਹੈ ਕੌ ਸਭ ਮੇਰਾ ਆਵਨਾ ਕਰੈ । ਤਾ ਪਾਠੈ ਸ਼ੀਰੋਮਣੀ-ਨਾਮ ਕੌ ਧਿਆਨ ਕਰੈ । ਤਾਕੇ ਮਧ ਮੇ ਸ਼ੀਰੋਮਣੀ ਨੁ ਪਿਆਛੈ । ਤਦਾ ਸ਼ੀਰੋਮਣੀ ਪ੍ਰੀਤਮਨੂ ਕੌ ਮਛਲ ਛਹੈ ਤਾਕੇ ਧੁਕਤ ਆਗ ਰਾਨਾ ਕਹਿਓ

'डोट' है । ताके निकट श्रीगुरु सप्पीजी को मन्दिर है, तहां जय  
 है श्रीगुरु सप्पीजी को जगावै । जल आरी लै है दन्तधावन  
 करावै । इर स्नानादि करावै ता पीछे श्रीप्रिया प्रीतमजी की  
 आशुप्रिय श्रीद्वित सप्पीजी को प्रसादी अंगार होय सो श्रीगुरु सप्पी  
 जी को अंगार करै, इर श्रीगुरु सप्पीजी के पाछे होय है  
 श्रीनिज सप्पी श्रीद्वित सुहृद अलिजी के मन्दिर में जय उनकी  
 जगार कराय आत्मन स्नानादि कराय श्रीप्रिया प्रीतमजी के वस्त्र  
 अंगार लै अंगार कराय उनकी और श्रीगुरु सप्पी जी की  
 अनुवर्तिनी होय है श्रीप्रिया प्रियतमजी के निकुंज मंडल में  
 जय । श्रीद्वित ललितादिक सप्पी श्रीलाडि, लीलाजी की टहल करै  
 है तिनके संग में मिलके श्रीगुरु सप्पीजी के पीछे होय है  
 आप टहल करै । तहां श्रीगुरु सप्पीजी के हाथ कंयन जल आरी  
 हैके आप पीकहानी लै है श्रीजेरीजी को कुरवा करवावै । रामल  
 सुगंधित इमाल सो भुजारविन्द पुछावै । पाछे मिथी, मलाई  
 आदि कंयनादि चार में धरिके भोजन करावै । सुगन्धित शीतल  
 जल अर्पण करै । पाछे कुरवा करावै । हाथ पुछाय वीरी अर्पण  
 करै । तय सिंहासन पर बैठाव आरती करै । पाछे पुष्पांजलि  
 करै । ता पाछे श्रीद्वित ललितादिक सप्पी भोजन करै ।  
 तिनमें जय है सीत प्रसादी लेय । श्रीगुरु सप्पी जी को सीत  
 प्रसादी लेय । पाछे सप्पी प्रसाद श्रीगुरु प्रसाद आप भोजन करै ।  
 श्रीगुरु सप्पी जी को श्रीद्वित सप्पीजी के परिकर में जल और



आप श्रीगुरु संपी नू के पाठ होय टहल करै । स्वतन्त्र  
नहीं करै । ध्यादि विधि सौ भंगव समय अनिये । प्रति  
श्रीभंगव समय ॥

॥ अथ श्रीशृंगार समय ॥

है धडी दिन अठे, तैं जागह धडी पार्श्वन्त दिन अठे, तथ  
लग शृंगार समय है । ताही विधि—हो धडी दिन अठे, पाठ  
श्री जेरीनू पुष्पवाटिका में जाग ही रचना देखिवे का आवै ।  
तहा संपी हास परिहास गान करै । पीठ स्नानकुंज में लाय  
अंगन में डबटनो करै । स्नान ऋतु के अनुमार जल सौ विधि  
पूर्वक करावै । पाठ शृंगाज कुंज में पधगाय शृंगाज करावै ।  
श्रीजेरी नू हौं मदा भिसे दी विचारै । हाह क्रिया में न्यारौ  
नहीं विचारै । शृंगार कराय भोजन कुंज में द्यावै । तहा  
अभ्यक्तता नू ही भोजन ही टहल मुખ्य है । तहा सभियन में  
भिक्षिहें अंधवा दही भिक्षार्थ आदि श्रीगुरु संपी नू के दास्य अर्पण  
करिहें श्रीजेरीनू का भोजन करावै । ता पाठ शीतल सुगन्धमय  
जल पिवारै । पाठ कृष्ण आदि करावै । वीरी अरपै । पाठ  
दि य सुवर्ण हौं मदा रत्ननिभय पोडश दाज हौ सभा भंडल है ।  
तहा रत्न जटित सिंहासन कूलन के आसन सोहै । तापर  
जैदाय आरती करै । पुष्पनि ही न्योठावर करै । तहा समस्त  
संपी दर्शन करै । तहा गानादि की भावना करै । पाठ पूर्व  
रीति सौ सभियन के मध्य श्रीगुरु संपी नू हौ तथा अपनी

प्रसादी पायवौ विचारै । छत्यादि विधि सौ श्रृंगार समय । छति  
श्रीश्रृंगार समय सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ रानभोग समय ॥

बारह घड़ी दिन अठे, पीछे रानभोग समयौ लागै छः  
घड़ी पाछिसौ दिवस रहै तण लग छै । ताडी विधि—सभी  
आय सभा मंडल में प्रार्थना करै । तण भडा दिव्य रत्ननि ही  
भोजन कुंज छै । तहां श्रीजेरीजू आवै तण कछुक आभूषण  
परत उतारै । तहां सभी कूलनि के आसन पर बैडारै । तहां  
आसन छपर श्रीजेरीजू हूँ घड़ी भोजन करै । तहां निपरी  
सभरी अनेक प्रकार ही साभित्री अर्पण करै । वीरी अर्पण करै  
और आरती आदि धूप-दीपादि पूर्व रीति सौ करै । तैसे ही  
श्रीगुरु सभीजू औ औ अपना भोजन पूर्व रीति सौ करै ।  
किन्तु श्रीजेरीजू के शयन कराय हँ भोजन करै । शयन करायवे  
ही विधि—भडा दिव्य भस्त्रि भय शय्या मन्दिर विचारै । तहां  
श्रीजेरीजू के पधरावै । तहां शय्या के निकट सुगन्धित वीरी  
पुष्प, नल्लादि धरै । कौछ धरी पकान्त रहस्य ही भावना करै ।  
पीछे पौढिबे ही भावना करै । नल रन्धनि छवै हँ श्रीवल्लितादिक  
सभी अवसोदनि करै । तैसे ही आप हूँ अवसोदनि करै ।  
छत्यादि विधि सौ रान भोग समय विचारै । छति श्रीरान भोग  
सम्पूर्णम् ॥

॥ અથ ઉત્થાપન સમય ॥

ઠે ઘડી જિ પાછિએ સૌ લોકર સાયંકાલ પર્યંત લૌ  
સન્ધ્યા સમય હૈ । તાકી વિધિ—ઠે ઘડી દિન ગહૈ, તખ સખી  
વીણા બજાય હૈ ઓ લાડિલી લાલ હૈ જગારૈ । મેવા, દમ આદિ  
અરોગાય, ધીનલ જલ અથવા ચગ્ગત હૈ પાન કરાવૈ । મરમગે  
ઝૂમાર કૌ સમ્હાર પાઠે અનેક પ્રકાર કે મેવા મિત્રી હૈ,  
મોજન કરાવૈ । રીતલ જલ પાન કરાવૈ, વીરી અર્પણ કરૈ ।  
સખિયન મેં મિનિ આપ ટહલ કરૈ । પાઠે શ્રી ગુરુ મખી જૂઠૌ  
પ્રમાદ પાવતૌ વિચારૈ પૂર્વ રીતિ સૌ । પાઠે વન વિહાર હી  
બાવના હૈ, તહા નિત્ય કૃત્ય વિષ નિત્ય હી બાવના માહી, કુંજ  
હી વિહાર ગદિવર હી ખેલિતૌ, દિરાલા હી ઝૂલિતૌ, દાન નીલા હી  
હંતૌ, આખ મિચોની હી ખેલિતૌ, જલ વિહાર હી ખેલિતૌ,  
નવેરિન મેં બેઠિ ત્રીપમુના જલ હી પેરિતૌ, પ્રિયાજી તૌ લાનજી  
રૂપ હોય ઓ લાલજી પ્રિયાજી રૂપ હોય । સખી હમેશા વિવાદ  
કરાવૈ નિત્ય દુલહ-દુલહિની હોય કરિ બન વિદાગ કરિતૌ કરૈ ।  
પુદ્ગલ હી જેંદ નૌ પગ્ગર ખેલિતૌ । ઇત્યાદિ વિધિ મૌ ઉત્થાપન  
જનિયૌ । ઇતિ શ્રી ઉત્થાપન સમય સમ્પૂર્ણ ॥

॥ અથ સાયંકાલ સમય ॥

સાયંકાલ કે સમય મેં સખી ભોગ લ્યાઈ । મોદક મગદ  
મવાઈ, મિત્રી, મોતીચૂર, ચન્દ્રકા, જલેબી ખુગ્મા, ખજ્જલા,

ઇમરતી, પેડા, પગે મખાને, બૈંધવા દહી આદિ સામિત્રી શ્રીલાડિલી લાલ જૂ કૌ બોજન કરવાયૈ । પીછે શીતલ જલ પિવાય વીરી અર્પણ કરિકે આરતી આદિ સેવા કરે । સાયંકાલ સમય સે છે ઘડી રાત્રિ પર્યન્ત રસ વિલાસ કી ભાવના કરે । જ્યાંદિ વિધિ સૌ સન્ધ્યા સમય વિચારે । ઇતિ શ્રી સન્ધ્યા સમય સમ્પૂર્ણમ્ ।

॥ અથ શયન સમય ॥

છે ઘડી રાત્રિ ગયે તાર્છ સન્ધ્યા સમય બયૌ તા પાછે શયન સમય ઘડી દોષ કૌ હૈ । તાકી વિધિ—પૂરી, કચૌરી, મોહનભોગ, ઝાંઢયૌ દૂધ, અનેક તરકારી, બૈંધવા દહી આદિ સમર્પણ કરે । પાછે શીતલ સુગન્ધિત જલ પિવાય વીરી અર્પણ કરે । પીછે આરતી કરે । પાછે દિવ્ય કંચન કૌ ઇન્દ્ર નીલમણિ આદિ રત્ન જટિત શૈયા મન્દિર વિચારે । કોમલ કમલ દલાદિક ફૂલન કી શૈયા વિચારે । તાપર લાડિલી લાલ કૌ પથરાયૈ । તાકે નિકટ મહા-મધુર માદક રસ વીરી આદિ સામિત્રી ધરે । પાછે સખી બોજન કરે । તિન મેં મિલિ દેં શ્રી શુરુ સખી જૂ અરુ અપનો પ્રસાદ પામવૌ વિચારે । જ્યાંદિ વિધિ સૌ શયન સમયૌ જાનિયે । ઇતિ શ્રી શયન સમય સમ્પૂર્ણમ્ ।

॥ અથ શૈયા સમય ॥

આઠ ઘડી રાત્રિ ગયે પાછે સેજ્યા સમય વિચારે ઘડી બીસ કૌ સેજ્યા સમય હૈ । તાકી વિધિ—શ્રી જોરીજૂ શૈયા પર મહા પ્રેમ રસ મઝ હપ્તે હાસ-પરિહાસ કરે હૈ । અરુ અંતરંગિણી

શ્રી નિજ સુહૃદ અલિ જૂ (શ્રીહિત સખીજૂ) સામીધ્ય મેં  
 ચરણાદિક દાવને તથા હિત સાગર કે ગહર તેં નિકાર સમ્બરામ,  
 બતાયવે છી સેવા કરે । યહા શ્રીલલિતાદિક સખી જલ રંધનિ  
 હૂંવે અવયોકન કરે હૈ । તહા જલ રંધનિ હોય કેં શ્રી જોરી જૂ  
 છી રદસ્ય કેલિ કેં આપહ દેખૈ પાછૈ રૂઢ પહર રાત્રિ જાપ, તખ  
 અનેક મેવાદિક ઝાઠપૌ દૂધ મોદકાદિ સાન્નિધી શ્રી ગુરુ સખી જૂ,  
 કે હાથ દૈકેં શ્રી જોરી જૂ કેં બોજન કરવાવૈ, સુન્દર શીતલ  
 મુગંધિત જલ પાન કરવાય કેં વીરી અર્પણ કરે । પાછૈ પોદ,વે  
 છી ભાવના કરે । પાછૈં શ્રી ગુરુ સખી જૂ આદિ દૈકેં આપ પ્રસાદ  
 પાયવે છી ભાવના કરે પૂર્વ રીતિ વિચારે । નિત્ય શ્રીકૃન્દાવન  
 વિપ હેસેં શ્રી પ્રિયા પ્રીતમ જૂ છી ભાવના કરિયૈ । આઠ ઘડી  
 ગત્રિ ગયે પાછૈં બીસ ઘડી સેજ્યા સમય છી ભાવના કહી સૌ  
 અટ્ઠાઇસ ઘડી રાત્રિ ભયે તાઈ હૈ સખ્યા સમય ભયૌ । રૂઢ  
 ઘડી હૈ તડ,હૈ રહ્યૌ, તખ ફેર મંગલા સમય લગૈ સૌ પાહી ભાતિ  
 સૌ ભક્ત-જન હોય મો આઠ પહર છી બજન-ભાવના નિત્ય પ્રતિ  
 માનસી ભાવ સૌ તથા પ્રગટ ભાવ સૌ હમેશા હી કરિયૌ કરે, સૌ  
 પરમપદ શ્રીકૃન્દાવન ધામ નિત્ય વિહાર લીલા કે દર્શન હૈ અધિકારી  
 હોય । નિત્ય ધામ વિષૈ જઃ ઋતુ ષક દિવસ માહીં શ્રી લાડિ,લી  
 લાવ જૂ છી સેવા કરે હૈ । દશ ઘડી બસન્ત ઋતુ પ્રભાત સૌ  
 સેવા કરે હૈ । શ્રીધ્મ ઋતુ સ્નાન ધૂંગાર કે સમય મેં, અરુ વધી  
 ઋતુ રાજબોગ મેં થોડી દેર સયન પર્યન્ત મેં, અરુ હરદ ઋતુ

शयन और कुंडु देर उत्थापन पर्यन्त हो, और हेमन्त ऋतु वन  
 विहार तथा सन्ध्या समय में, और शिशिर ऋतु शयन के समय  
 में रहें । शयन के समय में बसन्त वर्षा, शरद, हेमन्त और  
 शिशिर भी धृञ्जानुसार प्रतिमान कृपद होय सेवा ही आहापासन  
 में तत्पर रहें । होरी और जेल बसन्त ऋतु में रियायत और  
 सय ही समय श्री साङ्गिणी सावजू के धृञ्ज के आधीन हैं ।  
 कोई नर नारी सात समय श्री नोरीनू और बजन वाचना हो करै ।  
 ताके भाग ही भडिमा हो प्रसा, शिव, देवता, सनकादिक, नाग  
 कंदल पार पावें नाडी और निकुंज में श्रीदित सप्तीनू में गुरु  
 भाव ही समावेश हो और प्रधट में श्रीगुरु सप्तीनू में श्रीदित  
 सप्तीनू और आरावेश हो ममज्ञ । धनि श्री अष्टप्रद संन्यासभय  
 भावनाविस्वास सम्पूर्णम् ।

श्रीराधावन्दनवाक्यम्

## ॥ नित्य नैमित्तिक उत्सव बोध ॥

श्री श्री देवाधिदेव श्रीगदाधरगण्ड के वार्षिक नित्य नैमित्तिक  
 उत्सवो ही विधि तथा भोगरागादि हो निरुप्य प्राचीन पद्धति के  
 अनुमात्र तथा उत्सव निरुप्य आदि अन्यो के अनुमात्र जो कि  
 अद्यावधि होय रहे हो उनमें अवश्य ही कर्तव्य ममज्ञ समवानुसार  
 सर्व साधारण के जनते के अर्थ और सम्प्रदायों का  
 भी बहुत समय से अनुरोध होने में विपिवद हो प्रमत्त होने।

ज्येष्ठ ।

ज्येष्ठ कृष्ण १ को श्रीदत्त प्रबूझी ठही उत्सव पीत वागौ धागल सभरे मे यथा शक्ति त्रिरोप ३५ मे भीर, दुःखपाक, श्रीभंड और रात्रि मे भंडल पै याव और नगरलु होय । याही भाति दशहोत्सव ज्येष्ठ मही ५ को होय और ज्येष्ठ कृष्ण ४ को वनविहार ही पङ्क्ति, श्रीमन् ही रात्रिमैन पीठे भमान सहित सैन मे नित्य नेम मे कुल अधिक भोग दूध, लड्डू, आदि पूरी आन समाशन को विशेष मालू भिनै । ज्येष्ठ शुक्ल २१ आन जल रिह २ विद्यापन म सन्ध्या आगती तक नगमेहन मे श्रीयमुनाथ भगै, कुदाटे विशेष उप मे खलै, समयानुमाग पुष्प कुंज या नौकाभंड अनै शीतल भोग विशेष उप मे तथा बीछ हाग भूंग और यना ही, पँधवा हही भन्ता क्यारी नोन की टिठिया आदि भोग जल विहाग के पद होय ।

आषाढ ।

आषाढ, जही पंचमी को श्री उपलाल छ अधिकारी हो नन्मोत्सव होय । और आषाढ जही ३० को श्री सुकुमारी लाल छ (धुवगल) हो नन्मोत्सव होय । आषाढ शुक्ल २ को लाल वागौ धागल और लाव टी पिठार्थ निजौना आदि पावस ऋतु हो अमावस प्राग्भ होय, शीतल भोग जल रिहाग के पद तथा आज मे भन्दाग के पद भमान मे प्राग्भ, अष्टपवावद प्रथम श्रीदत्त नू ही भन्दाग, दिग् अनेक

रसिकेन श्री वर्षा होने पर शीतल भोग, विशेष कूल  
 श्रृंगार आन ही तह होय, आपाह, सुदी १५ श्री गुरु पूज धूप,  
 दीप, नैवेद्य, श्रीकूल और भेट करै, यरणाभृत लेवै, प्रघट में श्रीगुरु  
 सन्मुख न होय, तौ चित्र सेवा कर भेट मनीआईर द्वारा भेजै और  
 पुनै ही से श्रीसेवक अरित्र की कथा तथा ११ से शुक्ला ३ पर्यन्त  
 श्री सेवक वधाई श्रृंगार समय होय मोहन भोग अधिक भोग  
 लगै और सज्जो तथा समानियो के वितीर्ण होय, किञ्चित  
 अभनिया समान में वाण्डी के भोग के लड्डू, पेडा आदि  
 नित्य प्रति और श्री हिताचार्य और सेवक के चित्रपट और पूजन  
 भोग यथाशक्ति समान में होय ॥

आवण्य ।

आवण्य कृष्णा ३० हरियाली-दरी पोशाक धारण्य आवण्य  
 शुक्ला २ सिंघाने उत्सव । थोडा अभनिया सिंधारे और तथा  
 मेहँदी, कान्तर, सिंदूर, रेशी, अतर, कुबेल, मौली, कवायौ, कूल  
 ही वंदिनी, कंधी, प्यालो दर्पन तथा ननीन पोशाक, यदि सज्ज  
 तैयार न हो सकै, तौ थूनरी या सारी और पाग ही होय यह सज्ज  
 वस्तु सेन्या समीप सेन समय राणी नॉय और मेहँदी तथा  
 लाल पोशाक धारण्य होय । छिडावा के स्तंभ पुष्प नक्षत्र में स्थापित  
 करनौ, शत्रि मे सिंधारे मेहँदी के पद सेन समय दीर्तन में ।  
 सिंधारे अभनियां की विधि—कैनी, घेवर, धमरती, जाबूशाई,



शुक्रिया, षड्गी मङ्गरी भीड़ी, लङ्गू नुक्ती के और मुठिया के, सेव, सङ्कलपाडे, तथा नान की मङ्गरी, सेव, छन मण में थोड़ी थोड़ी चीन्हे तथा ऋगु इलन के साथ सिंधारे भोग में सैन में पधरानौ तथा याही भाति सिंधारे हौ सण अमनिया सन्ध्या के दोनो भोगन में भूलन के समय दिन सात तक लोग में आवै-भूलन में पूआ नित्य लोग लगै, भूला—आवणु शुक्रिया के सन्ध्या उत्थापन से सन्ध्या आरती पीछे तक भूलन होय, तीज के सवेरे अंगार से राजभोग तक सेनक जू ही जघाई श्रीसेवकनू हौ जन्मेत्सव ४ सेर है। मोहनभोग मो समान में राजभोग में वितरण होय। आवणु शुक्रिया में भूलन समयानुसार नित्य नहीन धटा, लता-पता आदि सङ्गै। जैसी धटा होवे वैसी पोसाक वैसी ही पोशिश छत पिठवार्य—विशेष अर्थ में विशेष उपरोक्त सिंधारे है। अमनिया दिन सात हौ होय और आष्टमी ही रात के दूसरी मेवा परिवर्तन से मेवा वारे पुन सात दिन के लिये उपरोक्त विधि या क्रियित न्यूनाधिक मिधानै हउ नित्यप्रति भूलन के लोग दोनो में भालपूआ के साथ धनै, भूलन में नित्य नई पोषाक धारत होय, सन्ध्या आगती पीछे भूलन के जाह आचार के दर्शन भीतउ होय, आवणु शुक्रिया ११ के पविना दोनो समय धारणु होवै और शुक्रिया १५ में रक्षागन्धन राणी दोनो समय धारणु—तीजन के चूनरी या लाल वागी धारणु तथा प्राय पञ्चादशी पुरिमासी के नीलाल वागी धारणु होय।

આવશ્ય શુક્રવા ૧૫ મેં સન્ધ્યા આરતી પીછે ઝૂલન સમાપ્તિ  
જન્માદ્યમી હી બધાર્થ પ્રારમ્ભ । ‘આનંદ આજ નન્દ કે દ્વાર’  
પ્રથમ ચે પદ હોય સમાજ મે ।

બાદપદ ।

પ્રથમ શ્રીહિત પ્રશુ કૌ પદ ફિર લાવ જી હી પર્થન્ત  
બધાર્થ-અદ્યમી કે। બી જન્મ બધાર્થ ગાન નૃત્ય, તથા લાલ  
પોશાક ધારણ હોય । નન્દોત્સવ બાદૌ કૃષ્ણા ૯ મે શ્રૃંગાર સમય  
( હિતોત્તમ હી ભાતિ ) કેલાખબ, મન્ડપ, વન્દનવાગ, ધ્વજા-  
રોપણ પચામૃત, દ્વધ દહી, ખગ ચોડા-ચોડા થી સહત સે.  
હસરા પંચપશ્ચ, તથા દધિદાદૌ, શ્રૃંગાર મમય કૌ અમનિયા —  
ગુઝિયા છોટી, ગદી છોટી બડી ગુઝિયા ઔગ ગદી, લડડુ મુઝિયા,  
લડડુ વેસન કે, મઠરી મખાને પને બચે, મિંગી પાગ, ચિરૈછ પાગ,  
ગોલા પાગ, બાદામપાગ મોઢ હી ગોલી, પેટરી મૈદા હી ધનિયા દી।  
ગજ ભોગ મે—પૂરી, દયૌરી, હલીમદ । અચાર મુરખ્યા હંત્યાદિ  
નિખરૌ ભોગ લગૌ । શ્રૃંગાર પીછે હિતોત્તમ હી તમ્હ સાચિયે  
સ્થાપિત—મન્ધ્યા કે। આજ બી ઔલાઈ નહીં પીતવાગૌ હી  
ધારણ હોય । બાદ કૃષ્ણા ૧૦ કે લાલજી હી છી પકવાન અમનિયા  
શ્રૃંગાર મેં ભોગ ધગૌ, રાજભોગ મે સખગૌ વિશેષ ખીગ, દહી,  
પકોદી, પીત ભાત, મોહનભોગ હંત્યાદિ સન્ધ્યા પીછે સમાજ  
શ્રીયા જ હી વધાર્થ, ચલૌ જપમાનુ ગોપ કે દ્વાર’ પદ સે પ્રારમ્ભ  
હોય, પ્રિયા જ હી છી તાર્થ બાદ શુક્રવા ૧૩ વઠ હોય.

प्रियाञ्ज के उत्सव करने के पद्यपुराण में जड़ी ही इस लिखी है ।

एकदश्याः सकृदेषु यद्दत्तं लभने नरः ।

शायञ्-भाह्मी पुण्यं तस्माच्छत गुणाधिकम् ॥

मेरु तुल्य सुवर्णानि हत्वा यद्दत्तं भाष्यते ।

सकृद्राधाह्मी कृत्वा तस्माच्छत गुणाधिकम् ॥

अर्थात् छप्पर एकदशी के इस से सौ गुना अधिक श्रीराधा-  
ह्मी उत्सव करने का इस होय और सुमेरु पहाड़ के जराजर सोना  
दान से भी सौगुना अधिक इस श्रीराधाह्मी उत्सव से होय है । भादों  
शुक्ला ५ से याव श्रीदत्तोत्सव की भांति चार दिन पर्यन्त श्रीदत्त  
मंडल में नय और अमनिया या प्रकार—खड्डू मुठिया के खड्डू  
वेसन के, गुजिया छोटी, गद्दी छोटी, गुजिया जड़ी, गद्दी जड़ी,  
सेव भीड़े सकलपारे, भठरी भीड़ी, पाग ५ प्रकार के, (गोला, मज्जाने,  
मिंगी, जादाम, चिरोञ्ज आदि) पँजरी मँहा की, पँजरी धनियां  
की धनियां की गोली, मोह की गोली, नैन की भठरी, सेव नैन  
के, अधिकृत्य अधिकं दत्तम् भाद्र शुक्ला ७ के लाख पोशाक  
धारण, आज भी औलाह नहीं होय, नभा धारण और समय  
समय मोड़-डी केला छौ मंडप वन्दनवार आदि भाँधें । आज  
समय आरती पीछे एक घड़ी तक दर्शन होय । आरती पीछे नवीन  
पुष्प पोदयी और त्रिबुक्त वेसर धारण होय, बाही समय द.दिन-  
द.दि. ही दक्षिण-पूरुष-पूरुष श्रीञ्ज के सन्मुख जगमोहन में

होय और न्यौअवर रुपया १॥१) या २) और हुपहा हो, तिलक  
 श्रीक्षेत्र से द.दि.न तथा द.डी के होय, लक्ष्मी सेवा नहीं होय  
 वह भासी हो हुपहा द.डी द.दि.न के तिलक कर नारिवल हो  
 देकर सेवा वासे के पीछे छेड़वै, पञ्चात् द.डी और समाज  
 व्याज आदि सौ निवृत्ति हो रात्रि भग्न नगरण, नृत्य वधाई करै ।  
 नवीन ध्वजारोपण होय । अम्बोदव के समय  
 भंगया आरती पीछे कुछ नमोत्सव कौ दक्षिणादौ, समाज  
 में उपर औरतरा नमोदहन या और मे होय । पञ्चायत  
 सौ ( द्रध, हडी, भधु धृत, भूगै ) आन, अ.गा. पीछे दक्षिणादौ  
 राजभोग आयवे पै गोस्वामियो कौ दक्षिणादौ हडी द्रध ( आज  
 कल तो दश मन द्रध हडी कौ होय ) हन्दि. तथा अ-दन केश  
 मिश्रित अँधा हडी "अधिकृत्य अधिक" इलम । राजभोग पडिसै  
 हीसेवाधिकारी द्वारा कृष्ण नन्मागसा साधियो धरे जाँय ।  
 दक्षिणादौ भमान सहित भीदित भन्दिर, श्रीवनन्द नृ हो गेल,  
 श्री सेवाकुंज होतौ भवौ श्रीदित गसमंडल पै लय हिर श्रीमयुता  
 स्नान कर याव की तैयारी होय याव की अपूर्व शोभा होय,  
 श्योदि आगे श्रीदित प्रभु की याव पीछे श्री स्वामी हन्दि.सज्ज ही  
 याव, हरिप्रशी हरिदासीज के मिलन हो स्मरण कगवै । औत्राई  
 आज भी नहीं होय आज श्री गधाधमी के दो अधिकारी  
 श्रीद्विशोरीलालज महाराज गोस्वामीज कौ नन्मदिन हो । आद कृष्ण।

૧૩ કે શ્રીપ્રિયાજી છી છટી, શ્રીકૃષ્ણ છટી અનુસાર અમનિયાં તથા ખીર વિશેષ હોય, આજ હી કે દિન શ્રીહિત પ્રભુ કે ચિત્ર કી પ્રતિષ્ઠા બઈસો હિતજૂ કૌ પાટોત્સવ જનનો કેલિપત્ર વંદનવાર સજનો હિત પ્રભુ કૌ પચામૃત સ્નાન અમનિયાં ભોગ દલશ પંચપલ્લવ સ્થાપિત સમાજ હોય । બાદ શુક્રા ૧૫ સે સન્ધ્યા પીછે સાંજી કે પદ હોય ।

આશ્વિન ।

પ્રથમ 'વન કી લીલા લાલહિ બાવંચે પદ હોય । સાંજી દિન ૧૫ તક ફૂલ તથા રંગ કી જૈસી હો સકે જન । બનાવે વારે ઔર ખર્ચ આધીન હૈ માસે માકૌ ખર્ચ અદૃત હૈ । આશ્વિન શુક્લા પડવા કે લાલ વાગૌ ધારણ તથા દશકરા કે જવારે ધારણ પોશાક લાલ બારી શ્રૃંગાર સમય મોહનવાર । આશ્વિન શુક્લા ૧૫ કે સન્ધ્યા આગતી પીછે બાહર ચૌદંડી મેં શરદ મેં વિરાજે શયન પર્યન્ત, સ્વેત પોશાક ધારણ તથા ચૌદવા પિંગ્વાઈ સ્વેત, સન્ધ્યા આરતી પીછે સમાજ મેં શરદ કે પદ ભોગ મેં કઈ મન દૃઢ, મલાઈ તથા ચન્દ્રકલા ભૌમન કી જનૈ પૂરિત, દૃઢ મેં સુગન્ધ પ્રસાયત્રી । ( આજ મેં ઔલાઈ નહીં હોય ઔર પંખા ઝડપ અનુમાઝ જળ તવ હોય નહીં તો જન્દ હી હોજય )

કર્તિક ।

માઘી બાતિ કાર્તિક કૃષ્ણા ૨ દૂસરી શરદ । આજ સજ પોશાક સ્વેત, પામ સુખ [ લાલ ] ધાગણ હોય ઔર સજ વિધિ

पूणिमा ही । कर्तिक जही ८ को श्री राधाकुंड मे अर्ध रात्रि पर  
 स्नान होय और कर्तिक जही १३ [ धनतेरस ] को छसै जरि हो  
 पागौ और ३५ चौदस को लाल जरि हो पागौ धारण होय ।  
 कर्तिक जही १४ तथा मावस दीपभाविका विशेष ३५ से दीपदान,  
 स्वेत या लाल जरि की पोशाक धारण आदी हो छहरी मे विराजै  
 और औषड, दानो पणत चिठै, भेल के पद होय । अन्नकूट की  
 तैयारी पंचमी से हो होय विशेष सामिथी जने वाडी सूयी विधि  
 पूर्वक विशेषता से नही लिखी । अन्नकूट मे सुनहरी जरि की  
 पोशाक धारण होय । सभी तरफ के पकवान, सज दावन के,  
 कर्ध मन धृत, भाड, भैदा, वेसन, दार सज प्रकार की द्रव्य तर  
 भोआ की वस्तु, सभी जाति हो तथा आठ दस वस्तु तिल की—  
 गजक, रेवड़ी आदि तथा पोनाल छलामयीदाने तिनंगनी आदि  
 तथा गुड, की वस्तु पूजा आदि, सज जाति के साग, अचार, सुरवा,  
 भरा, पकौरी तथा सभरे की सज सामिथी विशेष ३५ मे वाडी  
 दिन जने सभरे निभरे की सभी सामिथी । पकवान आदि प्रथम  
 से जने— अन्नकूट को भोग पय्य बहुत हो करने की  
 से माहूम होय हो । यद्यपि अन्नकूट हो, व्रतस्य निर्णय आदि  
 सम्प्रदाय ग्रन्थो मे लेख नही हो, परन्तु १०० वर्ष मे प्रचलित  
 देश कालानुसार हो और व्यापुसो नी वा दिन होय यह अन्नकूट  
 व्यापुसे की पंचम ३५ मे होय से जननी । शृंगार पीछे, निभरी

સામિત્રી સખ બાતિ કી, અચાર, સાગ, ફલ સહિત જગમેહન મેં  
 તખત વિઠોનાન પૈ સળયે નૌંય રાજ ભોગ સખરૌ  
 ભીતર ભોગ લગૈ પીછે દર્શન ખુલ્લે, અરુ વેસર  
 હથકૂલ પહુચી ચિવુક બી ધારણુ હોય । આરતી  
 રાજભોગ દ બજે પીછે તક હોય, રાત્રિ કે ઉત્થાપન બાહર હી  
 ચૌદંડી, કેલાટક, મંડપ મેં વિરાજૈ, સંધ્યા આરતી પીછે  
 વિવાહોત્સવ હોય, વિવાહ ઔર અનકૂટ સમય સુનહરી જરી કી  
 પોશાક ધારણુ હોય, વ્યાહલે કે સમય ગહનોડે, સેહરૌ મૌર મૌરી  
 કે દર્શન હોય ઔર દૌનોન કે તિલક હોય । નવ ફલહ ફુલહિન કૌ  
 તિલક કરનૌ પ્રત્યેક સેવક કૌ અવગ્ય કર્તવ્ય હૈ । ફલસ પંચપક્ષવ,  
 તથા વ્યાહલે કે પદ સમાજ મેં અનેક બાજે બજૈ કધુ અગ્નિ  
 કીડ, કુકૂલડ, મહતાવ ચરખી આદિ ચલાઈ જાવૈ, યા ઉત્સવ  
 કે મનોરથ વિશેષ રૂપ મેં આહૈ જળ હોય, દિનુ લાલ યા પીત  
 રંગ કી હી અથવા કાલે રંગ કે છોડ, કાઈ રંગ કી નવીન પોશાક  
 અવગ્ય મનોરથ વ્યાહલે મેં હોય ઔર અમનિયાં ખૂદી બડડૂ,  
 કચૌરી, કમરતી, બાલુચાઈ ગોલા કસા બયા ફૂલાભાતી કે ઔર  
 નૌખાવર, તિલક, કેલા, પન્નવાર, સમાજ વાજે આતિશવાજી  
 આદિ સખ વ્યાહલે કી બાતિ મનોરથ મેં બી હોય, કાર્તિક શુકલા  
 અષ્ટમી ગોપાષ્ટમી મેં લકુટ મોરપખા કૌ નટવર મેય તથા ભોગ  
 મેં શૃંગાર, ઉત્થાપન મેં પકવાન ઔર લડડૂ આદિ । કાર્તિક મેં  
 માવસ કે ગ્રહણ આદિ કે સમય સંકાય મેં વ્યાહલૌ હોય તો

अन्नकूट गोपाष्टमी आदि कौं दिन करै अन्नकूट के दिन पुनः  
 अक्षानुसार व्यासुक्तो होय, कार्तिक शुक्ला एकादशी देवेत्यान के दिन  
 शौक में गेरु भड़िया से शौक काढे, नय सन्ध्या के चार पाँडा  
 भडे, कर सिंघाडे, आदि धरे नौय विशेष दीपदान होय, कार्तिक  
 शुक्ला १३ के कर्क उत्सव होने से सप्त उत्सवन कौ तिलक उत्सव  
 है, आन ही श्रीराधावल्लभलालछ कौ पाटोत्सव होय और आन  
 ही श्रीवृन्दावन कौ प्राकटय दिन है, और श्रीसुन्दरवरछ कौ नन्म-  
 उत्सव भी मानै। नय और श्रीचनयन-दण तथा और आन तक  
 नितने अधिकारी गद्दी पर विराजे सज्जै तिलकैत्सव दरबार  
 आन ही नमौ और होय है। श्रृंगार में ठेला चन्दनमाल मंडप  
 छटरी में ही हितोत्सव समान पंचामृत स्नान सायिया ध्वजरोपण  
 आदि होय जे ग ने मोहनयास, लड्डू, जूँदी, मकरी आदि लगै,  
 सय के और समान में गटै, पूनों तक यथाशक्ति दीपदान होय ।

अगहन ।

अगहन जदी २ के गोस्वामी श्रीकीर्तिलालछ कौ नन्म दिन  
 होय है, मार्गशीर्ष कृष्ण छट के छोट छट होय आन से छोट  
 के राजे रत्नछ दुशाला, मोन, छस्त चरण में धारण होय,  
 छिम ऋतु कौ श्रृंगार होय । मार्गशीर्ष कृष्ण २ से माघ सुदी ४  
 तक—समान में रात्रि में श्रीव्याखीस लीला होय एवं द्वादशयश  
 कौ पाठ होय, छोट छट 'मेवा विद्या' 'या कृतसव जेय' में नडी



लिप्पी ऋतु अनुसार भोग, राग, शृंगार आदि होय  
मार्गशीर्ष शुक्ला १२ के व्यंजन द्वादशी होय  
प्रयत्नित अनेक प्रकार के सप्परे निप्परे भोग धरे लय,  
थुली भीरी भात अवश्य होय, शीत ऋतु जपयाग अग्नि अंगीही  
नी श्रृंगार एवं सन्ध्या आरती पीछे सन्मुख धरी लय ।

पौष ।

पौष शु० २ से माघ शु० १ तक एक मास भडे, प्रातः ठीस  
भियडी हो भोग लगै, भियडी के शीत समय के भावनामय पद  
भडे, प्रातः समाज मे होय भियडी अति ही विचित्र अपूर्व  
श्रीराधावल्लभ हो प्रसिद्ध है, सो भगला से पहिने भोग लगै  
और भंगना मे नित्य नवीन रंगुल धागुल हरारत लय और कर्छ  
अपूर्व अनिर्वचनीय आदी होय वा समय हो मुख देवे ही जनै  
भडी भीड होय । भियडी ही विधि — कर्छ दिन पहिने भडी विधि  
से द्वाग भूग ही जनार्दनय, सवेरे के समय भियडी हो है तामै  
धी मेवा अधमेनी मेर के दिसाम मे भियडी होता मे पडे, मेवा  
मे लाल दाभ छुडारे, आदाम पिरता, गिरी तथा केशव सुगंध  
आदि अनेक भसावे मोक्ष धनिमा भोग मिर्य काली पडे,  
भियडी ही विलक्षणता और भोग ही अपूर्वता वर्णन नही  
हो सकै, याही भाति भीही भियडी नी नित्य भोग लगै, निप्परे  
मे अनेक भाति के साग अयाग, मुरम्मा, मटनी, मद्रहृष्ट

तथा दहीगरा पापर, कर्छाति ही क्यरी, रवडी भवाध, इल, मेवा, झैनी, घेवर, गण्डे तथा केशर मिथी मिश्रित गर्भ दूध भाजन मिथी आदि अनेक वस्तु तथा अनेक प्रकार के लड्डू आदि पकवान भी वाही समय भोग में पधराये जाँय । भियडी में वस्त्र के अँगला गर्भ में विराजें, जडा अपूर्व सुभ या ऋतु के अनुसार भोग दर्शन समान हो रहै, सभ के प्रसाद दिनका नित्य भिखै दोनौ पृष्ठादर्शन के विशेष पंगति भियडी ही राजभोग में होय भीही भियडी भी असंग होय ।

भाष ।

भाष सुदी ७ के केशरी मोहनभोग और रवडी, मलाध, इल, भाजन, मिथी, मेवादि वस्तु अँगला में भोग लगौ । टोपा और दुशालान के अपूर्व दर्शन होय, वाही दिन श्री गोरनाभी मोहनवालछ भडागज हो जन्म दिन है सो अगल वधाध 'वारी हो अँवरा' पद होय, भियडी पड़वा तक भोग लगौ, आज उत्सव समाप्त होय । भाष सु० ४ के असन्ती अँगला में विगजें । भाष सु० ५ के अंगार समय वसन्त उत्सव, असंत धारण, कलश धरनौ, असन्ती पोसाक अंगार विशेष होय । आज से भोज, रवध, अँगीरी नहीं धरी जाँय और गुलाब सभ रंग के धरे जाँय । आज से अंगार और सन्ध्या आरती पै द्विचित गुलाब लड्डायौ भी जाय । असंत के पद दोनो समय

સમાજ મેં હોય, અમન્ત મેં આવપુઆ તથા કેગમ્મય લડડું, બાલશાઈ આદિ પકવાન અંગાર મેં ઓગ બસંતી મોહનભોગ પૂરી, દયારી આદિ મળભોગ મેં આરોગેં । મેવાકુંજ મેં સંધ્યા કે સમાજ હોય । માધ મુઠ ૧૫ સંધ્યા કે દોલી હાંડે દો પદ આજ સે હોરી ધમાગ દો સમાજ પ્રાગ્મ હોય । ત્રીકુંબુચન્દ્ર પ્રભુ કે માધ મુઠી ૯ દો જન્મોત્સવ હોય ।

દાસ્યુલુ ।

દાસ્યુલુ કૃષ્ણા ૧૧ કે ત્રીમાનમરોવર મેં સમાજ જાગરણ હોય । દાસ્યુલુ બદી ૧૩ કે જો બજાવણ દો જન્મોત્સવ હોય । શિવચૈદર કે જોગિયા હદમ સમાજ મેં હોય । દાસ્યુન બદી ૨ સે દાસ્યુન સુદી ૧૦ તક મેવાકુંજ મેં ૨૪ હદમ દો સમાજ સંધ્યા કે હોય પર આજ કલ કુલૈરા દોજ મેં હી પ્રારંભ કરેં । દાસ્યુન સુદી ૮ કુલૈરા દોજ મેં ગંગદાગ બેલ બટા ફૂલ આદિ ચિત્રિત ચૌડંડી મેં વિરાગેં, અંગાર સમય આજ મેં ફેંટ શુભાવ દો ધાગણ કરેં દોનો સમય આજ વિશેષ રપો અંગાર મેં પૂઆ ઓગ પકવાન આદિ ભોગ મેં આમ, અંગાર અધિક હોય, શુભાવ અધિક ઉડે, ઘોડો ગગ બી પોલો જાય । પોશાક રંગમગી હલકી સફેદ ધાગણ હોય, સેવા કુંજ મેં સમાજ હોય ઓગ હદમ લીલાવ દો ગમાજ દરમા તક હોય । ગગ બરી પકાદગી કે સવારી બડે, બાગી લવાજમેં

સે શહેર બર મેં નિકળે । શગુન સુદી ૧૧ સે મન્દ્યા સમય સે  
બાહર વિગઢે, પૂનો તક ખુમ ગહરો રંગ ગુલાલ દો ખેલ હોય  
ધૂપ ક્રિયાબન કે પીછે મે સન્ધ્યા ભોગ તક નિત્ય । અઠદશી કે  
સન્ધ્યા આગતી પીછે વ્યાહુવો હોય પ્રથમ અન્નકૂટ કે વ્યાહુલે હી  
ભાંતિ સખ વિધિ કધાભાતી આડંડી કેવા વ દનમાવ સમાજ  
બાજે તામે આતિથયાજ ભોગ મે પકવાન અ ઈ નિલક, ન્યાગધર  
દયશ સ્થાપન પચપચર આદિ ધરે જોય. વ્યાહુલે મેં શીજી હો  
તિલક સખ સેવક માત્ર કે દગ્ગા આહિરે હોલી કે નિત્ય ખેલ મેં  
ભોગ મેં પૂઆ લડકુ પ્રમરતી, બાલુદાર્ધ, સેવ, મહરી, ધેવર  
સકલપારે આદિ દોનો ભોગન મેં પધરાયે જોય । અનોરથ સે  
પ્રાતઃ બી ખેલ હોય ઔર ધૂપ અંગાર આગતી બાહર હોય ઔર  
અંગાર મે ગજભોગ તક ખેલ ખુમ ગહરે રંગ ગુલાલ દો હોય  
સમાજ મેં ધમાર હોય, તેરમ યા પૂનો કે પ્રાત અનોરથ કે ખેલ  
મેં નિકુજ વને ઔર યિયા યિવતમ કે અહોંગ કે દર્શન અદ્ભુત  
હોય, ગજભોગ મે બીતર પધારે, રાજભોગ આરતી બી બીતર  
હોય, નિત્ય ખેલ મેં અનેક રંગ કે મનન ગુલાલ હડ. જોય, કીચ  
આગન મે હોય, અખ મન્દિર રંગમંજી હો જાય, હોલી દો રંગ  
ખુમ ઘોતે પર બી મહીનો પીછે તક રહૈ, શગુન સુદી ૧૩ કે દિન  
શ્રીદામોદગજ કે રાત મેં સમાજ તથા હોલી દો ખેલ કરનો ।  
હોલી કે પ્રાતઃ ધૂપ ડાલ હોય, તિથિ નિર્ણય મેં મડ.જડી હોતે પર  
બી દિવાલી બોર અન્નકૂટ ઔર હોલી બોર ડાલ હોને દો નિયમ

असौ आवै । डोल पत्ती मोरछली ही और इसन के इस  
 अण्णान से सुशोभित होय, साव पोशिथ और गुलाबी पोशाक  
 धारण होय मेहंटी तथा पूर्ण विशद अंगार होय, दिन में  
 धूप अंगार और सन्ध्या के धूप सन्ध्या आरती जाकर होंय ।  
 डोल जुलन के दर्शन पड़े, अद्भुत एक साव भर में अन्तरे अद्वितीय  
 होय, अंगार पीछे गौरी में 'अथम यथावति प्रसुति श्रीरुद्रावन  
 अतिशय' ये पद २॥ या उ छ टे में' नम के होय, नम पद हो नम  
 तभी राजभोग आरोहने पधारै । दियित गुलाब फी थाली  
 सन्मुख रहै और 'ह भिनि जन्दन धर' तुक आवै तब स्वयं  
 उड़ायो जाय । आन भोग में मालपूजा दोनों समय तथा  
 विशेष रूप से ननेणी, धमरती, लड्डू आदि भोग लगै, राजभोग  
 में आरती के दर्शन भीतर आडंडी में होय, सन्ध्या के धूप से  
 सन्ध्या भोग तक डोल के पद होय, सन्ध्या आरती पीछे भीतर  
 दर्शन होय समय तक ।

चैत्र ।

श्रीवनमन्द महाप्रभुछ कौ नमोदसव चैत्र पही ६ कौ  
 होय, पीत पोशाक धारण होय कुछ विशेष भोग डोल पर आव ।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा नवीन संवत्सर के शीछ के नवीन  
 पंचांग सुनाना, साव या नवीन पोशोक, राजभोग में भीर आदि  
 विशेष भोग । चैत्र सु० ७ के त्रीपसुनाछ कौ उत्सव यमुना तट

५ बी करनी । यैत्र सुदी नौमी के छाल पीरी पोशाक रामनग्न  
 अधार्धसमाज में, दधु विशेष बोध लगै । यैत्र शुदी षष्ठादशी  
 के गुलाब के दूध ( कम से कम २० सेर ) और निवाडे के दूध  
 तथा पीत यमेली के दूधन दौ डोल जनै, सन्ध्या के धूप आरती  
 में शयन पर्यन्त गुलाब के डोल में जूझै, यह समाज लोग आदि  
 लोग । यैती गुलाब दौ गुलाब बरस भीतर अपरस के  
 अपका से उतरै, जो श्रीम के भोग, शर्गत, पीर आदि में सेवा  
 में आयै । यैत्र शुक्ला १५ से श्राद्धितोत्सव दौ मंगल पाह  
 श्रीसेवकवाणीछ दौ कीर्तन करनी, दोनो समय अर्थात् श्रृंगार  
 और सन्ध्या आरती पीछे और याही पृष्णिमा दौ श्राद्धितप्रभ  
 के पञ्च छह गुरु श्रीराधिका भडारानी नू ने पीपर पत्र में  
 श्रीनिर्मलन्त्र कीदखि'स गोस्वामी नू दौ दियो । या उत्सव के  
 उपसक्ष में श्राद्धित परमाराध्य श्रीराधिकावल्लभनू दौ पीत वस्त्र  
 धारन करनी और श्रृंगार भोग में दूध मोहनवाल आदि अधिक  
 राखनी और आब सौ ही षष्ठ भास बार दिन तह अर्थात्  
 दितनू के छौन न्ह दूध्या ५ पर्यन्त अधार्ध, कीर्तन करनी-करनी,  
 आनसे श्राद्धित राम मंडल पौ ह सन्ध्या समय श्राद्धित अधार्ध  
 ३। समाज प्रारम्भ होय । यैत जही ४ के आह आग न कर वडा  
 श्रीछ के सन्मुख समाज रामादिक कर पंथमी के हाग दौ उत्सव  
 करनी । समयानुसार यह निधि अनि संक्षेप से विषय समाधि,  
 करी । और प्रत्येक भाग ही दोनो षष्ठादशी एवं पृष्णिमा के

દિન મેં મુકુટ કાઢિની શ્રીપ્રિયાજી ઔર રાત્રિ મેં શ્રીલાલજી  
 ધારણ કરેં ઔર પ્રાયઃ માવસ ઠાં તાજ ઔર સ્થામ પોશાક  
 ધારણ કરેં, યાકે અતિરિક્ત અપને અપને મુરન કૌ ઉત્સવ  
 માલૂમ કરકે અવસ્થ યથા સકિત કરનૌ ઉચિત હૈ । કમ સે કમ  
 શ્રીહિતોત્સવ, શ્રીસેવક ઉત્સવ, શ્રીરાધાષ્ટમી જ્વં શ્રીમુર જન્મોત્સવ  
 તૌ અવસ્થ પ્રત્યેક ધર્મી કૌ કરનૌ ઉચિત હૈ । ઔર અધિક માસ  
 મેં અધિક ભોગ રાગ ઔર અધિક બાદૌં હોય તૌ 'જન્મ'માષ્ટમી  
 મે રાધાષ્ટમી કૌ ૧૫ દિન સે અધિક અન્તર નહૌ હોનૌ આહિયે'  
 યક પ્રાચીન લેખ હોને સે અધિક માસ મેં બી વિશેષ શ્રીરાધાષ્ટમી  
 કરનૌ ।

ગોસ્વામી શ્રીહિત કિશોરીલાલજી શ્રીહંતિલાલજી અધિકારી,  
 દીકાયત મન્દિર ૧૮૦૮ શ્રીગધાવસ્ત્રમજી મદારાજ,  
 શ્રીવૃન્દાવન ।



( भीहित हरिवंशवशो विनयते )

## श्रीचतुराशीजी के पदन कौ समय प्रबन्ध

पृष्ठ सं०	पद सं०	पृष्ठ सं०	पद सं०
( भंगला समय पद १४ )		४७ यह जु ज्येष्ठ मन०	५६
१४ प्रात समय होषि०	३	५४ आज सैभारत०	७०
१५ आज तौ सुवति०	४	५६ सटकत द्विरत०	७३
१६ आज प्रभात सता०	५	६३ आज ज्ञ देप्पियत०	८५
१७ डीन यपुर सुवती०	६	धति भंगला समय संपूरणम्	
१८ अति ही अरखु०	७	अथ राना जेव शृंगार समय	
२० नन्ह डे सास०	१३	( पद ४ )	
२१ अपनी जात०	१५	१८ जनी राधा मोहन०	६
२३ आज देप्पि अर०	१७	२१ अधर अरखु तेरे०	१४
२४ मोहनसास डे०	१८	२७ आज नीडी०	२५
२५ तेरे नयन करत०	२१	२६ अर नव तरखि०	१६
२५ नयनन पर वारै०	२०	धति शृंगार समय संपूरणम्	
२६ राधाधारी तेरे	२३	अथ रांग भोग राधा विदार समय	
२९ आज अति राजत०	३१	( पद २ )	
३० आज वन राजत०	३३	४० देप्पि सणी राधा०	५१
३३ वन ही कुंजन०	३४		



પૃષ્ઠ સંં	પદ સંં	પૃષ્ઠ સંં	પદ સંં
૫૧ નવલ નાગરીં	૫૦	૫૨ રાસ મેં રસિકં	૬૮
મતિ રાજ ભોગ સપ્પા વિદાં		૫૪ મોહિની મોહનં	૬૯
સમય સમ્પૂર્ણમ્		૫૫ સ્વામ મંગ રાધિકાં	૭૧
અથ વનવિહાર સમય ( પદ ૩ )		૫૬ સુધંગ નાયતં	૭૮
૩૮ આવત શ્રીવૃષભાનું	૫૫	૬૦ રહસિ રતસિં	૭૯
૩૯ વન કી લીલાં	૫૭	૬૧ વૃષભાનુન્દિનીં	૮૧
૪૦ વની વૃષભાનું	૫૮	મતિ રાસ સમય સંપૂર્ણમ્	
મતિ વનવિહાર સમય સંપૂર્ણમ્		અથ સંજ્ઞમમાન સમય	
અથ રામ સમય ( પદ ૧૭ )		( પદ ૧૩ )	
૧૬ ચલહિ રાધિકેં	૧૨	૩૫ ચલહિ કિનં	૭
૨૪ ખેલત રાસ રસિકં	૧૬	૩૫ વેગિ ચલહિ ઉહિં	૩૮
૨૬ આજ મોખાલ મસં	૨૪	૩૬ ખેલ્યો લાલ ચાહતં	૩૯
૨૭ મોહિની મદનં	૨૬	૩૬ ખેલે લાલ નિકુંજં	૪૦
૩૪ આજ વન નીકેં	૩૬	૩૬ પ્રીતિ કી રીતિં	૪૧
૪૭ આજ સખી વન મેં	૬૧	૩૭ અતિ નાગરં	૪૩
૫૮ ખેલત રાસં	૬૨	૩૮ ચલિ સુન્દરિ ખોલી	૪૪
૫૯ મોહન મદન ત્રિભંગીં	૬૩	૪૧ દાન દેરી નવલં	૫૧
૫૦ વેણુ માર્છ્યાજૈં	૬૪	૪૬ તેરે દિત લેન આપ્તિં	૫૮
૫૦ મદન મયન ઘનં	૬૫	૫૭ ખંજન મીન મૃગનં	૭૩
૫૦ ગિર રાજત વધું	૬૭	૫૭ કાહે કૌ માનં	૭૪

૫૪ સં.	૫૬ સં.	૫૪ સં.	૫૬ સં.
૪૮ હૌ જુલકલ ધં	૭૨	૬૦ વલ્લરી સુ કનક	૮૦
૬૨ છાંડિ દૈ માનની	૮૩	૬૨ નાગરતા હી રાસિ	૮૨
ધતિ સંજ્રમમાન સમય સંપૂર્ણમ્		ધતિ શ્યા સમય સંપૂર્ણમ્	
અથ શ્યા સમય (૫૬ ૧૮)		અથ બસ તૃસમય (૫૬ ૦)	
૧૩ જોઈ જોઈ પ્યારૌ	૧	૨૮ મધુ રિતુ જન્દાવન	૨૭
૧૩ પ્યારે જોલાં બાગિની	૦	૨૬ રાધે દેખ વન દી	૨૮
૧૬ આજ નિકુંજ મંજુ	૭	ધતિ બસંત સમય સંપૂર્ણમ્	
૧૮ આજ નાગિરી	૧૦	અથ મલાર સમય (૫૬ ૪)	
૧૬ મંજુલ કલ કુંજ	૧૨	૪૨ દેખૌ માર્ધ સુન્દરતા	૪૨
૨૦ આજ મેરે કહૌ	૧૬	૪૨ દેખૌ માર્ધ અબલા	૪૩
૨૩ સુન મેરૌ વચન	૧૮	૪૩ નયૌ નેહ નવ રંગ	૪૪
૨૦ દેખત નવ નિકુંજ	૨૦	૪૮ આજ દોહી	૪૫
૩૨ આજુ વન કીડત	૨૦	ધતિ મલાર સમય સંપૂર્ણમ્	
૪૭ પ્રીતિ ન દાહ દી	૪૨	અથ જૂનન સમય (૫૬ ૧)	
૩૬ વિપિન ધન કુંજ	૪૬	૨૨ જૂનત દોહી નવલ	૩૫
૪૪ કૌ વસિ જાગૌ	૪૬	ધતિ જૂનન સમય સંપૂર્ણમ્	
૪૭ કહા કહૌ ધન	૬૦	અથ હોરી સમય (૫૬ ૧)	
૫૧ વિદરત દોહી	૬૬	૪૪ પ્રથમ યથામતિ	૫૭
૫૫ સુન્દર પુલિન	૭૨	ધતિ હોરી સમય સંપૂર્ણમ્	
૫૮ નાગરી નિકુંજ	૭૬		

ધતિ શ્રીમદ્વત્સરાશીજ કો સમય પ્રબન્ધ સંપૂર્ણમ્